अमेरिका की हायडा जातिः विश्वास

अनुवाद
सुषमा गुप्ता
2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: America Ki Haida Tribe: Vishwas (Haida Tribe of America: beliefs)
Cover Page picture : A Typical Haida Totem Pole
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok
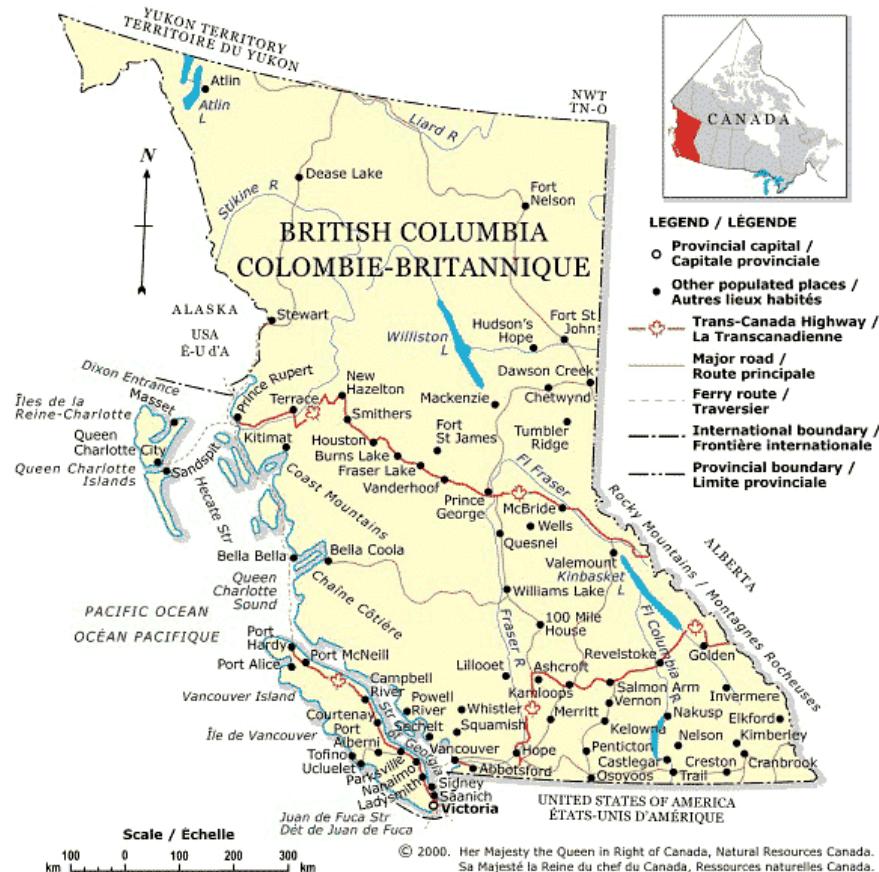
E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Canada

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

हायडा जाति के विश्वास

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़ा महाद्वीप सबसे पहले और सबसे छोटा महाद्वीप सबसे बाद में। धरती के इस भाग यानी उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका का पता **1492** के आस पास ही चला था। सबसे पहले यहाँ फ्रैन्च लोग आ कर बसे बाद में ब्रिटेन से लोग आये।

उस समय उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका दो महाद्वीप नहीं थे जमीन का केवल एक ही बड़ा टुकड़ा था – सुदूर उत्तर से ले कर सुदूर दक्षिण तक। तब तक यहाँ यहाँ के आदिवासी ही रहते थे। आजकल तो यहाँ यहाँ के आदिवासी कम और दूसरे देशों के लोग ज़्यादा रहते हैं। यह दो महाद्वीप तब बने जब पनामा कैनाल[1] ने जमीन के इस टुकड़े को दो हिस्सों में बाँट दिया – उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका। **18**वीं सदी में ब्रिटेन के लोगों ने इसके उत्तरी हिस्से यानी कैनेडा वाले हिस्से को छोड़ दिया। उस समय तक यह हिस्सा ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका कहलाता था।

कैनेडा देश उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के सुदूर उत्तर में स्थित है। इसके क्षेत्रफल के मुकाबले में इसकी जनसंख्या बहुत कम है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसकी जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा बहुत ठंडे स्थान पर है जहाँ लोगों के रहने की सुविधा नहीं है। अधिकतर इसके लोग अमेरिका की उत्तरी सीमा से लगी हुई जमीन पर रहते हैं। जैसे जैसे वहाँ से और उत्तर की तरफ बढ़ते जाते हैं जनसंख्या बहुत कम होती जाती है। मैपिल का पत्ता यहाँ का खास निशान है। वह इसके झंडे पर भी लगा हुआ है।

क्षेत्रफल में इस देश का नम्बर रूस के बाद दूसरा है और इसकी जनसंख्या केवल **35** मिलियन है। इस देश की चौड़ाई इतनी ज़्यादा है कि इसके पूर्वी और पश्चिमी किनारे के समयों में पाँच घंटे तक का अन्तर हो जाता है। यानी अगर इसके पूर्वी तट पर दिन के बारह बजे होते हैं तो इसके पश्चिमी तट पर सुबह के सात बजे होते हैं। इस देश में दस प्रान्त और तीन टैरिटरीज़ हैं।

इससे पहले हम "कैनेडा की लोक कथाऐं" नाम की एक पुस्तक प्रकाशित कर चुके हैं जिसमें हमने वहाँ के कुछ आदिवासियों की और शेष वहाँ आये बाहर के लोगों की कुछ लोक कथाऐं प्रकाशित की थीं। इन कथाओं के अलावा हमने यहाँ के एक अजीब पक्षी रैवन के विषय में उसकी कहानियों की दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं।[2] हमें यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि वे पुस्तकें तुम सब लोगों को बहुत पसन्द आयी।

इससे प्रोत्साहित हो कर हम अब यह एक दूसरी पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तक, "हायडा जाति के विश्वास", में हम अपने हिन्दी भाषा जानने वालों के लिये वहाँ के रहने वाली आदिवासी जातियों में से एक जनजाति हायडा जनजाति के विश्वास हिन्दी में प्रकाशित कर रहे हैं।

---

[1] Panama Canal opened on 15 August 1914, is a man-made 48-mile (77 km) waterway in Panama that connects the Atlantic Ocean with the Pacific Ocean. The canal cuts across the Isthmus of Panama and is a key conduit for international maritime trade. There are locks at each end to lift ships up to Gatun Lake, an artificial lake created to reduce the amount of excavation work required for the canal, 85 feet (26 metres) above sea level. The original locks are 110 feet (33.5 metres) wide.
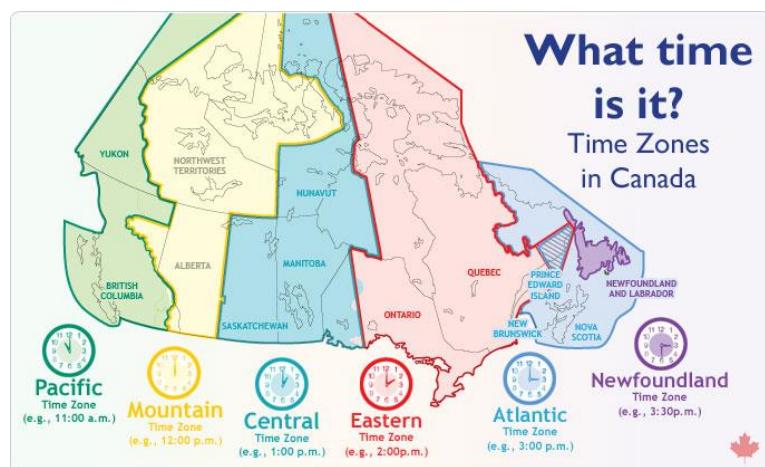
[2] See the List of Published Books by Sushma Gupta in the end of the book.

क्योंकि बहुत पहले कैनेडा नाम का कोई देश नहीं था तो इस उत्तरी अमेरिका के उत्तर–पश्चिमी हिस्से में जहॉ आजकल अलास्का, ब्रिटिश कोलम्बिया और वाशिंगटन हैं वहॉ बहुत सारे टोटम पोल[3] पाये जाते हैं। टोटम पोल एक प्रकार के लकड़ी या पत्थर के खम्भे होते हैं जिन पर किसी जाति या समूह के लोगों का इतिहास लिखा रहता है। इन खम्भों पर कुछ चेहरे, आदमियों या जानवरों के, और कुछ दूसरे निशान खुदे रहते हैं। ये टोटम पोल वहॉ रहने वाले आदिवासियों के हैं। इस पुस्तक में उन्हीं खम्भों पर खुदे हुए उन चित्रों का तर्कसंगत वर्णन है कि वे चित्र वहॉ कैसे आये और उनका उन लोगों के लिये क्या महत्व है। इन आदिवासियों के बारे में कुछ और जानकारी भी दी हुई है।

इस पुस्तक की विषय सामग्री हमने इन्टरनैट पर प्रकाशित एक पुस्तक[4] से ली है। आशा है कि यह अनुवाद वहॉ की हायडा जाति के रहन सहन और उसके विश्वासों की एक झलक प्रस्तुत करने में सहायता करेगा और तुम सब लोगों को बहुत पसन्द आयेगा।

दो दूसरे देशों की दन्त कथाओं और विश्वासों की पुस्तकें और भी हैं।[5]

कैनेडा में समय का अन्तर

---

[3] A Totem Pole or post or pillar, is made of wood or metal, on which totems are hung or on which the images of totems are carved. The carvings may symbolize or commemorate cultural beliefs that recount familiar legends, clan lineages, or notable events. Given the complexity and symbolic meanings of totem pole carvings, their placement and importance lies in the observer's knowledge and connection to the meanings of the figures.

[4] The Thunder Bird Tootooch Legends. By WL Webber. 1936.
This book may be read in English at : http://www.sacred-texts.com/nam/nw/ttb/index.htm
[Author's Note : This is a transcription of a pamphlet which was originally sold to the tourist trade in British Columbia. It describes a vocabulary of symbols which are incorporated into totem poles, including a representative myth for each animal. While not an academic work, it still makes interesting reading, particularly in historical context, and the illustrations are charming.]

[5] "Cheen: Dant Kathayen Aur Vishwas" **AND** "Norse Deshon Ki Dant Kathayen" both translated in Hindi by Sushma Gupta. Both are available from : hindifolktales@gmail.com

1 टोटमवाद की शुरूआत

जब शुरू शुरू के यात्री कैप्टैन कुक और कैप्टेन जौन मीयर्स[6] प्रशान्त महासागर के उत्तर पश्चिमी तट पर आये तो उन्होंने अपना बहुत सारा समय वैनकूवर टापू के पश्चिमी किनारे पर स्थित नूटका टापू[7] पर गुजारा यहाँ कभी कभी स्पेन के जहाज़ आया करते थे।

[6] Captain Cook, full name James Cook, was a British explorer who made detailed maps of New Foundland, situated on the coast of East coast of Canada before coming to Pacific coast three times. He came to British Columbia side in his third voyage during 1776-1779. Captain John Mears

[7] Nootka Island is situated on the West coast of Vancouver Island of British Columbia, a Province of Canada.

इन यात्रियों ने देखा कि वहॉ के रहने वाले कोई अनजाना धर्म मानते हैं। उनके रस्मो रिवाज अजीब थे। उस समय उनकी पहनी जाने वाली पोशाकें भी अजीब थीं जिन पर बहुत सारे जानवर और चिड़ियें बने रहते थे। तभी से यह धर्म टोटमवाद के नाम से मशहूर हो गया। इस तरह यह टोटमवाद सभ्य समाज का इतिहास शुरू होने से पहले ही शुरू हो गया था।

टोटम को हम हिन्दी में कुल देवता कह सकते हैं और कुल देवता कुलों के होते हैं। अब क्योंकि बहुत सारे समूहों के टोटम अलग अलग थे तो बजाय उनको उनका व्यक्तिगत नाम देने के यह सामूहिक नाम दे दिया गया – टोटमवाद यानी अपने अपने कुल का धर्म या विश्वास या रीति रिवाज आदि।

जब पुराने लोगों का केवल शिकार पर ज़िन्दा रहना बन्द हो गया तो उन्होंने मछली पकड़ना शुरू कर दिया। इससे लोगों के पास उनकी अपनी कुछ जायदाद बनने लगी। फिर उस जायदाद के आधार पर सामाजिक वर्ग बनने लगे। उसके बाद उनके यहॉ दास प्रथा शुरू हो गयी और उसके साथ साथ शुरू हो गयी चीज़ों से चीज़ें खरीदने बेचने की प्रथा।

यह सब यूरोप, एशिया और अफ्रीका में तो हजारों साल पहले ही शुरू हो गया था क्योंकि इनका हाल अफ्रीका में अपर नील नदी पर पाये जाने वाले पत्थरों पर खुदा मिलता है और एशिया में भारत के मन्दिरों में मिलता है।

आज के समय में तो यह सोचना भी मुश्किल है कि जहाँ इन महाद्वीपों में सभ्यता इतनी आगे बढ़ चुकी थी वहाँ दुनियाँ के इस हिस्से में ये लोग इतने पिछड़े हुए थे। हालाँकि ऐसे टोटमवाद पर आधारित समाज दुनियाँ के दूसरे हिस्सों में भी चल रहे थे जैसे आस्ट्रेलिया, कोरिया, जापान आदि।

पर दुनियाँ के इस हिस्से का टोटमवाद समाज, यानी ब्रिटिश कोलम्बिया का यह समाज, अपनी कुछ अलग ही खासियत लिये हुए था। इन लोगों का ऐसा विश्वास है इन लोगों का पहला टोटम निशान कहीं से तैर कर किनारे पर आ कर लग गया था। उस पर तीन कौए बैठे थे जो समुद्र के पानी में उसको ले कर आ रहे थे।

इन इन्डियन्स का तो यह भी विश्वास था कि जब उनके पुरखे धरती पर भेजे गये तो उनको कहा गया कि उन्हें अपने ही लोगों में शादी ब्याह करना चाहिये पर बाद में उनको लगा कि अगर वे ऐसा ही करते रहे तो उनकी तो जाति ही खत्म हो जायेगी इसलिये उन्होंने अपने खून के सम्बन्धियों में शादी करना बन्द कर दिया।

और फिर इसी से टोटमवाद का जन्म हुआ जिसमें टोटम बने, कबीले बने और फिर उनकी भी शाखाऐं निकलीं।

हायडा जनजाति[8] में जो वहाँ के सबसे पुराने लोग समझे जाते हैं दो जातियाँ बनीं – आसमानी आदमी और समुद्री आदमी[9]।

आसमानी आदमी से रैवन और दूसरी जनजातियों के साथ गरज चिड़ा और गरुड़[10] जनजाति आये। फिर इनके भी और हिस्से हुए जो सूरज, आसमान, चाँद, तारे, चिड़िया, दादी को मानते थे।

और समुद्री आदमी उन जानवरों को मानते थे जो समुद्र में रहते थे जैसे मारने वाली व्हेल, कौड, हैलीबट, सैमौन, सील, औटर मछलियाँ। और बहुत सारे ऐसे दैवीय[11] जानवर जो समुद्र में नीचे रहते थे।

इन्हीं जानवरों और चिड़ियों से इन लोगों के ये निशान बने जो इनके टोटम पोल पर खुदे हैं और इन्हीं से बनी इनकी संस्कृति और इनकी कथाऐं। इनको उन्होंने फिर अपने रोजमर्रा की इस्तेमाल की चीज़ों पर खोद कर और घरों में तस्वीरों के रूप में बना कर सुरक्षित कर लिया क्योंकि तब तक ये लोग इन सबको लिखना नहीं जानते थे।

यूरोपियन लोगों के आने से पहले कोई टोटम पोल या कोई बहुत बड़ी सी खुदाई वाली चीज़ बाहर नहीं लगी होती थी। यह सब

---

[8] The Haida Indians are original people of the Pacific Northwest Coast. Their homelands are the islands near the coast of southeastern Alaska and northwest British Columbia, particularly the Haida Gwaii archipelago and Prince of Wales Island.

[9] Sky People and Ocean People

[10] Raven (Thunder Bird along with other tribes) and Eagle. Read some 40 folktales about Raven published by Sushma Gupta in Hindi – "Raven Ki Lok Kathayen-1", Delhi : Indra Publishing House. 2016. and "Raven Ki Lok Kathayen", Delhi : Prabhat Prakashan. 2019.

[11] Translated for the word "Divine"

तभी सम्भव हो सका जब लोहा काटने वाले औजार बने। **1860** और **1900** के बीच इनकी यह संस्कृति अपनी चरम सीमा पर थी। उन दिनों ये लोग जहाँ जहाँ रहते थे वहाँ वहाँ टोटम पोल के जंगल के जंगल हो गये थे। हर एक गाँव में ये पोल दस से ले कर पचास तक की संख्या में देखे जा सकते थे।

1900 के बाद से यह सब कुछ "इन्डियन एक्ट औफ दी डोमिनियन"[12] की वजह से कम हो गया। यह एक्ट इन इन्डियन्स को नियन्त्रण करने के लिये बनाया गया था।

इस एक्ट के अनुसार पौटलैच[13] बन्द कर दिये गये और ईसाई धर्म फैलाने के लिये बहुत सारे पादरी लगा दिये गये। सैकड़ों टोटम पोल काट दिये गये या जला दिये गये। इन जनजातियों के कुछ लोगों ने इनके धर्म को नष्ट करने का विरोध भी किया।

बहुत सारे निशान इकट्ठा करने वाले लोगों ने इनके निशान सुरक्षित कर के रख लिये। कुछ निशानों को तो वे लोग दुनियाँ भर के अजायबघरों को भी ले गये।

इस समय अमेरिका और कैनेडा के उत्तर पश्चिमी तट पर कोई इन्डियन गाँव नहीं है। पौटलैच में उनके कुछ रीतियाँ और रस्मो रिवाज हुआ करते थे। वह एक्ट लागू करने से उनके पौटलैच भी

---

[12] Indian Act of the Dominion

[13] Potlach means "Give". Potlach is a festival of Indians living on the Northern coast of Pacific Ocean. On this day one person invites all his friends and presents gifts to all of them to show them that he has lots of wealth, but later other people also do the same and return his gifts of more value than his. It includes food also.

रुक गये और पौटलैच रुकने की बजह से उनकी सीक्रेट सोसायटीज़ के वे गुप्त भेद भी सब खत्म हो गये हैं जिनके वे सदस्य थे। और अब तो वे खुद भी उनको भूल गये हैं।

बाद में उधर केवल पॉच जनजाति ही ऐसी रह गयीं जो अपने टोटम पोल बनातीं थीं। ये हैं – हायडा, सिमशियान, बैला कूला, क्वायूतु और नूटका[14]। ये जनजातियॉ दक्षिणी अलास्का और ब्रिटिश कोलम्बिया में रहती थीं।

वहॉ कई तरह के टोटम पोल पाये जाते हैं – पारिवारिक टोटम पोल, जनजाति के टोटम पोल, घरों के टोटम पोल आदि। ये टोटम पोल सामुदायिक बिल्डिंगों और अपने घरों की छतों को सहारा देने में इस्तेमाल किये जाते थे। इस पुस्तक में सारे किस्म के टोटम पोल को बताना तो सम्भव नहीं है फिर भी कुछ यहॉ बताये जा रहे हैं।

ये पोल साधारणतया दस से बारह फीट तक ऊॅचे होते हैं और इन पर दो या तीन तस्वीरें बनी रहती हैं जैसे गरज चिड़ा, भालू और एक दास। इस तरह के दो टोटम पोल स्टैनली पार्क, वैनकूवर[15] में देखे जा सकते हैं। जनजाति के टोटम पोल इनकी अपने धर्म का इतिहास है जिसमें उनके पुरखों के नाम, टोटके, बुरी आत्माऐं, कहानियॉ और जादूगरी खुदी हुई है।

[14] Haida, Tsimshian, Bella Coola, Kwatiul and Nootka

[15] Stanley Park, Vancouver, BC, Canada

यही चीज़ें इनके परिवार के पोल में भी हैं। पर इस पोल में इनके साथ साथ लोगों ने पौटलैच के जरिये जो चीज़ें हासिल की या फिर अपने पुरखों से हासिल की वे भी उनमें खुदी हुई हैं। ये पोल इन लोगों के भतीजों ने बनवाये थे जो उनके मरने के बाद उनके वारिस बनते थे।

भतीजे का वारिस बनना पहले तो दूसरों को बेटे के लिये अन्याय लगता है पर सच तो यह है कि ये पुराने लोग इस तरह की रीति को नहीं मानते थे। ये पिता की बजाय माता की तरफ से वंश को मानते थे।

इसको हम तर्कसंगत इसलिये भी कह सकते हैं क्योंकि कोई भी पिता विश्वास से तो यह नहीं कह सकता कि उसका बेटा उसका ही है पर यह वह विश्वास के साथ कह सकता है कि उसकी बहिन का बेटा उसकी बहिन का ही है।[16]

टोटम पोल का बनाना एक बहुत ही खर्चीला काम था। उस पर केवल खुदाई के काम के ही कभी कभी दो हजार डालर से ज़्यादा लग जाते थे और महीनों की मेहनत अलग से। अगर किसी मरे हुए के लिये टोटम पोल बनवाना होता था तो साधारणतया वह उसका भाई अपने भतीजे के लिये बनवाता था।

---

[16] My Note – Surprisingly this matrilineal system is still continuing in Ethiopia, East Africa. I do not have much idea about their other systems but they do not use any surname or last name of father's name. Instead they use their mother's name after their given name. Thus they have two names, first name is the person's given name and the second one is his or her mother's first name for the same reason. They have no fixed marriage institution there so they are not sure whose father is who.

काम शुरू करने से पहले यह भाई अपने रिश्तेदारों से सलाह लेता था तो वे उसको सारे कामों में सलाह देते थे – सीडर के पेड़ चुनने से ले कर खुदाई करने वाले के चुनाव तक। फिर पड़ोस की दूसरी जनजातियॉ बुलायी जातीं, एक पौटलैच दिया जाता जो दो से तीन हफ्ते तक चलता था। सब मेहमानों के लिये खाने का इन्तजाम किया जाता। दावत होती और उसमें होता नाच और संगीत और बहुत सारी रस्में।

दावत के अन्त में सबको भेंट दी जाती। ये भेंटें ऐसी होतीं जिनको लोग इस्तेमाल कर सकते थे। आजकल के समय में यह भेंट एक स्टोव हो सकता था या फिर एक कम्बल हो सकता था या फिर एक सिलाई की मशीन भी हो सकती थी और पैसे भी हो सकते थे।

पौटलैच में सब बुलाये हुए मेहमानों को इतना सारा दिया जाता कि वह जनजाति या परिवार जो पौटलैच देता था काफी गरीब हो जाता था। कुछ पौटलैच में तो पन्द्रह हजार डालर तक खर्च हो जाते थे।

यहॉ की धार्मिक कला सारे उत्तर अमेरिका की जनजातियों की कलाओं में सबसे ज़्यादा सुन्दर और अच्छी कला समझी जाती है। उसकी एक सी लाइनें और गोले के डिजाइन उसकी सुन्दरता को हर जगह बढ़ाते हैं।

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इतने पुराने लोगों को इस तरह की यह सुन्दरता कैसे आयी। टोटम के इन निशानों को लोग ध्यान

से देखते हैं खास कर के वे लोग जो उनको पहली या दूसरी बार देखने आते हैं।

पुराने जंगली तरीके से रहने से ले कर आजकल के रहने के बीच में जो कुछ हुआ वह इन इन्डियन्स के लिये एक बहुत बड़ा धक्का था। इसमें वे बीच में बहुत सारे काम छोड़ गये।

अभी कुछ समय पहले से ही इन्होंने अपनी कला आदि में कुछ रुचि दिखायी है। बड़े लोग अपने बच्चों को अपने पुरखों की कहानियाँ सुनाते हैं। इससे वे उनमें ऐसे टोटम पोल खोदने की इच्छा को फिर से जगाने की कोशिश करते हैं। पर अभी तक कुछ छोटे छोटे टोटम पोल केवल उन्हीं के लिये बन पाये हैं जो उनके गाँव घूमने आते हैं।

कोई टोटम पोल जिसकी ठीक से खुदाई की गयी हो उसको उसकी कहानी के साथ खरीदना तो बिल्कुल ही असम्भव है क्योंकि किसी भी सरदार के लिये यह बड़ी बेइज्जती की बात होगी कि पहले तो वह अपना टोटम पोल बनवाये और फिर उसी को बेच दे।

2 इन्डियन टोकरियाँ

बहुत समय तक बहुत सारी इन्डियन जनजातियाँ समुद्र में से अन्दर आती हुई नदियों के आस पास रहती रही थीं और ये नदियाँ अन्दर तक पहाड़ों के पास तक पहुँचती थीं। सारी जनजातियाँ अपने अपने तरीके से अपने अपने तरीकों की अपने घर के इस्तेमाल के लिये टोकरियाँ बनाती थी।

उस समय वे लोग मिट्टी का इस्तेमाल नहीं जानते थे सो इनको बनाने के लिये उनको जो कुछ भी अपने पास दिखायी दिया उन्होंने वही इस्तेमाल किया।

जो लोग उत्तर में फ्रेज़र[17] के पास रहते थे वे अपनी टोकरियाँ बिर्च के पेड़ की छाल की और विलो के पेड़ के रेशों की बनाते थे। थोम्पसन लोग जो फ्रेज़र की गहरी घाटी के पास रहते थे वे सीडर पेड़ की जड़ों की टोकरियाँ बनाते थे। उन जड़ों की वे एक से साइज़ की पट्टियाँ बना लेते थे और फिर उनको आपस में गूँथ लेते थे।

उसकी सीधी सीधी पट्टियों को वे हड्डी की सुई में धागे की तरह पिरो कर के धागे की तरह इस्तेमाल करते थे। टोकरियाँ गोल गोल बनायी जाती थीं पर वे घर की अलग अलग जरूरतों को पूरा करने के लिये कई शक्ल में और कई साइज़ में बनायी जाती थीं।

---

[17] Fraser

बोझा उठाने वाली टोकरी, पानी लाने वाली टोकरी, खाना बनाने के बर्तन, बड़ी तश्तरियाँ, पंखे, बैरीज़ सुखाने के लिये बड़ी तश्तरियाँ, कपड़े और दूसरी चीज़ें रखने के लिये बक्से आदि आदि सब अलग अलग साइज़ और शक्लों की होती थीं।

अपना खाना बनाने के लिये ये किसी खाना बनाने वाले बर्तन में पानी भर कर उसमें बहुत गर्म पत्थर डाल देते थे और उसको किसी ढक्कन से ढक कर रख देते थे। और जब तक उसको कस कर ढक कर रखते थे जब तक कि उनका खाना उसमें पक नहीं जाता था।

ट्रे खाना खाने के लिये, आग को हवा करने के लिये और बैरीज़ को सुखाने के लिये इस्तेमाल की जाती थीं। इनकी बहुत सारी टोकरियाँ तो पचास साल के बाद भी खराब नहीं होती थीं।

थोम्पसन जनजाति के हाथ की बनी चीज़ों की और दूसरी जनजातियों के लोगों में बहुत माँग थी सो वे उनको हिरन की खाल, और दूसरी खालें और दूसरी काम की चीज़ों से बदल लेते थे।

उत्तरी अमेरिका की किसी और दूसरी जनजाति के पास चीज़ों को बनाने के इतने डिजाइन और तरीके नहीं थे जितने कि थोम्पसन जनजाति के पास थे। कोई भी उनके सीधी लाइन को सैंकड़ों तरीकों से लगा कर बहुत सारे डिजाइन बना लेने पर आश्चर्य करेगा।

वे लोग सजाने के लिये बिल्ली की पूँछ का और जंगली चैरी की छाल का इस्तेमाल करते थे। इनको वे दोनों तरीके से इस्तेमाल करते थे रंग कर भी और बिना रंगे भी।

टोकरियों के डिजाइन पुश्त दर पुश्त चले आते थे। अगर कोई नया डिजाइन बनाता था तो वह उसी परिवार का होता था जिसने वह बनाया है और दूसरे लोग उसको नकल नहीं कर सकते थे।

आजकल तो वे बेचारे दोनों तरह की सभ्यता में बँटे हुए हैं – आजकल की नयी सभ्यता को अपनाने में और अपनी पुरानी संस्कृति को बनाये रखने की इच्छा में। पर लगता है कि वे अपनी पुरानी संस्कृति को बनाये रखने में कामयाब नहीं हो पायेंगे।

इसकी एक वजह यह भी है कि आजकल उनकी टोकरियाँ उतनी अच्छी नहीं बनती हैं जितनी पहले बना करती थीं क्योंकि आजकल के टोकरियाँ बुनने वालों में पुराने बुनने वालों की आत्मा नहीं रह गयी है। वह उनके लिये केवल एक रस्म बन कर रह गयी है।

इन लोगों की टोकरियों को हासिल करना भी करीब करीब नामुमकिन सा है क्योंकि पहले तो यह मिलती नहीं हैं और अगर कहीं मिलती भी है तो वह बहुत मँहगी मिलती है। आजकल ये टोकरियाँ केवल बहुत बूढ़े लोग ही बना पाते हैं।

जो लोग खारे पानी के पास रहते थे वे भी अपने खाना पकाने के लिये पत्थरों को उबालते थे पर वे अपनी हर जरूरत को पूरा करने के लिये केवल टोकरियों पर ही निर्भर नहीं रहते थे।

उनके पास कई तरह के सख्त पेड़ थे जिनको खोखला कर के वे बक्से बनाते थे। इन पेड़ों के तने अक्सर दस दस फीट तक लम्बे होते थे इन्हीं को वे खोखला कर के बक्से बनाने के लिये इस्तेमाल करते थे। ये बक्से अक्सर दावतों में खाने का सामान भरने के काम आते हैं।

ये बक्से इनके मालिकों के निशानों से नक्काशी किये हुए होते थे और समुद्र की सीपियों से सजे हुए होते थे। जब कोई इन्डियन ऐसे बक्से की बात करता है तो उसका मतलब होता है कि उस पर बहुत सारी नक्काशी और पेन्टिंग की गयी है और उसमें उस कबीले के शाही कपड़े रखे हुए हैं जिसका वह सदस्य है। शायद किसी दिन उसमें उसका शरीर रखा जायेगा जब वह मर जायेगा।

वैनकूवर टापू पर, उसके पास वाले टापुओं पर और अमेरिका की वाशिंगटन स्टेट के पास वाले टापुओं पर जो इन्डियन्स रहते हैं वे उन्हीं चीज़ों से अपनी टोकरियाँ बनाते हैं जिनसे उनके पुरखे बनाते थे।

उनको बनाने के लिये वे जहाँ समुद्र का ज्वार जगह छोड़ जाता है वहाँ की जमीन से घास इकट्ठी करते हैं, उसको सुखाते हैं, उसका

रंग निकालते हैं फिर उसको अपने घर की छतों पर सुखा लेते हैं। फिर उनको रंग कर उनसे टोकरियॉ बनाते हैं।

नूटका स्त्रियॉ जो टोकरियॉ बनाती हैं उनमें कोई दो टोकरियॉ एक सी नहीं होतीं इसी लिये उनकी टोकरियों में सैंकड़ों तरह के डिजाइन पाये जाते हैं पर इनके ढक्कन हर हाल में टोकरी से मैच करते हैं। इनकी बनायी हुई टोकरियॉ बहुत सुन्दर होती हैं।

ये लोग घास को किसी भी साइज़ और शक्ल की एक बोतल के चारों तरफ लपेट लेती हैं और फिर उनसे ऐसे सामान बनाती हैं जो इन्डियन्स को बहुत अच्छे लगते हैं जैसे बाजार से सामान खरीदने वाले थैले, बहुत छोटा सामान रखने के लिये बहुत छोटी छोटी टोकरियॉ आदि। इनकी ये चीज़ें सुन्दर भी बहुत होती हैं। इनमें चमकीले रंग लगे रहते हैं और इनकी लोक कथाओं की तस्वीरें बनी रहती हैं।

जो लोग इन लोगों की चीज़ें इकट्ठा करते हैं उनको ये चीज़ें बहुत पसन्द आती हैं। वे जब यहॉ घूमने आते हैं तो पल भर में ही "ब्रिटिश कोलम्बिया की बनी चीज़" के नाम से ही बहुत सारी चीज़ें खरीद कर ले जाते हैं। हॉ, पर सारे लोग इन स्त्रियों से सीधे नहीं खरीद पाते। वे लोग उन दूकानों से ही खरीदते हैं जो केवल ये ही चीज़ें बेचते हैं।

क्वीन चारलोट टापू की हायडा जनजाति, उनके भाई बहिन अलास्का में और उनके सम्बन्धी सिमशियान लोग इधर की तरफ की

सारी जनजातियों में सबसे ज़्यादा सुसंस्कृत जनजातियाँ थीं। पर गोरे लोगों के साथ में आने से उनके रहने सहने के तौर तरीकों में बहुत फर्क आ गया।

इससे उनकी टोकरियाँ बुनने की कला तो धीरे धीरे खत्म सी ही होती गयी पर उनके कम्बल बुनने के काम को भी बहुत धक्का पहुँचा। ये लोग बहुत अच्छा और बहुत बारीक गर्म कपड़ा बुनते थे।

हालाँकि स्लेट के बने टोटम पोल और चाँदी के सिक्के का काम तबसे बहुत अच्छा हो गया था पर वह भी अब धीरे धीरे खत्म सा होता जा रहा है क्योंकि पुराने काम करने वाले अब अपने पुरखों के पास पहुँचते जा रहे हैं।

हर जनजाति की टोकरियाँ अलग अलग तरीके से बनती थीं। हायडा लोग अपनी टोकरियाँ चिड़िया के पिंजरे की तरह से बुनते थे ताकि वे उनको केंकड़े पकड़ने के लिये जाल की तरह से भी इस्तेमाल कर सकें।

क्वागुश लोग भी इसी तरह से अपनी टोकरियाँ बनाते थे। आजकल ये लोग अपनी टोकरियाँ स्प्रूस पेड़ की जड़ से बनाते हैं जब कि पहले ये इनको बनाने के लिये सीडर पेड़ की छाल का इस्तेमाल करते थे।[18] इनके धागों की पहले पतली रस्सी या मोटी

[18] Roots of Spruce tree, and the bark of the Cedar tree

रस्सी या चटाई बना ली जाती थी फिर उसी को सारे लोग टोकरियाँ बनाने के लिये इस्तेमाल करते थे।

स्प्रूस के पेड़ की जड़ों की टोकरियाँ बहुत मजबूत होती थीं। उनमें धागे सीधे ऊपर की तरफ जाते थे जब कि नूटका लोगों की टोकरियों में लगे धागे टेढ़े जाते थे। इनमें डिजाइन भी बने रहते थे जो बाहर से तो दिखायी देते थे पर अन्दर से कभी नहीं।

सिमशियान लोग भी हायडा लोगों की तरह से ही अपनी टोकरियाँ बुनते थे पर उनकी टोकरियाँ ज़्यादातर सीडर पेड़ की छाल की बनी होती थीं। पर अब वे उनको बनाने के लिये स्प्रूस पेड़ की छाल भी इस्तेमाल करने लगे हैं।

हालाँकि सब जनजातियों की स्त्रियाँ इस काम को बहुत अच्छा करती थीं फिर भी सिमशियान लोगों की पुराने तरीके की टोकरियाँ थोड़ी ऊबड़ खाबड़ किस्म की होती थीं।

थिनगैट्स की याकूटैट्स जनजाति[19] जो अलास्का के समुद्री रास्तों के पास रहती है इन टोकरियों के बारे में एक लोक कथा कहती हैं – उनका कहना है कि पहली टोकरी सूरज की पत्नी ने आसमान में बनायी। क्योंकि उसके बहुत सारे बच्चे थे इसलिये वह उनको धरती पर रखना चाहती थी।

एक दिन उसने स्प्रूस के पेड़ की जड़ से एक टोकरी बनायी जिसमें उसने एक लम्बी सी रस्सी बाँधी ताकि वह उसके सहारे अपने

[19] Yak-utats tribe of Thin-gets

बच्चों को धरती पर उतार सके। सूरज ने अपनी पत्नी के काम को बड़े गर्व के साथ देखा और उसकी बहुत तारीफ की। जल्दी ही वह टोकरी बनाने के काम में बहुत कुशल हो गयी और फिर उसको बनाना सिखाने वाली भी हो गयी।

उसकी वे टोकरियाँ मजबूत और लचीली होतीं और उनमें आसमान में रहने वाले चमकते लोगों की तस्वीरें बुनी रहतीं। सूरज के बच्चों ने टोकरी बनाने की कला को धीरे धीरे और अच्छा कर लिया।

टोकरियाँ बनाने का सामान तभी इकट्ठा कर लिया जाता है जब वसन्त शुरू होता है और उन पेड़ों से उनका रस निकलना शुरू हो जाता है। उसी समय उन पेड़ों की जड़ों से उसकी छाल आसानी से निकाली जा सकती है।

जड़ से छाल निकालने के लिये बड़ी होशियारी और चतुराई की जरूरत होती है इसलिये साधारणतया यह काम कोई बड़ी बूढ़ी अनुभवी स्त्री ही करती है। इस काम के लिये एक खास शक्ल का चाकू इस्तेमाल किया जाता है।

टोकरी सजाने के लिये ये लोग घास इस्तेमाल करते हैं। वह घास गर्मी के शुरू में ही तोड़ ली जाती है क्योंकि उस समय यह मुलायम रहती है। फिर उसको बीच में से चीर लेते हैं और उसको धूप में सुखा लेते हैं। फिर इसको उबलते हुए पानी में डुबो देते हैं और कई रंगों में रंग लेते हैं।

इनके यहाँ की टोकरियों में छह तरीके की बुनाई है और दूसरे तरीके की शक्लें हैं। ये टोकरियाँ काफी मजबूत रहती हैं और सालों तक चलती हैं। जब ये टोकरियाँ नयी नयी होती हैं तो कुछ कत्थई रंग की रहती हैं। थिन गैट्स लोग इनके डिजाइन आदि बहुत ध्यान दे कर बनाते हैं और इनको बड़ी सँभाल कर पकड़ते हैं।

अट्टु[20] स्त्रियाँ जो अट्टु टापू पर रहती हैं उत्तरी इन्डियन्स में सबसे बढ़िया टोकरियाँ बनाती हैं। ये एक अलग तरह की घास से अपनी टोकरियाँ बनाती हैं जिसको ये गरमी के आखीर में तोड़ती हैं।

इस घास के बीच में से सुई की सहायता से एक पतली सी पट्टी निकाल ली जाती है। फिर उस पट्टी की मजबूती और रंग की जाँच की जाती है। बाद में उस घास को कपड़े के एक थैले में रख कर टाँग दिया जाता है जब तक वह इस्तेमाल करने के लायक होती है। उसके बाद उनको ऐंठन दे कर बुन लिया जाता है।

इनकी यह बुनाई इतनी बढ़िया होती है जैसे किसी ने सिलाई की हो। इस तरह की दिखायी देने के लिये इनको ये टोकरियाँ पानी के अन्दर बुननी पड़ती हैं।

एक बार बाहर से आयी एक स्त्री ने इनको ये टोकरी बनाते देखा तो उसने बताया कि उसकी तो समझ में ही नहीं आया कि वे कैसे इतने ठंडे पानी में बैठ कर ये टोकरियाँ बनाती हैं।

---

[20] Attu women

इनकी ये रस्सियॉ बस केवल इतनी ही नम रहनी चाहिये जिससे ये सूख कर अकड़ न जायें, भीगी हुई नहीं।

अगर तुम इन टोकरियों के इकट्ठे करने वाले नहीं हो तो यह एक बहुत अच्छा शौक है। बस सोचते रहो इन स्त्रियों के बारे में कि किस तरह से ये बारिश के लम्बे दिनों और रातों में घर में बैठी बैठी ये टोकरियॉ बुनती रहती हैं और बच्चों को और आने वालों को कहानियॉ सुनाती रहती हैं।

टोकरियों में डिजाइन बनाती रहती हैं जो ऐसे अजनबियों के पास चले जायेंगे जिनको शायद उनका ठीक से मतलब भी नहीं पता। उनमें से कुछ डिजाइन उनके पुराने हीरो लोगों की कहानियॉ कहते हैं जबकि दूसरे डिजाइन बुनने वाले के सुख दुख की।

इन्डियन्स सोचते है कि ये सफेद लोग अजीब आदमी हैं सो जब वे उनको देखते हैं तो उनमें खो जाते हैं और उधर जब सफेद लोग इनको देखते हैं तो वे इनमें खो जाते हैं। इन इन्डियन्स को केवल एक ही भाषा आती है – "टोकरी खरीद लो।", "सस्ती है सस्ती है।", "कुछ कपड़े।", "कुछ पैसे।"।[21]

[21] "Buy basket", "Cheap, cheap." "Some clothes." "Some money."

3 नियम वाले इन्डियन्स[22]

उत्तर पश्चिमी किनारे पर रहने वाले इन्डियन्स का बच्चे के सिर को बॉधने का एक तरीका था। वे उसको चमड़े की पट्टी से लकड़ी के एक चौरस तख्ते से बॉध देते थे। इससे खोपड़ी का व्यास कम हो जाता था और यह सिर को पीछे की तरफ बढ़ा देता था। ऐसे कोन जैसे सिर इनको दूसरी जनजातियों से अलग करते थे और फ्रीमैन[23] जनजाति के अलावा इस तरह से कोई और नहीं कर सकता था।

यह रीति कुछ और जनजातियों में करीब तीस पैंतीस साल पहले तक प्रचलित थी पर आज जो इन्डियन्स रह रहे हैं उनके सिर शुगर–लोफ सिर हैं जो उनकी जंगली जनजाति की संस्कृति की आखिरी निशानी है।

ये लोग अपने होठ छिदवा कर उसमें भी गहना पहना करते थे। इनमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय गहना था कि एक चौरस लकड़ी का एक टुकड़ा ले कर उसके एक किनारे पर उसमें एक छेद कर लिया जाता था और उसको नीचे वाले होठ के नीचे एक छेद में पहन लिया जाता था।

जब लोग उसको इस्तेमाल करना चाहते तो होठ को मजबूती से पकड़ कर उसे सीधा और बाहर निकालते थे और जब उसको वे

---

[22] The Aristocratic Aboroginals.

[23] Freeman Tribe

लोग बाहर निकालना चाहते तो वह होठ को नीचे कर देते और अपनी जीभ बाहर निकाल सकते थे। इससे ऐसा लगता जैसे उनके दो मुँह हों।

वे लोग अपने शरीर पर गुदना गुदवाते और अपने चेहरे अपने कबीले के निशानों से रंगवाते। यह गुदना वे अक्सर अपनी बॉहों के पीछे और टॉगों के सामने वाले हिस्से पर गुदवाते थे। दूसरी जगह पर बहुत कम गुदवाते थे।

चेहरे पौटलैच की दावत पर रंगवाये जाते थे और ये उन कबीलों के निशान होते थे जिन कबीलों के वे होते थे। बहुत सारे टोटम पोल पर ऐसे खुदे हुए चेहरों पर ऐसे निशान खुदे हुए मिल जायेंगे। यह रिवाज भी अब खत्म होता जा रहा है क्योंकि अब पौटलैच ही नहीं रह गये हैं।

यहॉ के लोग केप का इस्तेमाल करते हैं और ये केप अभी भी फैशन में हैं। वैनकूवर में स्त्रियॉ अभी भी ऐसे केप पहनती हैं। ये बारिश के मौसम में ये बहुत काम आते हैं। इसके साथ में स्त्रियॉ एक चौरस गोल टोप पहनती हैं जिनसे पानी टपक टपक कर बाहर गिर जाता है।

कैप्टेन वैनकूवर और दूसरे यात्री लिखते हैं कि ये असभ्य लोग अपने कपड़े पेड़ की जड़ों के रेशों में कुत्ते के बालों को गूँथ कर बनाते थे। ये कुत्ते इसी लिये पाले जाते थे। पहले वे खाने के लिये भी पाले जाते थे पर अब वे इसलिये नहीं पाले जाते।

इन्डियन्स अपना खाना पास के पानी से लेते थे और जमीन पर ज़्यादा आते जाते नहीं थे। चाहे गर्मी हो या सर्दी वे किसी तरह का कोई जूता इस्तेमाल नहीं करते थे। जाड़ों में ये लोग ऐसे कीमती कपड़े इस्तेमाल करते थे कि पुराने यात्री लोग सात समुद्र की कठिनाइयॉ झेल कर भी उनको लेने के लिये यहॉ आते थे।

अक्सर लोहे का एक छोटा सा टुकड़ा या औटर की खाल उनका वह केप खरीदने के लिये काफी रहता जिसको वे चीन या किसी अमेरिकन बन्दरगाह पर सौ डालर से भी ज़्यादा में बेच सकते थे। पर अब ये समुद्री जानवर सब खत्म से हो गये हैं। हॉ, इसका एक नमूना विक्टोरिया[24] के प्रौविन्शियल म्यूजियम में देखा जा सकता है।

[24] Victoria which is the capital of British Columbia, is on Vancouver Island

4 डंडियों का खेल[25]

यहाँ के मूल निवासी लोग जुआ बहुत खेलते थे। हालाँकि उनके पास पाँसा फेंकने वाले और कुछ और भी फेंकने वाले खेल थे पर उनका सबसे लोकप्रिय खेल डंडियों का खेल था। इस खेल में हर जनजाति अपने तरीके से डंडी के ऊपर निशान लगाती थी और इसको अपने तरीके से खेलती थी।

इनमें कुछ खेल मौके पर आधारित थे और उनमें खेलने वालों की किस्मत काम करती थी जबकि दूसरे खेलों में होशियारी की जरूरत पड़ती थी।

उनके ये खेल उनकी प्राकतिक प्रकोप से और उनके दुश्मनों से कई तरह से रक्षा करते थे। इन खेलों से उनकी समझने की ताकत बढ़ती थी और हाथ और आँखें ठीक से काम करना सीखती थीं। यह सब चीज़ें जब उनके दुश्मन उन पर भाले या डंडों से हमला करते थी तब भी वे बहुत काम करती थीं।

इस खेल के बाद वे अपने शरीर को कई तरह से मोड़ सकते थे जिससे वे इन भालों और डंडे की मार से बच जाते थे और अक्सर अपने दुश्मन से जीत जाते थे।

[25] Stick Game.

इन डंडियों के कई खेलों में से एक खेल था "लेहल"[26]। यह खेल तीस से पचास हड्डियों की या लकड़ी की डंडियों में खेला जाता था। इनकी लम्बाई चार से छह इंच तक होती थी। हर डंडी पर एक निशान रहता था जिससे उसकी कीमत पता चलती थी।

इस खेल को खेलने वाले, कभी कभी बीस तक, एक दूसरे के सामने बैठ जाते थे। ये डंडियाँ खिलाड़ियों में बाँट दी जाती थी और खिलाड़ी उन डंडियों को कम्बल के एक टुकड़े से या पेड़ की छाल से और या फिर घास से ढक लेते थे।

दोनों टीम अपना अपना कैप्टेन चुन लेते थे। एक खिलाड़ी दो कीमत वाली दो डंडियाँ चुन लेता था और उनको अपने दोनों हाथों में बिजली की सी तेजी से उलटता पलटता था कि देखने वाले को यह पता नहीं चलता था कि उसके किस हाथ में कौन सी डंडी है।

उसी समय या तो ढोल बजाया जाता या फिर हिरन के खुरों को झुनझुने की तरह बजाया जाता। अक्सर देखने वाले भी इस शोर में अपना शोर मिला देते और देखने वालों को दूसरे के चेहरे के भाव पढ़ना मुश्किल पड़ जाता।

अगर डंडी ठीक से पहचान ली जाती तो वह डंडी जीतने वाले को दे दी जाती। पर अगर वह ठीक से नहीं पहचान पाता तो उसको खुद को अपने पास से डंडी देनी पड़ती।

---

[26] Le-Hal

वे और भी कई खेल खेलते थे। पॉसे बीवर[27] जानवर के मुड़े हुए दॉत के बनाये जाते थे और उसकी ऑतों के धागे से बॉट दिये जाते थे और फिर उन धागों के बीच में नम्बर लिख दिये जाते थे।

[27] Beaver – it is called “Nevalaa” in Hindi

5 गरज चिड़ा[28]

गरज चिड़ा[29] रैवन कबीले[30] का ताज है। वहाँ वह केवल एक मूर्ति ही नहीं है बल्कि एक गुप्त निशान है जो ब्रिटिश कोलम्बिया की जनजातियों में पैदा हुआ है।

यहाँ की रहने वाली जातियों के डाक्टर और सदस्यों का विश्वास है कि गरज चिड़ा एक बहुत ही ताकतवर भगवान है और जिसकी संरक्षता में भाईचारा, शान्ति, समृद्धि, आपस में एक दूसरे के लिये अच्छी भावनाऐं और प्रेम पनपते हैं और फिर बने भी रहते हैं। इससे लोग एक दूसरे के लिये भले रहते हैं और उनमें आपस में सामंजस्य भी बना रहता है।

इसलिये वहाँ के रहने वालों के कबीलों के सदस्य गरज चिड़े के निशान को बहुत सँभाल कर रखते हैं। यह निशान उनके एकसेपन को दिखाता है। जैसे ही लोग यह निशान देखते हैं तो वे समझ जाते हैं कि दूसरा आदमी उनके जैसा ही है।[31]

---

[28] The Thunder Bird.

[29] Translated for the words “Thunder Bird”

[30] Translated for the word “Clan”

[31] This is a tribal characteristic that people of one tribe has to recognize each other by some mark. In North American Tribes people recognize each other with their Totem Pole marks and in Africa they recognize each other by their tribal marks on their faces.

ये लोग मजाक भी बहुत करते हैं और मेहमानदारी भी खूब करते हैं। वे अपने इस भाईचारे पर बहुत गर्व करते हैं और अपने टिलीकम[32] के लिये कुछ भी करने को तैयार रहते हैं।

गरज चिड़े के भाईचारे के सदस्य होने के नाते लोगों को एक बहुत अच्छी ज़िन्दगी बितानी चाहिये जिससे उनका नाम और काम दोनों सब लोगों से अलग दिखायी दें यानी उनको सब "अच्छे काम"[33] ही करने चाहिये। शियांग[34] इस मामले में उनको ताकत और बुद्धि दे कर उनकी सहायता करेगा।

उनके अनुसार शान्त जगह ढूँढो, प्रकृति के साथ खेलो, धरती और आसमान को ध्यान से देखो तो तुम सघाली टायी[35] से बातें कर पाओगे।

सघाली टायी जो हर जगह रहती है – पेड़ों में, पत्तों में, फूलों में, सूरज में, हवा में, घास में, स्कूकम चक[36] में और नमकीन पानी[37] यानी समुद्र में भी।

---

[32] Tillicum – Indian word for a friend. Whoever says "Hyiu-Tillicum" it shows that he is their good friend.
[33] Translated for the Indian language word "Mamook"
[34] The word used to denote "Bear"
[35] Saghalie Tyee is the Great Spirit who lives everywhere. Saghalie Tyee (pronounced as "Tahyee") – the Creator of the Universe lived in Heaven.
[36] Scoocum Chuck means River
[37] Translated for the words "Salt Chuk" which also means Sea

सादा ज़िन्दगी जियो, चीज़ों को बर्बाद मत करो क्योंकि जो चीज़ हम आज इस्तेमाल नहीं कर सकते उसे हम कल इस्तेमाल कर सकते हैं।

अपने शरीर और दिमाग को साफ रखो क्योंकि अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो टूटूक यानी गरज चिड़ा तुमसे नाराज हो जायेगा। वह अपने पंख हिला कर गरजेगा और बिजली से अपनी ऑखें चमकायेगा और इस तरह अपनी नाराजी प्रगट करेगा।

हमेशा अपनी इज़्ज़त को ऊँचा उठाने की सोचो और अपने कहे की बात रखो। पौटलैच[38] करो ताकि तुमको कुछ मिल सके। सबके प्रति दयावान और न्यायपूर्ण रहो और बच्चों और बड़ों के प्रति मेहरबान रहो। अपने कहे हुए को निभाओ।

जब जरूरत हो तो अपने शियांग को अपने सम्बन्धियों और अपने दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार करने के लिये अपनी सहायता के लिये बुलाओ।
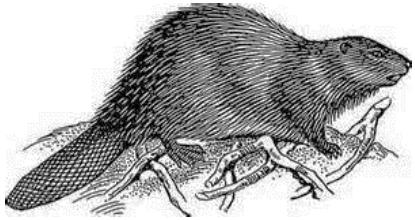
जब तुम दूसरे से व्यवहार करो तो हर समय इसी बात का खयाल रखो कि "अगर तुम उसकी जगह होते तो क्या करते"। इस तरह से रैवन कबीले के नियमों का पालन करो और उसकी इज़्ज़त को बढ़ाओ।[39]

---

[38] Potlach means "Give". Potlach is a festival of Indians living on the Northern coast of Pacific Ocean. On this day one person invites all his friends and presents gifts to all of them to show them that he has lots of wealth, but later other people also do the same and return his gifts of more value than his. It includes food also.

[39] This description about Raven Clan shows that Raven Clan members really aspire for good and higher values.

6 ईना बीवर[40]

इन्डियन्स में बीवर[41] एक ऐसा दैवीय जीव है जो असाधारण रूप से अक्लमन्द है। उसको किकसेट्टु लोगों[42] के किलिस्नु कबीले ने अपने निशान के लिये अपना लिया था।

इस बीवर की बहुत इज़्ज़त की जाती थी क्योंकि यह पानी के अन्दर दूसरे किसी भी पानी के जानवर से ज़्यादा देर तक रह सकता था।

यह सैमौन झील[43] में बने एक तैरते हुए घर में रहता था। इसकी यह झील इतनी होशियारी से बनायी गयी थी कि कभी भी किसी के लिये भी उसके अन्दर घुसना नामुमकिन था।

यह बीवर ही था जिसने इन्डियन्स को सैमौन वीर[44] बनाना सिखाया था जिससे वह पानी को नियंत्रित कर सकते थे। उसने अपने तेज़ दाँतों से काट कर दो भाले भी बनाये जिनके हैन्डिल बहुत सुन्दर थे। जब वह इन भालों

[40] Eena, the Beaver.

[41] Beaver is a big rat like animal who can dig the earth very quickly. See its picture above. Beaver is Canada’s National Animal. It is called “Nevalaa” in Hindi.

[42] Kilisnu clan of Kicksettu People of North-Western America

[43] Salmon Lake

[44] Weir – pronounced as “Veer” – means a very small dam type obstruction over water

से सैमौन मछली को मार नहीं रहा होता था तो वह उनको एक खोखले लट्ठे में छिपा कर रखता था।

एक दिन ये भाले एक दूसरी जाति के तीन सदस्यों को मिल गये। उन्होंने उन भालों से उस दिन सैमौन मछली का इतना अच्छा शिकार किया कि वे अपने सारे गॉव को वे मछलियॉ खिला सके।

उन्होंने वे भाले यह कह कर अपने गॉव के सरदार को दिखाये कि वे भाले उन्होंने खुद बनाये थे और जिन्होंने उनको जादू की ताकत दे रखी थी। पर बीवर बोला कि वे भाले उसने बनाये हैं।

बीवर के इस कहने ने सरदार को परेशान कर दिया कि वह किसकी बात माने। इस बात पर वे तीनों आदमी उस बीवर से भी और आपस में एक दूसरे भी से जलने लगे।

उन्होंने बीवर की हॅसी उड़ायी और उसको अपनी हॅसी का पात्र बनाया पर इस सारे समय में वे उसके तेज़ दॉतों से अपने आपको बचा कर रखते रहे।

आखिर एक बार वह बीवर इतना गुस्सा हुआ कि उसने अपना एक जादुई भाला उठा लिया और उससे उस सरदार को और कई और लोगों को मार दिया। उन सबको मार कर वह अपने तैरते हुए घर में चला गया जो सैमौन झील में था।

वहॉ से उसने चार दिन में एक सुरंग खोदी जो उस इन्डियन गॉव तक जाती थी। यह सुरंग उस गॉव के घरों के नीचे से जा रही थी सो सुरंग के खुद जाने के बाद वे सारे घर पानी के तालाब में डूब
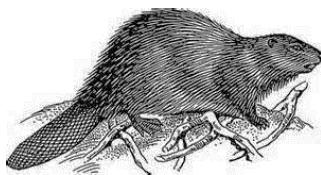
गये। वहाँ के जो लोग बच गये थे उनको अपनी शील्ड[45] पर बीवर का निशान इस्तेमाल करने की इजाज़त दे दी गयी।

इस तरह बीवर का निशान इन जातियों में बहुत समय से इस्तेमाल होता आ रहा है। दूसरी जातियों में यह निशान आपस में एक दूसरे से शादियाँ करने से पहुँचा और तभी से वे लोग इसको इस्तेमाल कर रहे हैं।

बीवर साधारणतया हमेशा ही अपना जादुई भाला अपने तेज़ दाँतों से काटता दिखाया जाता है। क्योंकि यह बहुत मेहनती होता है इसलिये यह टोटम पोल पर अक्सर ही रैवन[46] के साथ रहता है। उसको जूनौ में किकसैट्टी के टोटम पोल[47] पर भी खोदा गया है।

बीवर की कुछ और भी ऐसी कहानियाँ हैं जो यह बताती हैं कि इन्डियन्स ने उसके निशान को अपनी ढाल के लिये कैसे हासिल किया। वे उसको इस तरीके से हासिल करने से ज़्यादा अच्छे ढंग से हासिल करना बताती हैं।

[45] Translated for the word “Crest” – shield. See its one picture above. It may be in a medal form also which can be pinned up on the front side of the body, or can be worn too in the neck by putting a string in it.

[46] Also known as Thunder Bird

[47] Totem Pole of Kicksetti at Juneau. Juneau, Alaska’s remote capital, sits in the state’s panhandle, at the base of 3,819-ft.

7 ओल–हियो सील मछली[48]

हायडा जनजाति के इन्डियन्स की क्वाकीयूतु जाति[49] में वहाँ का सील समाज उनकी जाड़ों की दावतों में नाच और नाटक करने के लिये बहुत मशहूर है। और यही काम उनको उस समाज में ऊँची जगह भी दिलवाता है।

इनके समाज में सील मछली से ज़्यादा कोई और महत्वपूर्ण जानवर नहीं है क्योंकि इसमें बहुत सारा माँस होता है और बहुत सारी चर्बी होती है।

ये लोग इसकी खाल के कपड़े और कम्बल बनाते हैं। इसकी आँतों से तैरने का सामान[50] और जाल आदि बनाते हैं।

क्योंकि ये बहुत ही पालतू होती हैं इसलिये इनको चट्टानी टापुओं पर या रेतीले किनारे पर जहाँ नदियाँ समुद्र में गिरती हैं वहाँ आसानी से पकड़ा जा सकता है।

ये लोग सील मछली का माँस बड़ी बड़ी दावतों मे इस्तेमाल करते हैं। कहने की बात नहीं कि उसका सबसे अच्छा माँस सबसे मुख्य मेहमान को दिया जाता है। इसी लिये सील मछली का निशान इनके खाने पीने के बर्तनों पर भी पाया जाता है।

---

[48] Ol-Hiyo, the Seal.

[49] Kwakiutl – pronounced as “Kwaakee-yoo-tu”

[50] Floats – on which people can sit and enjoy in the water. See the picture above.

कभी कभी ये लोग इनको समुद्र के किनारे पाये जाने वाली ऐबैलूनी[51] की सीपियों से भी सजाते हैं।

क्वाकीयूतु लोगों में एक कथा कही जाती है कि एक समय "गरज चिड़ा"[52] एक आदमी के घर आया जो नदी के मुहाने के पास रहता था। उस घर के पास ही एक चट्टान पड़ी थी जिसके ऊपर बहुत सारी सील मछलियाँ सो रही थीं।

गरज चिड़े ने एक बड़ा सा लट्ठा लिया और उस लट्ठे से उन सब सीलों को मार दिया। फिर उसने आग जलायी, उसमें पत्थर गर्म किये और उन पत्थरों पर उन सील मछलियों को भुनने के लिये रख दिया। जब वे खूब भुन गयीं तो उसने उन सब सीलों को खा लिया। पर उन सबको खाने के बाद भी उसका पेट नहीं भरा।

उसने उस आदमी से उसकी सील पकड़ने वाली नाव और सील मछली को मारने वाला भाला उधार लिया और चार और सील मछलियाँ पकड़ लाया। उसने फिर से आग जलायी और उन मछलियों को भी गर्म पत्थर पर भूना ताकि वह उनको अपने साथ ले जा सके।

उसके पास ही सीडर पेड़ का एक नीचा कटा हुआ तना लगा हुआ था। गरज चिड़े ने उस तने से पूछा — "क्या तुम नहीं चाहते कि तुम भी ये मछलियाँ खा सको?"

---

[51] Abalone – a common name for very small to very large edible sea snails. Their other common names are ear shells, sea ears, and muttonfish or muttonshells in Australia, ormer in Great Britain.

[52] Thunder Bird

यह कह कर वह स्कंक कैबेज[53] की पत्तियाँ लाने के लिये जंगल चला गया। उन पत्तियों को वह सील का मॉस ले जाने के लिये इस्तेमाल करना चाहता था।

जब वह जंगल चला गया तो वह पेड़ का तना उठा और गरज चिड़े की भूनी हुई सील मछलियों पर जा कर बैठ गया। जब गरज चिड़ा जंगल से वापस लौटा तो उस तने को अपनी भुनी हुई मछलियों के ऊपर बैठा देख कर उसे बहुत गुस्सा आया।

वह इतना गुस्सा हुआ और इतना चिल्लाया कि उसने पेड़ के उस कटे हुए तने को तो शाप ही दे दिया क्योंकि उसको डर था कि और सील मिलने से पहले ही उसको बहुत भूख लग आयेगी।

[53] Western skunk cabbage (in USA), yellow skunk cabbage (in UK), American skunk-cabbage (in Britain and Ireland), or swamp lantern, is a plant found in swamps and wet woods, along streams and in other wet areas of the Pacific Northwest. The plant is called skunk cabbage because of the distinctive "skunky" odor that it emits when it blooms. This odor will permeate the area where the plant grows, and can be detected even in old, dried specimens.

While some consider the plant to be a weed, its roots are food for bears, who eat it after hibernating as a laxative or cathartic. The plant was used by indigenous people as medicine for burns and injuries, and for food in times of famine, when almost its all parts were eaten.

8 लकड़ी खाने वाला कीड़ा कुर्ज़े[54]

लकड़ी खाने वाला एक कीड़ा भी हायडा जाति का एक बहुत ही मुख्य चरित्र है।

एक बार एक सरदार की लड़की जब बड़ी हो रही थी तो उन्होंने उसको एक जगह बन्द कर के रख दिया। उन लोगों का यह विश्वास था कि इस समय लड़कियों में बहुत तरीके की जादुई ताकतें आ जाती है जो दूसरों को कई तरह के नुकसान पहुँचा सकती हैं।

और इस तरह से किसी अकेली जगह बन्द कर के रखने पर वह अपने परिवार के लोगों के अलावा और किसी से नहीं मिल सकेगी और वह उन पर अपनी किसी भी तरह की बदकिस्मती का कोई असर नहीं डाल सकेगी।

इसके अलावा उसको नदी के पास भी जाने की इजाज़त भी नहीं थी ताकि वह सैमौन मछलियों की तरफ न देख सके जिससे कि वे किनारे पर से वापस न चली जायें और लोग उनको खाने के लिये न पकड़ सकें। इससे सब लोगों को खाना भी मिलता रहेगा।

एक बार जब वह लड़की आग में लकड़ी डाल रही थी तो पास के एक पेड़ से एक लकड़ी काटने वाला कीड़ा नीचे गिर पड़ा। उसने उसको सँभाल कर उठा लिया और एक कम्बल में रख लिया।

[54] The Wood Worm Kutze-ce-te-ut (pronounced as Kurze).

वहाँ से वह उसको अपने सोने की जगह ले गयी और उसको कुछ खाना खाने के लिये दिया पर वह कीड़ा तो कुछ खा कर ही न दे।

तब उसने उसको अपना दूध पिलाया। उस दिन से वह कीड़ा बढ़ने लगा। सो अब वह उसको ऐसे पालने लगी जैसे वह उसका अपना बच्चा हो। वह उसको खाने के बक्सों के पीछे छिपा कर रखती। इससे वह कई बार घर वालों को दिखायी भी नहीं पड़ती।

एक बार उसकी माँ ने उसका लगातार गायब रहना देखा तो उसको पता चला कि वह लड़की तो एक लकड़ी खाने वाले कीड़े के साथ खेल रही थी जो अब आदमी जितना बड़ा हो चुका था।

उसकी माँ ने अपने पति सरदार को यह सब दिखाने के लिये बुलाया तो यह सब देख कर तो वह भी बड़े आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि ऐसी चीज़ तो उसने पहले कभी देखी नहीं थी। उसने लड़की के मामा से सलाह की।

उस लड़की के मामा ने उसे अपने घर बुलाया और उस दिन उसको वह खास खाना खिलाया जो उसको बहुत पसन्द था। जब वह खाना खा रही थी वह वहाँ से उस लकड़ी खाने वाले कीड़े को देखने के लिये उसके घर की तरफ खिसक गया।

उसी शाम को उस लड़की के घर कुछ और लोग बुलाये गये और उनको वह बड़े साइज़ का कीड़ा[55] दिखाया गया। साथ में

[55] Translated for the word “Monster”

उनको यह भी बताया गया कि खाने और चर्बी के बक्से इतनी तेज़ी से खाली हो रहे थे कि बहुत जल्दी ही पूरी जाति को भूख से मरना पड़ेगा।

इसके अलावा उस कीड़े की वजह से उन लोगों को कोई ऐसी बीमारी भी लग सकती है जिससे बहुत सारे लोग मर जायें।

अगले दिन उस लड़की के मामा ने उस लड़की को फिर से अपने घर बुलाया। जब वह लड़की अपने मामा के घर में थी तो लोगों ने अपने अपने मछली काटने वाले भाले लिये और डर के मारे उस कीड़े को मार डाला।

जब वह लड़की अपने घर लौटी तो उसने वह कीड़ा मरा हुआ पाया। वह उसको मरा हुआ देख कर बहुत ज़ोर से रो पड़ी और उन लोगों से कहा कि उन्होंने उसके बच्चे को मार डाला। वह उसके दुख में कुछ दिन तक तो गाती रही पर फिर मर गयी।

इस घटना की याद में उस लड़की के घर वालों के बच्चे उस कीड़े की मूर्ति को रखते हैं। उसकी शक्ल खोदा हुआ टोटम पोल का मिलना बहुत मुश्किल है क्योंकि यह अक्सर चाँदी के काम में ही मिलता है।

9 कीवारकू सूरज[56]

सूरज का निशान इस जाति में चमकीले आसमान[57] कबीले का है। यह सिमशियान्ग[58] लोगों का टोटम का निशान है। ये लोग नास और स्कीना नदियों[59] के किनारे रहते हैं। इन इन्डियन्स के पास ऐसी कई कहानियाँ हैं जिनसे यह पता चलता है कि सूरज इनके पुरखों की ज़िन्दगी पर कैसे असर डालता था।

इनके ये पुरखे पहले एक पहाड़ी घाटी में रहते थे जिसमें शिकार के लिये बहुत जानवर मिलते थे, बहुत सारे फलों के पेड़ थे और कई नदियाँ थीं जहाँ से वे सैमौन मछलियाँ पकड़ सकते थे।

आसमान में सूरज, चाँद, तारे, इन्द्रधनुष सबके घर थे। इनमें से इन्द्रधनुष के घर में सूरज का बेटा रहता था। वह सूरज जो सूरज की किरनें बनाता था।

एक दूसरे घर में स्मोक क्लूचमैन[60], यानी बादल स्त्री रहती थी, एक मौसम को साफ रखने वाली स्त्री रहती थी, एक नींद लाने वाली ताकतवर स्त्री रहती थी, एक तूफान लाने वाली स्त्री रहती थी। इन्डियन्स में ये सब स्त्रियाँ दादियाँ कहलाती हैं।

---

56 Kee-War-Kow, the Sun.

57 Translated for the words “Shining Heavens”

58 Tsimshians (pronounced as Timshiang)

59 Naas and Skeena Rivers

60 Smoke Kloochman – the cloud woman

सूरज इन्डियन्स की ज़िन्दगियों का मालिक था और लोग यह समझते थे कि वही सारी दुनियाँ का बनाने वाला भी है। उसके घर में हमेशा ही रोशनी रहती थी और इस रोशनी को वह अपने घर के पूर्व और पश्चिम वाले दरवाजों को खोल और बन्द कर के नियन्त्रित करता था।

उसके घर में एक बहुत बड़ा कुँआ भी था – बीमारी और मौत का कुँआ। यह कुँआ आसमान से धरती तक जाता था। जब इस कुँए का ढक्कन हटाया जाता था तो उसके ऊपर से धरती पर रहने वालों को देखा जा सकता था।

धरती पर रहने वालों की मौत के बाद उनकी आत्माओं को उस कुँए में से ऊपर स्वर्ग में खींच लिया जाता था। फिर उनकी आत्माओं को ज़िन्दगी की आग[61] में जला कर अच्छी और बुरी आत्माओं में बाँट लिया जाता था। और उसके बाद उनकी राख धरती पर फेंक दी जाती थी और उनको दोबारा पैदा कर दिया जाता था।[62]

सूरज ने इन्डियन्स को शिकार के पीछे भागने और जुआ खेलने की कला सिखायी क्योंकि सूरज तो जुआरी है न। उसने उनको जंगली जानवरों को मारने के बारे में बताया जिससे वे उनको निश्चित रूप से मार सके।

---

[61] Fire of Life

[62] To be reincarnated in unborn souls – thus it shows that, maybe, these people also believed in reincarnation.

उसने उनको ज़िन्दगी में मेहनत करने के लिये मजबूत बनाया। उसी ने उनको मछली पकड़ने वाले जाल लगाने सिखाये, सैमौन मछली पकड़ना सिखाया।

उसने स्त्रियों को घर का काम करना सिखाया। पहाड़ी बकरे की ऊन और सीडर के पेड़ की छाल से कपड़े बुनना सिखाया और खाने को बहुत दिनों तक रखना सिखाया।

10 सिसूक दोमुॅहा सॉप[63]

ऐलर्ट बे[64] में रहने वाले इन्डियन्स में एक दोमुॅहा सॉप है। इसके सींग भी हैं। इसके दोनों तरफ मुॅह हैं और बीच में एक आदमी का सिर है जिस पर दो सींग निकले हुए हैं। इसी वजह से यह दोमुॅहा सॉप कहलाता है।

यह सॉप मछली की शक्ल ले सकता है और ऐसा कहा जाता है कि जब वह तैर रहा होता है तो लोगों की ज़िन्दगी नाप रहा होता है।

इस सॉप को देखने, छूने और खाने की सजा एक बहुत ही भयानक मौत है। उस हालत में उसके जोड़ अपनी जगह से हट जाते हैं और उसका सिर पीछे की तरफ झुकता चला जाता है और इतना झुकता चला जाता है कि वह उसकी एड़ी से लग जाता है।

इसके अलावा जिस जिस जगह भी उस सॉप का खून किसी आदमी को छूता है उसके शरीर की वह जगह पत्थर में बदलती चली जाती है।

इन्डियन्स के पुरखों के पास एक ऐसी ताकत थी कि यह सॉप उनको कुछ नहीं कहता था। बल्कि अगर उनके पास उसकी उतारी

---

[63] The Two-Headed Snake Sesook.
[In India we also have such kind of snake, of course not with a head of man in the middle – with two heads, means these snakes have two heads on their both sides, called Dumuhee. It can go both sides.]

[64] Alert Bay, near Western coast of Canada

हुई खाल की पेटी होती थी तो उससे वे कई जादुई काम भी कर सकते थे।

जैसे कि वे उसको एक ऐसी नाव में बदल सकते थे जो अपने पंखों के सहारे पानी में बहुत तेज़ चल सकती थी। वे उसकी ऑखों को अपने ताकतवर से ताकतवर दुश्मन के खिलाफ इस्तेमाल कर सकते थे।

इन लोगों के घरों की छतों पर इस सॉप की तस्वीर खुदी रहती है और जब कोई घर में अन्दर आता है तो उस सॉप की जीभें लगातार लपलपातीं रहतीं हैं।

आज इसकी तस्वीर इन लोगों के घर और रोजमर्रा की काम में आने वाली चीज़ों को सजाने के काम आती है। वे इसकी तस्वीर को अपने टोटम पोल पर भी खोदते हैं।

11 इल जौ ताबीज़[65]

इल जौ वहीं मिलने वाले ताँबे या चाँदी के सिक्के का एक ताबीज़ है जिसे हथौड़े से पीट कर बनाया जाता है और जिसमें छेद होते हैं। उन छेदों में ऑतें या धागा डाल कर इसको पहना जाता है।

यह ताबीज़ क्वीन चारलौट टापू[66] पर रहने वाले लोगों में बहुत ज़्यादा प्रचलित है और यह टापू कैनेडा के पश्चिमी समुद्र में स्थित है।

यह चोरी की आत्मा[67] का निशान है और पहनने वाले के लिये अच्छी किस्मत ले कर आता है। अक्सर यह आत्मा उस आदमी की पीठ के पीछे रहती है जो कोई इसे पहनता है और उसको अपनी चालाकी से चोर बना देती है।

इस चोरी की आत्मा को भगाने के लिये और इस चोरी की इच्छा को रोकने के लिये एक "अच्छी दवा" वाला ताबीज़ पहनने वाला उस आदमी को रास्ता दिखाता है।

अगर इस ताबीज़ की तरफ ठीक से ध्यान दिया जाये तो चोरी की आत्मा का यह ताबीज़ पहनने वाला आदमी बहुत पैसे वाला और बहुत खुशहाल हो सकता है।

---

[65] Ill Jow Amulet.

[66] Queen Charlotte Island, British Columbia, Canada

[67] Spirit of Theft

इस इल जौ ताबीज़ को चोरी से ही हासिल करना चाहिये। इसको चुरा लेने के बाद इसके अन्दर और कई चोरी से ली गयी छोटी छोटी चीज़ें जैसे धागे, बाल, कम्बल के टुकड़े आदि भर लेनी चाहिये।

इस ताबीज़ को या तो अपनी चीज़ों या कपड़ों के साथ में छिपा कर रखना चाहिये या फिर इसको पहनने वाला आदमी अपने साथ भी रख सकता है।

इसको सजावट का सामान नहीं बनाना चाहिये बल्कि इसको किसी छोटे से थैले में बन्द कर के लोगों की बुरी नजरों से बचा कर ही रखना चाहिये।

इस ताबीज़ को नयी ताकत देने के लिये या फिर किसी नये काम को शुरू करते समय इसको कभी कभी दोबारा से भरना पड़ता है। इस सब काम को बहुत छिपे तौर पर ही करना चाहिये सबके सामने नहीं।

जो इन्डियन्स इसको पहनते हैं वे इस बात को अपनी बेइज़्ज़ती समझते हैं अगर दूसरे लोग इस बात को जान लें कि वे इसको पहनते हैं। एक बार यह ताबीज़ ले लिया जाये तो फिर इसको किसी और को नहीं दिया जा सकता। इसको या तो पानी में फेंका जा सकता है या फिर किसी गहरे कुँए में।

इस ताबीज को लेने के लिये किसी ऐसे आदमी को पकड़ना चाहिये जिसको या तो आपके ऊपर कोई शक ही न हो या बाद में फिर वह उसको अपने लिये ले ले।

12 हो हुक सारस[68]

हायडा इन्डियन्स की क्वाकीयूतु जाति[69] में हो हुक सारस एक बहुत ही बढ़िया चिड़ा माना जाता है और यह हमेशा गरज चिड़े[70] के साथ ही जुड़ा रहता है।

स्वर्ग का यह चिड़ा आदमी के साइज़ का है और अपने आप को कभी भी आदमी की शक्ल में बदल सकता है। गरज चिड़े के साथ साथ इसकी शक्ल भी इनके टोटम पोल पर खुदी रहती है।

इन्डियन्स की सीक्रेट सोसायटी की जब जाड़ों की मीटिंग होती हैं तो इसको बड़ी सावधानी से वहॉ दिखाया जाता है। इसको वहॉ दिखाने से पहले कई रिहर्सल की जाती हैं।

इन दावतों के मौकों पर हो हुक का लाल सीडर की लकड़ी का एक तीन से पॉच फीट लम्बा मुखौटा[71] बनाया जाता है। फिर इससे सीडर की छाल के सहारे आदमी की खोपड़ियॉ लटकायी जाती हैं।

इसके अलावा इस मुखौटे को पहनने वाले को सीडर की छाल का एक हार गले में, कंगन हाथ में, पाजामा टॉगों में और एक कम्बल भी पहनने होते हैं।

---

[68] Ho Hook Crane. Translated for the word "Crane". See its picture above.
[69] Kwakiutl – pronounced as "Kwaakee-yoo-tu"
[70] Translated for the words "Thunder Bird"
[71] Translated for the word "Mask".

इस हो हुक सारस के बारे में क्वाकीयूतु जाति के लोगों में एक कहानी कही जाती है — एक बार कुछ स्त्रियाँ खाने के लिये पास के एक टापू पर फर्न की जड़ें और नर्म अंकुर लाने के लिये गयीं।

जब वे लोग वहाँ थीं तो वहाँ उन्होंने व्हेल का सूखा माँस गरम करने के लिये आग जलायी। उस समय यह हो हुक सारस वहीं पास में एक ऊँचे पेड़ के ऊपर बैठा था। उस माँस की खुशबू और आदमी की खुशबू दोनों ने मिल कर उसका ध्यान उधर खींच लिया।

वह पेड़ से नीचे उतरा, उसने उस पेड़ की शाखाओं की छाल से अपनी चोंच को तेज़ किया और एक आदमी का रूप रख कर उन स्त्रियों के पास गया।

उन्होंने अपने मेहमान का स्वागत किया और उसके बैठने के लिये एक चटाई बिछा दी। वहीं उन्होंने उसको व्हेल का माँस भी खाने के लिये दिया।

यह देख कर हो हुक सारस गुस्सा हो गया और बोला — "मैं व्हेल का माँस नहीं खाता। मैं केवल आदमियों का दिमाग खाता हूँ।" कह कर उसने अपनी चोंच आगे की और एक स्त्री का सिर फाड़ कर उसका दिमाग निकाल कर खा लिया।

उन स्त्रियों में से उनकी एक साथिन कहीं और थी। उसने दूर से यह दृश्य देखा तो यह देख कर वह बहुत डर गयी और नाव में बैठ कर गाँव की तरफ चल दी।

वहाँ जा कर उसने जो कुछ देखा था अपने सरदार को बताया। सरदार ने तुरन्त ही लोगों की एक मीटिंग बुलायी और हो हुक के खिलाफ जंग का ऐलान कर दिया।

फिर सरदार वहाँ आया जहाँ हो हुक सारस ने उस स्त्री को मारा था और जहाँ उसकी लाश अभी भी पड़ी हुई थी। वहाँ आ कर उसने उस स्त्री का थोड़ा सा खून लिया और उसे अपने शरीर पर मल लिया।

फिर उसने सीडर की लकड़ी का एक तख्ता पेड़ से बाँध दिया। इससे वहाँ एक जाल सा बन गया। फिर उसने व्हेल का माँस आग पर रख दिया और हो हुक सारस का उस पेड़ पर से नीचे आने का इन्तजार करने लगा।

माँस की खुशबू पा कर हो हुक फिर नीचे आया। उसने फिर से अपनी चोंच पेड़ के तने से रगड़ कर तेज़ की पर इस बार वह सरदार के बिछाये जाल में फँस गया।

सरदार ने तुरन्त ही अपने टोटम की आत्मा को बुलाया। उसने सरदार को ताकत दी और उस ताकत के साथ वह सरदार उस चिड़े को मारने दौड़ा। उसने उसकी चोंच तोड़ कर उसको मार डाला और उसको आग में फेंक दिया।

सरदार के इस काम ने उनकी जाति को हो हुक सारस से आजादी दिला दी और सरदार और उसकी बेटियों को हो हुक सारस

को उनके परिवार का निशान इस्तेमाल करने का अधिकार भी दे दिया।

13 श्वा कुक मेंढक[72]

वैनकूवर की नूटका जनजाति[73] की दंत कथाओं के अनुसार इस दुनियाँ का बनाने वाला सघाली टायी[74] स्वर्ग में रहता था। दो बहुत बड़े बड़े मेंढक उसके घर की रखवाली करते थे।

जब भी कोई अजनबी सघाली टायी के घर के पास आता तो वे अपने मालिक को उनके आने की खबर देने के लिये बहुत ज़ोर ज़ोर से टर्राते थे। वे मेंढक और भी कई काम करते थे।

जैसे जब सूरज बहुत गर्म हो जाता तो यह उन्हीं मेंढकों का काम था कि वे उसकी गर्मी को नियन्त्रित करते। जब सघाली टायी सो रहा होता और ज़ोर से शोर मचाने वाली चिड़ियाँ उसके आराम में खलल डालतीं तो वे ही उनकी आवाजों को भी नियन्त्रित करते थे। वे ही गाँव भर में जा कर सारे दिन का काम भी देखते।

ब्रिटिश कोलम्बिया की स्कीना नदी[75] पर रहने वाले सिमशियांग जाति[76] वाले उसके बारे में एक और कथा भी कहते हैं।

क्योंकि इन मेंढकों की आवाज बहुत तेज़ थी और बहुत दूर से सुनी जा सकती थी, यहाँ तक कि पानी के उस पार से भी, तो

---

[72] Shwah Kuk Frog.

[73] Nootka Tribe

[74] According to Nootka Tribe of Vancouver, Canada, Saghalie Tyee is the Great Spirit who lives everywhere. Saghalie Tyee (pronounced as “Tahyee”) – the Creator of the Universe lived in Heaven.

[75] Skeena River – a river of British Columbia

[76] Tsimshians (pronounced as Timshiang) tribe living at Skeena River in British Columbia in Canada

इनकी यह आवाज उनको कोहरे के मौसम के बारे में भी बताती थी इसलिये वे इनकी आवाज को सुनने की कोशिश करते रहते थे ताकि उनको मौसम के बारे में पता चलता रहे।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार एक पति पत्नी खाड़ी पार कर रहे थे और कोहरा बहुत हो रहा था। उन्होंने उन मेंढकों की आवाजें सुनी और वे किनारे पर आ गये।

वे मेंढक अपनी भाषा में बराबर टर्रा रहे थे और कह रहे थे "आओ मैं तुमको सुरक्षा की जगह दिखाता हूँ।"

इन्डियन्स ने अपनी नाव घुमायी और उसी तरफ जाने लगे जिधर से वह आवाज आ रही थी और वे लोग सुरक्षित किनारे पर आ गये।

पत्नी बोली — "यह मेंढक मेरा है।"

पति बोला — "नहीं यह मेंढक मेरा है मैं रखूँगा इसको।"

वे लोग थोड़ी देर तो बहस करते रहे फिर पत्नी ने उसको उठा लिया और उसको अपने बच्चे की तरह रख लिया।

वह उसको जंगल में एक झील के पास ले गयी और उसको उस झील में छोड़ दिया। वह उसकी बार बार तारीफ करती रही कि वह उसी की आवाज थी जिसने उनको किनारे तक पहुँचा दिया था वरना तो वे आज बचने वाले नहीं थे।

वे उस कोहरे में या तो कहीं गुम हो जाते और या फिर पता नहीं उनका क्या होता।

इस खुशी में एक दावत दी गयी और एक खास मेहमान को बुलाया गया। जब वह खास मेहमान दावत में आया तो सब लोग यह देख कर हैरान रह गये कि वह तो ज़िन्दा मेंढकों का एक हार पहन कर आया था।
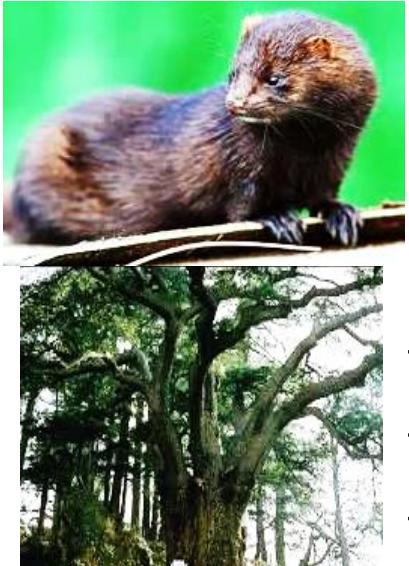
उस हार में एक मेंढक दूसरे मेंढक से उसकी टॉग से बॅधा हुआ था। क्योंकि उस समय उसका परिवार मेंढक को अपने देवता की तरह से मान रहा था।

एक दूसरी दंत कथा के अनुसार स्वर्ग में रहने वाला एक भेड़िया दुनियॉ में रहने वाले मेंढकों से बहुत डरता था।

इसी लिये मेंढक इन लोगों के टोटम पोल पर या घरों पर खुदे रहते हैं ताकि वे और उनके घर उस भेड़िये से सुरक्षित रहें। ये मेंढक और जातियों के टोटम पोल पर भी खुदे रहते हैं।

14 चीचेका मिंक[77]

चीचेका मिंक[78] दूसरों के मामले में दखलन्दाजी करने वाला एक जानवर था।

एक दिन वह एक जंगल से हो कर जा रहा था तो वह इधर उधर देखने के लिये एक सीडर के पेड़[79] पर चढ़ गया। वहाँ से उसे एक झील दिखायी दी। उसने देखा कि उस झील के किनारे पर एक आदमी अपनी नाव के साथ कुछ कर रहा था।

बस मिंक उस पेड़ से नीचे उतरा और उस आदमी के पास पहुँचा। वहाँ जा कर उसने देखा कि वह हिरन के कुछ ढाँचे उस नाव में भर रह था।

उसने उस आदमी को नमस्ते की और फिर पूछा कि क्या वह उन हिरन के ढाँचों को उसकी नाव में रखवाने में उसकी सहायता कर सकता था। वह आदमी राजी हो गया।

मिंक ने उस सब ढाँचों को मन ही मन गिन लिया। वे कुल मिला कर दस थे। उसको लगा कि इस समय उसको वहाँ खाना मिलने का कुछ मौका है।

---

[77] Cheecheka Mink.

[78] Mink is a dark colored semiaquatic species of rodent native to North America. See its picture above.

[79] Cedar tree. See the picture of a cedar tree. Cedar trees are of various types, this is one of them.

यह सोच कर उसने उस अजनबी से पूछा कि क्या वह उन ढाचों को उसके घर में रखवाने के लिये उसके साथ उसके घर चल तक चल सकता था? वह आदमी इस पर भी राजी हो गया।

मिंक नाव में बैठ गया और उस आदमी ने उस नाव की पतवार सॅभाल ली। वह उस नाव को बड़ी मेहनत से खेने लगा। आखिर वे एक गॉव के पास आ गये जो झील के किनारे से पचास गज पीछे बसा हुआ था।

अचानक मिंक ने देखा कि नाव में से हिरन उतारे जा रहे हैं और घरों में ले जाये जा रहे हैं। यह सब मिंक को बड़ा अजीब सा लग रहा था क्योंकि वहॉ उसको कोई ऐसा आदमी दिखायी नहीं दे रहा था जो उनको उतार रहा हो।

वे हिरन सब अपने आप ही उतर रहे थे और अपने आप ही घरों को जा रहे थे। यह तमाशा देख कर मिंक ने उस आदमी पूछा कि उस गॉव में कितने घर हैं। उस आदमी ने जवाब दिया कि इस गॉव में करीब चालीस घर हैं और हर घर में तीस आदमी रहते हैं।

मिंक ने सोचा कि वह उन गॉव के घरों को जा कर देखेगा कि वे घर कैसे हैं। जब वह उन घरों को देखने गया तो वहॉ उसने पत्थर के चाकू, भाले, तीर कमान आदि रखे हुए देखे।

सब घरों मे आग जल रही थी। जलाने वाले पत्थर[80] लकड़ी के बक्सों में रखे हुए थे। खाना उबालने के लिये पानी रखा हुआ था।

---

[80] Flint stones (called Chakamak patthar in Hindi – they help in starting fire)

नाव में जो हिरन लाये गये थे उनको भूनने का सामान भी रखा था। ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ खाना बन रहा था और ऐसा हर घर में हो रहा था पर फिर भी कहीं कोई आदमी दिखायी नहीं दे रहा था।

यह देख कर चालाक और लालची मिंक को एक चालाकी सूझी कि क्यों न वहाँ से वह जो चाहे वह ले ले और उसको नाव में लाद कर अपने घर ले जाये।

यह सोचते हुए उसने जो कुछ वह लाद सकता था उसने वह सब नाव में लादा और नाव में बैठ कर नाव खे दी। वह किनारे से अभी केवल दो सौ गज दूर ही गया होगा कि उसने अपनी नाव किसी अनदेखी रस्सी से पीछे खींची जाती हुई महसूस की।

बहुत कोशिश करने के बाद भी वह अपनी नाव को वहाँ से सौ गज से ज़्यादा दूर नहीं खे सका। जब भी वह नाव को आगे खेने की कोशिश करता वह अनदेखी रस्सी उसको वापस खींच लेती।

वह सारी दोपहर उस नाव को वहाँ से ले जाने की कोशिश करता रहा पर वह उसको वहाँ से ले कर नहीं जा सका। वह बहुत थक गया था, पसीने से तर बतर था और अब उसको भूख भी लग आयी थी।

आखिर मिंक ने अपनी कोशिश छोड़ दी और अपना मिंक का रूप रख कर तैर कर उस झील के दूसरे किनारे तक आ गया। उसने फिर उन गुप्त लोगों के गाँव में जाने का नाम भी नहीं लिया।

15 लेलू भेड़िया[81]

भेड़िया हायडा लोगों के डाक्टर यानी शमन[82] और उसके परिवार के लिये एक पवित्र जानवर की आत्मा है। ये भेड़िये कबीले के लोग[83] हैं और उत्तर पश्चिमी इन्डियन्स में सबसे पुराने हैं।

वैनकूवर कैनेडा में रहने वाले नूटका इन्डियन्स[84] में इसके बारे में एक कथा कही जाती है।

वे सोचते थे कि अगर वे एक बच्चा भेड़िया पकड़ लें और उसके अन्दर के कुछ हिस्से को अपनी नाव के बाहरी हिस्से पर मल लें तो जब वे व्हेल का शिकार करने जायेंगे तो भेड़िये का वह मला हुआ हिस्सा उनके लिये अच्छी किस्मत ले कर आयेगा और इस टोटके से वे सुरक्षित रहेंगे।

इनके पुरखों ने जो स्कीना नदी[85] के किनारे रहते थे उन्होंने एक बार एक भेड़िये से दोस्ती कर के उसके सिर का सबसे ऊपर का हिस्सा ले लिया था और फिर इस काम से वे सुरक्षित रहे। उसी दिन से वह इन लोगों की रक्षक आत्मा[86] बन गया।

---

[81] Le Loo Wolf.

[82] Translated for the word “Medicinal Man”. Haida people call this medicinal man “Shaman”.

[83] Wolf Clan – these people are not actually wolves but their clan’s name is Wolf Clan. They are native North-West Indians.

[84] Nootka Indians are those Natives who live in Vancouver, British Columbia, Canada.

[85] Skeena River – the Wolf clan knew this river as the “River of Mist”

[86] Guardian Spirit

यह बहुत समय पहले की बात है कि एक बार जब बहुत ऊँची ऊँची बर्फ पड़ी हुई थी कि एक सुबह को एक भेड़िया नूटका लोगों के सरदार के घर आया। उसको इतना दर्द हो रहा था कि वह कुछ खा पी नहीं पा रहा था।

सरदार ने अपने भतीजों से कहा — "ज़रा देखो तो बेटा कि इस भेड़िये के कहीं कुछ लगा हुआ है क्या जो इसको इतना दर्द दे रहा है?"

उन्होंने देखा तो उनको उसके गले में एक हड्डी का टुकड़ा फँसा मिला। उन्होंने उसको निकाल दिया तो उस भेड़िये को आराम आ गया।

फिर और बर्फ पड़ गयी और खाना मिलना और भी कम हो गया। लोग भूखे रहने लगे। अबकी बार वह भेड़िया एक आदमी का रूप ले कर लौटा। उसने उनको अपने पीछे पीछे आने के लिये कहा।
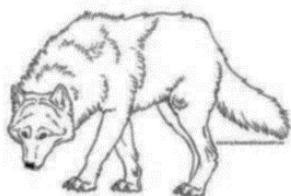
वह उन लोगों को एक ऐसी जगह ले गया जहाँ उसने उन लोगों के इस्तेमाल के लिये बहुत सारे करीबू[87] मारे हुए थे। सो वहाँ पहुँच कर तो उनको बहुत सारा खाना मिल गया। वे सब बहुत खुश हुए।

इस तरह से उस भेड़िये ने उनके एहसान का बदला चुकाया।

---

[87] Caribou is a kind of animal with two horns but with many branches in them. See its picture above.

इन लोगों में भेड़िया जमीन के बारे में बहुत अक्लमन्द जानवर माना जाता है। ये लोग इसको अपने टोटम पोल पर भी खोदते हैं। इसकी शक्ल अपनी घास की टोकरियों में भी बुनते हैं और बहुत सारी हाथ की बनायी चीज़ों पर भी बनाते हैं।

जब जाड़ों में नाच होते हैं तो ये "भेड़िया कबीले" के लोग हमेशा ही वहॉ बुलाये जाते हैं क्योंकि ये लोग खेल के बहुत शौकीन होते हैं और वहॉ अपने खेलों से सबका दिल खुश रखते हैं।

16 वोलेली सैमौन मछली[88]

सैमौन मछली हायडा लोगों के यहाँ बहुतायत या समृद्धि का चिन्ह है क्योंकि यही इनका मुख्य खाना है और जिसके पास ज़्यादा खाना होगा वह समृद्ध तो होगा ही। इन्डियन्स में इसके जन्म के बारे में और इसके वहाँ से जाने को रोकने के बारे में कई विश्वास हैं।

बहुत पुरानी थोम्पसन जनजातियाँ जो फ्रेज़र नदी पर हैल गेट पर[89] इनका शिकार करती थीं इनको कभी भी इनकी लम्बाई में नहीं काटती थीं क्योंकि उनका विश्वास था कि इससे ज़िन्दा मछली के पानी को छोड़ जाने का डर रहता था।

इसके अलावा वे उसको काटने के बाद उसका सिर और पूँछ पानी में वापस फेंक देती थीं ताकि उनसे और बहुत सारी मछलियाँ पैदा हो सकें।

क्वाकीयूतु लोगों[90] की एक दंत कथा टूटूक गरज चिड़े[91] की सैमौन मछली के लिये भूख के बारे में बताती है। इन सैमौन

---

[88] Wolalee, the Salmon.

[89] Thompson tribes who fished at Hell Gate at Fraser River.

[90] A myth from Kwakiutl (pronounced as Kwaakeeyootu) Tribe tells about the Tootook Thunder Bird's hunger for Salmon fish.

[91] Tootooch Thunder Bird

मछलियों को पाने के लालच में एक बार उसने सैमौन नदी में रहने वाली एक स्त्री के साथ शादी कर ली।

पर उस स्त्री ने अपनी सैमौन मछलियाँ छिपा कर रख लीं और टूटूक से कह दिया कि वे सब खत्म हो गयीं। पर वह अपने बच्चे को सैमौन मछली खिलाती रही। टूटूक ने अपने बच्चे के दाँतों में सैमौन मछली के टुकड़े लगे देखे।

उसके बाद तो सैमौन मछलियों को पकड़ने के लिये दौड़ शुरू हो गयी। गरज चिड़े ने जाड़ों के लिये खाना इकट्ठा करने के लिये अपनी पत्नी को सैमौन पकड़ने में सहायता की। पर वह खुद भी सैमौन मछलियाँ इतनी तेज़ी से खाता रहा कि वह सैमौन स्त्री तो अपने बच्चे के खाने के लिये भी चिन्ता करने लगी।

उसने सोचा यह तो सारी सैमौन खा जायेगा सो उसने बची हुई सैमौन मछलियाँ बाँधीं और सैमौन, अपने बच्चे और उसका सैमौन पकड़ने वाला जाल और भाले को ले कर वहाँ से चली गयी।

गरज चिड़े को उसके बाद फिर अपनी पत्नी नहीं मिली तो इस बात से वह बहुत दुखी हुआ।

अब उसने कुछ और सोचा। वह नदी के सहारे सहारे चल कर एक शहर में आया। वहाँ आ कर उसने देखा कि कि सैमौन मछली का घर नदी में तैर रहा था और उसमें तो बहुत सारी ज़िन्दा सैमौन मछलियाँ थीं।

उसने उस सैमौन के घर को किनारे पर खींचने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार। वह उससे खिंच ही नहीं सका।

उसने सहायता के लिये इधर उधर देखा तो उसको एक बूढ़ा आदमी उधर से गुजरता नजर आ गया। उसके हाथ में औक्टोपुस[92] की टॉग की बनी हुई एक जादुई छड़ी थी।

गरज चिड़े ने उससे उसकी वह जादुई छड़ी कुछ सैमौन मछलियों के बदले में उधार मॉगी। उस बूढ़े आदमी ने वह छड़ी उसको उधार दे दी।

छड़ी ले कर टूटूक ने उसको सैमौन के घर की तरफ किया तो वह छड़ी उस घर की तरफ सीधी हो गयी और उस औक्टोपुस की टॉगों की छड़ी ने सैमौन घर को ऐसे पकड़ लिया जैसे किसी को मौत पकड़ लेती है।

अब गरज चिड़े ने उसको खींचना शुरू किया तो उसने कितनी भी ज़ोर से खींचा पर उसको लगा कि उसके अन्दर उतनी ताकत नहीं थी कि वह उसको खींच सकता।

तब उसने वहॉ पड़ी चट्टानों से सहायता मॉगी पर वे चट्टानें भी नहीं उठीं। इस पर टूटूक ने उनको शाप दिया कि "तुम ज़िन्दगी भर एक ही जगह पड़ी रहना।"

---

[92] Octopus – a sea animal with eight legs. See its picture above.

पास में पेड़ लगे थे। उसने बड़ी नम्रता से उनसे भी सहायता मॉगी तो उन्होंने अपनी टहनियों से उस छड़ी को पकड़ लिया और इधर उधर हिलते हुए उस सैमौन घर को खींचने की कोशिश की और वे उसको खींच कर किनारे पर ले आये।

जैसे ही सैमौन घर किनारे पर आ कर लगा टूटूक उस घर के अन्दर कूद गया। वहॉ तो बहुत सारी सैमौन थीं। उसने खूब पेट भर कर सैमौन खायीं और बाकी बची हुई मछलियों से कहा कि वे दूसरी नदियों में भी जायें और वहॉ जा कर और मछलियॉ पैदा करें।

17 चैटवुट भालू[93]

अलास्का और ब्रिटिश कोलम्बिया मे रहने वाले इन्डियन्स के पास इस बात को बताने वाली कई कथाऐं हैं कि उन्होंने अपने परिवार के खम्भों के लिये दूसरे टोटम कैसे लिये।

इनमें से ब्रिटिश कोलम्बिया का एक टोटम पोल जो सियाटिल में यैसलर वे[94] में खड़ा है उसकी एक कथा बहुत मजेदार है।

यह एक ऐसे भालू की कथा है जो जब भी वहाँ आता है तो इन इन्डियन्स की ज़िन्दगियों पर काफी गहरा असर छोड़ जाता है।

भालू कबीले[95] के लोग जब भी पौटलैच[96] देते हैं तो वह हमेशा ही लोगों को बहुत पसन्द आता है और उसमें वे लोग जो कुछ भी करते हैं उसको लोग बड़े शौक से देखते हैं।

यह बहुत पहले की बात है कि एक बार कौए कबीले[97] की एक अकेली स्त्री रैवन कबीले के साथ हो गयी। एक दिन वह उस कबीले के दूसरे सदस्यों के साथ एक ऐसी जगह रसभरी इकट्ठा करने गयी जो आग से जली हुई थी।

---

[93] Chet Woot, The Bear.

[94] A British Columbia Totem Pole standing in the Yesler Way at Seattle, Washington State of the USA. Washington State is on the far western most state of the USA.

[95] Bear Clan

[96] Potlach is a festival of Indians living on the Northern coast of Pacific Ocean. On this day one person invites all his friends and presents gifts to all of them to show them that he has lots of wealth, but later other people also do the same and return his gifts of more value than his. It includes food also.

[97] Crow Clan

जब वह एक पेड़ के गिरे हुए तने के ऊपर से रेंग कर जा रही थी तो उसका पैर एक ऐसी फिसलने वाली जगह पर पड़ गया जहाँ पर भालू था। यह देख कर उसके साथी लोगों ने उसके साथ कुछ मजाक किया और हँस पड़े। वह खुद भी हँस पड़ी। पर फिर वह आगे चल दी।

आगे चलते समय वह अपने साथियों से कुछ पीछे रह गयी तो एक नौजवान ने उसको सहारा दिया। वह नौजवान आदमी की शक्ल में एक भालू था। वह उससे प्यार करने लगा और उसने उस स्त्री को अपने घर आने को कहा और कहा कि अगर वह उसके साथ उसके घर चले तो वे लोग शादी कर लेंगे।

वह स्त्री राजी हो गयी और नदी के ऊपर की तरफ और पहाड़ियों के ऊपर चलने लगी। वे लोग चार चाँद तक चलते रहे। आखिर वे उस भालू के घर आ गये जहाँ उस भालू के माता पिता और भाई बहिन रहते थे।

वहाँ ले जा कर उस स्त्री को एक नौकरानी की हैसियत से घर में रख लिया गया और उसको घर के नीचे काम करने के लिये दे दिये गये ताकि उस भालू के माता पिता इन कामों को करवा कर उस स्त्री का पूरा पूरा फायदा उठा सकें।

उसको पानी लाना पड़ता था आग को जलता रखने के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी कर के रखनी पड़ती थीं। जो लकड़ियाँ वह इकट्ठा कर के लाती थी वे सूखी होती थी पर भालू की बहिनें उनके ऊपर

पानी डाल देती थीं जिसकी वजह से वे जलती नहीं थीं और आग जली नहीं रह पाती थी।

वे और भी ऐसे कई काम करती थीं जिससे कि वह उनके भाई से शादी न करे। अब घर में अगर आग न जलती रहे यह घर के लिये बड़ी अपमानजनक बात होती थी और यह यह साबित करता था कि घर की स्त्री घर की बहू बनने के लायक नहीं है।

भालू की बहिनों का प्लान काम कर गया और वह लड़की परेशान हो कर भालू का घर छोड़ कर चली गयी। वह अकेली ही पहाड़ियों के ऊपर नदियों के सहारे चलते चलते चार चाँद बाद अपने घर पहुँच गयी।

वहाँ जा कर उसने अपने साथियों को वह सब बताया जो कुछ उसके साथ हुआ था।

बाद के सालों में उसने यह सब अपने बच्चों को भी बताया। फिर उसने अपने हर बच्चे के लिये एक एक चिलकट कम्बल[98] बनाया जिस पर उसके इस साहस की कहानी लिखी हुई थी ताकि वे इस घटना को याद रख सकें।

इसके बाद उस परिवार ने भालू का निशान अपने टोटम पोल पर सबसे ऊपर खुदवा लिया।

[98] Chilkat Blanket. See one of tis design in the picture above.

उस दिन से इस कबीले की मॉओं के लिये यह एक परम्परा हो गयी है कि वे अपने हर बच्चे के लिये एक चिलकट कम्बल जरूर बनाती हैं।

18 औटर की आत्मा मैनमूक्स[99]

हायडा जनजाति में करीब करीब हर स्त्री के पास औटर की आत्मा होनी चाहिये। कुछ स्त्रियों के पास औटर की ये आत्माऐं एक से ज़्यादा भी हो सकती है और कुछ के पास ये कम भी हो सकती है पर साधारणतया ये होती सबके पास है।

यह आत्माऐं जिसके पास जितनी ज़्यादा होंगी उसकी शान उतनी ही ज़्यादा होगी। अगर किसी स्त्री के पास यह आत्मा एक भी नहीं है तो यह उसके लिये बहुत बुरी बात है।

लोग उसकी बहुत कम इज़्ज़त करेंगे इसलिये कोई स्त्री इस बात को स्वीकार नहीं करेगी कि उसके पास इसकी आत्मा नहीं है। इसका पास में होना एक बहुत अच्छा शकुन है हालाँकि कभी कभी यह मौत की वजह भी बन जाती है।

औटर की आत्मा स्त्री के अन्दर उसके पेट के ठीक ऊपर रहती है और यह वहाँ एक खास आवाज करती है। कभी कभी यह आवाज मुँह से भी करती है पर इसको कभी देखा नहीं गया।

जिस स्त्री के पास यह आत्मा होती है उसको यह पता होता है कि उसके पास वह आत्मा है। आदमी के लिये इस आत्मा का रखना ठीक नहीं है। लेकिन अगर उसके पास यह आत्मा है तो उसके लिये

[99] Men-a-Mooks, the Spirit of Otter.

इसको हटाना भी बहुत मुश्किल है क्योंकि इसके लिये उसको किसी स्त्री डाक्टर की सहायता लेनी पड़ती है।

उस स्त्री डाक्टर को भी यह आत्मा उस आदमी के होठों को चूस कर उससे दूर करनी पड़ती है।

अगर किसी स्त्री के पास यह आत्मा है और वह यह बात किसी और को बता देती है तो वह एक बेवफा स्त्री मानी जाती है। इससे वह आत्मा उस स्त्री को कोई शारीरिक नुकसान भी पहुँचा सकती है।

इसलिये इन लोगों के यहाँ जमीन पर रहने वाले औटर को जिससे यह आत्मा आती है हमेशा ही बड़ी इज़्ज़त से देखा जाता है और उसको पवित्र समझा जाता है। ये लोग इसका माँस कभी नहीं खाते बल्कि इसको मरे हुओं को देने के लिये जलाया जाता है।

19 पाई–चिकमिन – तॉबे की भेंट[100]

तॉबे की यह भेंट एक तॉबे की प्लेट होती है जो करीब ढाई फीट लम्बी होती है और पन्द्रह से बीस पौंड तक भारी होती है। ये प्लेटें वहीं पर मिलने वाले तॉबे से बनायी जाती हैं। इनका तॉबा अलास्का और नास नदी[101] से खरीदा जाता है।

इन प्लेटों पर उस कबीले के निशानों को सुन्दर तरीके से खोदा जाता है और फिर उस पर उनकी तस्वीरें बनायी जाती हैं।

अधिकतर तॉबे की इन प्लेटों के बीच में एक उठा हुआ "टी" का निशान बना रहता है। उसका नीचे वाला हिस्सा उसका पीछे का हिस्सा कहलाता है और उसका ऊपर वाला हिस्सा जिस पर सजावट हुई रहती है उसका चेहरा कहलाता है।

इस तॉबे के टुकड़े की असली कीमत तो कम होती है पर वे किसी बालों वाले जानवर या हिरन की खाल से बनाये गये बहुत सारे कम्बलों के बराबर के मूल्य वाले होते हैं। बाद में जब सफेद लोगों[102] ने उनसे व्यापार शुरू किया तो इन्डियन्स ने उनको बेचने के लिये सूती और ऊनी कम्बलों का इस्तेमाल किया।

---

[100] Pi-Chikmin, The Gift Copper.

[101] Alaska State of the USA and Nass River of British Columbia Province of Canada.

[102] Translated for the words "White Men" – means the Europeans who came here later.

तॉबे की कुछ प्लेटें तो पॉच हजार से ले कर साढ़े सात हजार कम्बल तक के मूल्य वाली होती थीं। बहुत मूल्यवान प्लेटों पर समुद्री भालू[103], बीवर और चॉद खोदे जाते थे।

कभी कभी इन प्लेटों को दुश्मन कबीले को भी बेचा जाता था। जब वे उनको दुश्मन कबीले को बेचते थे और अगर जिस दाम पर वे बेचते थे वह दाम खरीदार को मंजूर नहीं होता था तो इससे साफ जाहिर होता था कि उस कबीले का सरदार और उस कबीले के लोगों के पास काफी कम्बल नहीं थे जिनसे वे उस प्लेट को खरीद सकें और इस तरह से वे गरीब समझे जाते थे।

पर अगर उस दुश्मन कबीले ने उस प्लेट को खरीद लिया तो वह प्लेट जिस कबीले की होती थी उसको फिर से वापस बेचा जा सकता था। कहने की बात नहीं कि वे प्लेटें उन लोगों को फिर खरीदे हुए दाम से ऊॅचे दामों पर बेची जाती थीं।

बेचने की यह प्रक्रिया रस्मों के साथ होती थी। इनको बेचने में इन लोगों को कुछ रस्में पूरी करनी पड़ती थीं जो बहुत ज़्यादा होती थीं और अक्सर जाड़ों के मौसम में होती थीं।

[103] Sea Bear. See its picture above.

अमीर सरदार जो पौटलैच[104] देते थे कभी कभी अपनी ये प्लेटें तोड़ देते थे और उनके हिस्से या तो अपने बहुत ही खास मेहमानों को भेंट में दे देते थे या फिर उनको समुद्र में फेंक देते थे।

ऐसा वे यह दिखाने के लिये करते थे कि उन प्लेटों की कीमत उनके पास के पैसे से बहुत कम है। इससे उनके समुदाय के लोगों में उनकी इज़्ज़त और बढ़ जाती थी।

ये प्लेटें जिस सरदार के पास होती थीं वह एक बहुत बड़ा सरदार माना जाता था और लोग ऐसा सोचते थे कि वे प्लेटें उनके लिये बहुत अच्छी किस्मत ले कर आयेंगी और बुरी आत्माओं को उनसे दूर भगायेंगी।

[104] Potlach is a festival of Indians living on the Northern coast of Pacific Ocean. On this day one person invites all his friends and presents gifts to all of them to show them that he has lots of wealth, but later other people also do the same and return his gifts of more value than his. It includes food also.

20 जायदाद स्त्री या परदादी[105]

पुराने इन्डियन्स में जायदाद एक बहुत ही मुख्य और मूल्यवान चीज़ होती थी। वे जायदाद पर हमेशा ही बहुत ज़ोर देते थे। उनकी जायदाद का मतलब होता था – फ़र, कम्बल, नावें, नौकर चाकर, टोटम के सबसे ऊँचे हिस्से पर लगाने वाला निशान और उनकी पत्नियाँ।

इस जायदाद को बढ़ाने के लिये उस आदमी का सबसे पहला काम यह होता था कि वह एक ऐसी लड़की से शादी करे जो उसकी जायदाद बढ़ाये।

वह हमेशा ही यह सोचता था कि वह किसी "जायदाद वाली स्त्री" या "परदादी" को पकड़ ले और या फिर उसके बच्चे के रोने की आवाज सुने। क्योंकि उसके बच्चे के रोने की आवाज सुनना भी उसके लिये धन दौलत ला सकता था।

इस जायदाद वाली स्त्री की पहचान थी कि उसका सिर तिकोना होता था। जब वह लड़की बच्ची ही होती थी तो उसके सिर को बाँध कर यह शक्ल दी जाती थी।

यह रिवाज कई जनजातियों में अपनाया गया और इस तरह से वे अपने आपको दूसरी जनजातियों से अलग कर लेते थे। यह

[105] Property Woman or Great Grandmother.

जायदाद वाली बच्ची "पीठ पर ले जाने वाली"[106] कहलायी जाती थी।

इस जायदाद वाली स्त्री के बाल कत्थई होते थे जिनको वह कपड़ों की तरह पहने रहती थी। वह जवान होती थी और बहुत ही मीठा बोलती थी।

अगर किसी आदमी को ऐसी किसी स्त्री के बारे पता चल जाता था तो वह उसको अमीर कर देती थी। अगर उस स्त्री के कम्बल का एक टुकड़ा भी किसी को मिल जाता था तो वह और भी ज़्यादा अमीर हो जाता था।

डाक्टर लोग उससे बात करने के लिये अक्सर जादुई जड़ी बूटी खाते थे। इन्डियन्स जब भी समुद्र के रेतीले किनारों पर सीपियाँ[107] ढूँढने जाते तो वे हमेशा उन सीपियों के पड़े रहने के ढंग को ढूँढते क्योंकि वह जायदाद वाली स्त्री उनको वहाँ चार वर्गों की शक्ल में डालती थी।

इसके अलावा वे उन जगहों की भी तलाश में रहते जहाँ उसने अपना कोई गहना या अपनी और कोई चीज़ रेत में छिपायी होती।
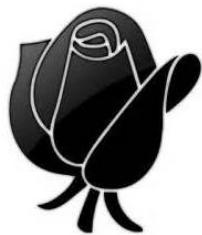
कई सरदारों का यह दावा था कि कि उन्होंने उस जायदाद वाली स्त्री को पकड़ लिया है। डाक्टर लोग अपनी बड़ाई के लिये

---

[106] Translated for the words "Carried on the back".

[107] Translated for the word "Clams". See their picture above.

यह दावा करते कि वह स्त्री उनके लिये खाने की भेंट ले कर आयी थी।

यह जायदाद वाली स्त्री सामान्यतया टोटम पोल पर नहीं खोदी जाती हालाँकि यह रैवन लोगों की है।

21 स्लैगामे नर तितली[108]

जब गरज चिड़ा[109] इस दुनियाँ को बनाने के बाद इसे पूरा कर रहा था तो उसको अपना काम करने के लिये इधर उधर बहुत सारी जगह जाना पड़ता था।

उस समय अपनी एक यात्रा में वह एक नर तितली से मिला। वह नर तितली भी इधर से उधर घूम रहा था सो दोनों एक दूसरे के अच्छे दोस्त हो गये। क्योंकि वे दोनों ही स्वर्ग के रहने वाले थे सो वे दोनों ही आदमी की शक्ल में थे।

घूमते घूमते वे क्वीन चारलोट टापू[110] के सरदार के घर जो सिवाश नदी[111] के किनारे पर था आ पहुँचे। सरदार ने उन थके हारे यात्रियों को अपने घर खाना खाने के लिये बुलाया।

गरज चिड़ा अपनी शान ऊँची रखने के लिये दुनियाँ के साधारण लोगों से बात करना नहीं चाहता था इसलिये नर तितली ने ही उसकी तरफ से उससे सारी बातें कीं।

---

[108] Slagame, the Butterfly.

[109] Thunder Bird

[110] Queen Charlotte Island – Present Haida Gwaii, literally "Islands of the Haida people"), formerly known as the Queen Charlotte Islands are on the North Coast of British Columbi, Canada. Approximately half of its population is of the Haida people. The islands are separated from the British Columbia mainland to the east by Hecate Strait. Vancouver Island lies to its South, across Queen Charlotte Sound, while the US state of Alaska is to its North.

[111] Siwash River

सरदार ने गरज चिड़े से पूछा कि क्या वह सैमौन मछली ऊलाचन[112] के तेल के साथ लेना पसन्द करेगा तो नर तितली ने जवाब दिया कि वह सैमौन नहीं खाता और दोनों के हिस्से के सैमौन उस नर तितली ने खुद ही खा लिये।

सरदार ने गरज चिड़े से फिर पूछा कि क्या वह नर्म सील मछली खाना पसन्द करेगा जो उसकी बहुत पसन्द का खाना था। इस पर तितली ने फिर वही कहा जो उसने सैमौन मछली के लिये कहा था कि वह सील मछली नहीं खाता।

इसके बाद गरज चिड़े को बैरीज़ का केक दिया गया तो वह भी नर तितली ने सरदार से ले कर यह कहते हुए सारा का सारा अपने पास रख लिया कि ऐसी सब चीज़ें गरज चिड़े को बीमार कर देती हैं।

यह सब देख कर सरदार बहुत दुखी हुआ। उसको समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह गरज चिड़े को खुश कैसे करे। उसके पास उसको देने के लिये अब एक पुरानी और बदबूदार सैमौन के अलावा और कुछ था भी नहीं तो फिर उसने वही ला कर अपने उस मुख्य मेहमान को दे दी।

नर तितली बोला — "हॉ यह मछली गरज चिड़े को बहुत अच्छी लगती है।" गरज चिड़े ने उसको खाने की लाख कोशिश की पर वह उसको खा नहीं सका।

---

[112] Oolachan is a small ocean fish found on the Western coast of Northern America.

नर तितली के इस व्यवहार को देख कर गरज चिड़ा इतना गुस्सा हुआ कि वह उस नर तितली को साथ ले कर वहाँ से चल दिया। उधर नर तितली ने वहाँ इतना खा लिया था कि उससे तो अब चला भी नहीं जा रहा था।

किसी तरह चलते चलते वे लोग एक और नदी के किनारे आये जिसके ऊपर सीडर की लकड़ी का बना एक लट्ठा पड़ा हुआ था।

पहले गरज चिड़े ने उस नदी को उस लट्ठे के ऊपर से जा कर पार किया पर जब नर तितली की बारी आयी तो नर तितली उसके ऊपर से जाने से डर रहा था क्योंकि वह बहुत बहुत बहुत ही थका हुआ और सोया हुआ सा महसूस कर रहा था।

गरज चिड़े ने नर तितली से कहा कि वह उसके लिये उस लट्ठे को कस कर पकड़ लेगा ताकि वह ज़्यादा हिले नहीं और आसानी से उसके ऊपर से नदी पार कर ले पर जब नर तितली उस पर चढ़ कर नदी पार करने लगा तो गरज चिड़े ने उस लट्ठे को उसी के ऊपर लुढ़का दिया।

इससे उस तितली का सारा खाना उसके पेट में से निकल कर बाहर आ गया। गरज चिड़े ने वह खाना खुद खा कर तितली का पेट सिल दिया। इसी लिये तितली की हमेशा ही कोई मोटाई नहीं होती।

वैनकूवर, ब्रिटिश कोलम्बिया, कैनेडा में हायडा लोग नर तितली अपने टोटम पोल पर भी खुदवाते हैं, इसकी शक्लें अपनी टोकरियों में भी बुनते हैं और वहाँ वे और भी जो चीज़ें हाथ से बनाते हैं उन पर भी उनको बनाते हैं।

22 शमन या डाक्टर[113]

हायडा जनजाति में डाक्टर यानी शमन एक ऐसा आदमी है जो वहाँ बहुत अक्लमन्द समझा जाता है। वह उनको उनकी बीमारी और तन्दुरुस्ती दोनों के दिनों में सहायता करता है। बुरी आत्माओं को रोकने के लिये भी हर समय उसी से सलाह ली जाती है।

हालाँकि यह आध्यात्मिक ताकत लोगों में अपने पुरखों से और अपने आप ही आती है पर इसको हासिल भी किया जा सकता है।

इसको हासिल करने के लिये जंगलों में घूमना पड़ता है। उस आदमी को साफ सफाई का भी ध्यान रखना पड़ता है ताकि वह अकेले रह सके, अक्सर उपवास रख सके, केवल फल और जड़ें खा कर रह सके ताकि वह करीब करीब भूखा रह सके।

क्योंकि ये सब चीज़ें पागलपन की सी हालत पैदा करेंगी, सपने दिखायेंगी और इनसे कुछ और भी दिखायी देगा तो इस सबकी उस आदमी को झेलने की हिम्मत होनी चाहिये।

जब वह इस हालत में आ जायेगा तो अपने पास में आयी हुई आत्माओं में से किसी एक आत्मा को चुन लेगा। यह आत्मा किसी की भी हो सकती है – किसी खूँख्वार जानवर की या फिर किसी चिड़िया की, या फिर किसी पत्थर की या फिर किसी पर्वत की।

---

[113] Shaman, the Medicinal Man.

उसको बुला कर वह उससे उसको बीमार को ठीक करने के लिये, या फिर शिकार मारने में सफलता देने के लिये, या फिर आगे होने वाली घटनाओं को बताने के लिये, या फिर दूर जगह में क्या हो रहा है आदि बताने के लिये जादुई ताकत देने के लिये कहेगा।

इन ताकतों के मिल जाने के बाद अगर वह कमजोरी से या मेहनत से मर नहीं गया तो वह अपने गॉव लौट कर वापस आयेगा और जंगल में जो कुछ भी उसके साथ हुआ वह सब गॉव वालों को बतायेगा। उसका परिवार उसकी देखभाल कर के उसको तन्दुरुस्त बनायेगा।

उसके बाद सरदार लोग उसके पास सलाह के लिये आना शुरू कर देंगे। अगर वह कुछ सही बतायेगा तो सरदार लोगों को बुला कर उसके साथ होने वाली घटनाओं को उनके सामने फिर से दोहरायेगा। उस समय इस बात पर ज़्यादा ज़ोर दिया जायेगा कि टोटम ने उसको यह ताकत दे रखी हैं।

उसके बाद एक दावत होगी। डाक्टर या शमन कुछ शब्द बड़बड़ायेगा जिनसे ऐसा लगेगा कि वह वे शब्द बोल रहा है जो आत्माओं की दुनिया में बोले जाते होंगे।

उस समय उसने नाक में एक खास गहना पहन रखा होगा। वह उसी आत्मा की तरह से कपड़े भी पहने होगा जैसी कि वह आत्मा पहनती होगी।

वह एक अंडाकार झुनझुने में लगी हड्डी की छेद वाली नली के छेद में से फूँक मार कर उसको बजा रहा होगा और यह झुनझुना उसके गले से एक रस्सी से लटक रहा होगा। वह अपनी नाक में हड्डी कोई गहना भी पहने हुए होगा।

वह वहॉ आये हुए मेहमानों के दुश्मनों की आत्माओं को नष्ट कर देगा। इससे वहॉ पर बहुत हलचल मच जायेगी। फिर आत्माओं को शान्त रखने के लिये खाने को आग में डाला जायेगा।
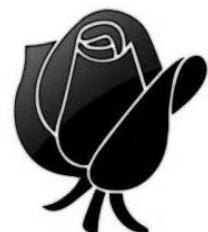
और उसके बाद वहॉ उस ज़िन्दा शमन को भी काफी खाना दिया जायेगा क्योंकि उसी ने तो आत्माओं को काबू में रखा है और उसी की तो शैतान के साथ भी अच्छी बनती है तो वही उन सबकी सारी इच्छाऐं भी पूरी करेगा।

अगर यह सब नहीं किया गया तो अक्सर शमन को मार दिया जाता है। जब शमन मर जाता है तो उसके शरीर को एक नक्काशी किये गये बक्से में रख दिया जाता है।

वह बक्सा किसी पेड़ के ऊपर शाखों पर या फिर किसी पेड़ के कटे हुए तने के ऊपर रख दिया जाता है। ऐसा विश्वास है कि वहॉ से उसकी आत्मा फिर आसमान में किसी खास जगह चली जाती है।

बहुत सारे शमन अपने लोगों पर काफी असर रखते हैं और काफी अमीर होते हैं।

23 चकचक गरुड़[114]

बहुत पुराने समय की बात है कि गरुड़ कबीले के लोग सब जीवों के पुनर्जन्म[115] में विश्वास रखते थे। क्योंकि जब उन मरे हुए लोगों के लिये खाना आग में डाला जाता था तो वह सारा खाना गायब हो जाता था और वह उनकी आत्माओं की दुनियाँ तक की यात्रा के लिये पूरे समय के लिये होता था।

वह दूसरी दुनियाँ बहुत अच्छी समझी जाती थी।

जब सरदार गरुड़ की शक्ल गरुड़ कबीले के टोटम पोल पर खोदी जाती है तो वह अक्सर इस कहानी की तरफ इशारा करती है जो हम नीचे दे रहे हैं। वह कहानी कुछ इस तरह से है।

एक बार एक बड़ा निडर और बहादुर गरुड़ आदमी लड़ाई में मारा गया। मरने के बाद उसकी आत्मा गरुड़ों की दुनियाँ में गयी। यह गरुड़ों की दुनियाँ क्वीन चारलोट टापू[116] के उत्तर पश्चिम में आसमान में बहुत दूर एक गाँव है।

---

[114] Chak-Chak, the Eagle.

[115] Translated for the word "Reincarnation".

[116] Queen Charlotte Island – Present Haida Gwaii, literally "Islands of the Haida people"), formerly known as the Queen Charlotte Islands are on the North Coast of British Columbi, Canada. Approximately half of its population is of the Haida people. The islands are separated from the British Columbia mainland to the east by Hecate Strait. Vancouver Island lies to its South, across Queen Charlotte Sound, while the US state of Alaska is to its North.

वहाँ पहुँचने पर वहाँ के सरदार गरुड़ ने उसका स्वागत किया। पर जैसे जैसे समय बीतता गया वहाँ सबको पता चल गया कि वह गरुड़ आदमी तो व्हेल मछली का एक बहुत ही निडर और बहादुर शिकारी है। वे सब शिकारी जो सब समुद्रों पर राज करते थे गरुड़ समूह के दुश्मन थे।

व्हेल सरदार एक ऐसा व्हेल था जिसको कभी किसी ने जीता नहीं था। वह पानी को बादलों की ऊँचाई तक फेंक सकता था।

और जब वह ऐसा करता था तो वह उन लोगों को यह बताता था कि अब उनकी मौत आने वाली है जिन्होंने सरदार व्हेल से लड़ाइयाँ लड़ी थीं और सरदार व्हेल की सख्त खाल पर अपने तेज़ पंजों के निशान छोड़े थे।

सो उस गरुड़ नौजवान ने सोचा कि वह अपनी ताकत और चालाकी की घटनाऐं अपने गरुड़ साथियों को बतायेगा जो उसको कायर समझते थे।

उस बहादुर गरुड़ नौजवान ने यह पक्का इरादा कर लिया था कि वह लोगों को यह बता देगा कि सरदार व्हेल की ताकत केवल एक कहानी थी और वह इस सरदार व्हेल को अकेले ही जीत कर दिखायेगा।

यह सोच कर एक दिन उसने समुद्र के ऊपर झाँक कर एक बड़े व्हेल को ढूँढने की कोशिश की। जल्दी ही उसको यह बड़ी सरदार व्हेल दिखायी दे गया।

अब वह आसमान में ऊँचे उड़ते हुए उस पर हमला करने के मौके का इन्तजार करने लगा। और जब उसको वह मौका मिल गया तो उसने अपने पंख फड़ाफड़ाते हुए नीचे कूद मारी और अपने तेज़ पंजे उस सरदार व्हेल के शरीर में घुसा दिये।

पर वह किसी तरह भी अपने दुश्मन को ऊपर नहीं उठा सका सो उसको अपने साथियों को बुलाना पड़ा।

अपना भाईचारा निभाने के लिये वे सभी गरुड़ हमेशा अपने भाई की सहायता करते थे सो वे सब गरुड़ उस गरुड़ नौजवान की सहायता के लिये तुरन्त दौड़े आये।

पर वे सब मिल कर भी उस सरदार व्हेल को ऊपर नहीं उठा सके। अक्लमन्द बड़े गरुड़ ने उसकी आवाज सुन कर अपने पंजे तेज़ किये और वहाँ आया जहाँ से उसके साथी आवाज लगा रहे थे।

यह भी हो सकता था कि वे सब उस लड़ाई में हार जाते या मारे जाते पर सरदार गरुड़ के आने से सब कुछ बदल गया। उसने अपनी ताकत दिखायी और उस व्हेल को उठा कर अपने घर ले गया। इस तरह सबसे बड़े और सबसे अक्लमन्द गरुड़ ने अपनी जाति को नष्ट होने से बचा लिया।

वह बूढ़ा गरुड़ उस गरुड़ नौजवान के इस काम से इतना खुश हुआ कि उसने इस जीत की खुशी में अपनी बेटी की शादी उस नौजवान गरुड़ से कर दी।

24 क्वैल क्वैल उल्लू[117]

टोटम की चोटी पर लगाने वाला उल्लू का यह निशान सिमशियान्ग और नूटका जनजातियों[118] द्वारा इस्तेमाल किया जाता है। वे इसको अपने कबीले की दूसरी चीज़ें सजाने और अपने कबीले के इतिहास की कई घटनाऐं लिखने के काम में भी लाते हैं।

एक बार एक बड़े सरदार का एक बेटा था जो हमेशा रोता ही रहता था। उसके पिता ने उसे यह कहते हुए घर के बाहर निकाल दिया "जा सफेद उल्लू तुझे पकड़ कर ले जायेगा।"

यह सुन कर वह लड़का अपनी बहिन के साथ बाहर चला गया। इतने में एक सफेद उल्लू आया और उसकी बहिन को उठा कर एक पहाड़ पर ले गया जहाँ हैमलौक[119] के पेड़ लगे हुए थे।

वहाँ जा कर वह लड़की रोने लगी। लोगों ने उसके रोने की आवाज सुनी तो उन्होंने उसको पेड़ पर चढ़ कर उतारने की बहुत कोशिश की पर वे तो पेड़ पर ही नहीं चढ़ सके।

कुछ देर बाद वह चुप हो गयी और उसने उस उल्लू से शादी कर ली। कुछ दिनों बाद उनके एक बेटा हो गया। जब वह बेटा

---

[117] Kwel-Kwel, the Owl.

[118] Tsimshian (pronounced as Simshiang) and Nootka tribes

[119] Hemlock is a highly poisonous plant found mostly in Northern Europe. See its picture above.

बड़ा हो गया तो उसकी मॉ की यह इच्छा हुई कि वह उसको अपने माता पिता के घर भेजे।

उसकी मॉ ने अपने धेवते[120] के स्वागत के लिये उल्लू के निशान वाली एक पगड़ी[121] बनवायी और उसके पिता ने उसके लिये एक गीत लिखा। वह सफेद उल्लू तब अपने बेटे को और उसकी मॉ दोनों को उसके घर ले कर चला।

जब लड़की की मॉ ने अपने धेवते को देखा तो वह उसको देख कर बहुत डर गयी पर उसकी बेटी ने ढॉढस दिलाया कि वह तो उसका धेवता था इसलिये उसे उससे डरने की कोई जरूरत नहीं थी। उसके बाद वह सफेद उल्लू और उस लड़के की मॉ दोनों अपने बेटे को वहॉ छोड़ कर वहॉ से उड़ गये।

समय आने पर उस लड़के के नाना नानी ने उसके आने की खुशी में एक दावत दी और घर में आये हुए मेहमानों को भेंटें दी गयीं। इस रस्म ने उस लड़के को और उस लड़के के बच्चों को उनके टोटम की चोटी पर उल्लू खोदने का अधिकार दिया।

इस तरह उनके कबीले में उल्लू को अब बड़ी इज़्ज़त की नजर से देखा जाता है। नूटका लोगों का विश्वास है कि सब डाक्टरों की आत्माऐं उल्लू की आत्मा में बदल जाती हैं।

---

120 Daughter's son is called "Dhevataa" or "Navasaa"

121 Translated for the word "Head dress"

जब भी उल्लू "हू हू" बोलते हैं तो इन्डियन्स उनकी इस आवाज का कोई जवाब नहीं देते क्योंकि अगर वे जवाब देंगे कि "कौन कौन" तो वे कहेंगे "तुम तुम" और इसका मतलब होगा कि इन्डियन्स फिर जल्दी ही मर जायेंगे।

25 स्कैम हैलीबट मछली[122]

यह बहुत पुरानी बात है जब रैवन[123] दुनियाँ बना रहा था। उसका यह काम कुछ ऐसा था कि यह काम करते करते वह थक जाता था और उसको भूख लग आती थी।

सो एक बार अपना काम करते करते उसको भूख लग आयी और वह मछली पकड़ने के लिये रुका। उसने एक खास मछली पकड़ी जिसको कि वह ज़िन्दा रख सकता था इसलिये उसने उस मछली को मारा नहीं था।

अब मछली को उसके पंख फड़फड़ाने और शायद नाव से बाहर जाने से कैसे रोका जाये यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। वह बाहर जंगल की तरफ गया और एक पेड़ का गोंद ले आया। उसने उस गोंद से एक स्त्री की शक्ल बनायी और उसको स्कैम का नाम दे दिया।

उसने उसको जल्दी से बड़ी होने और सुन्दर होने का भी हुक्म दिया तो वह तुरन्त ही बड़ी और सुन्दर भी हो गयी। उसने उसको

---

[122] Skam-m, the Halibut. Halibut is the largest flat fish in the sea. They can grow up to 8 feet long and 700 pounds. They are mostly found in Alaskan sea.

[123] Raven is a crow-like bird and a very special character of American Indians. Read three books about the stories of Raven "Raven Ki Lok Kathayen-1", "Raven Ki Lok Kathayen", both published y Indra Publishers and Prabhat Prakashan respectively and "Raven Ki Lok Kathayen-3" all written by Sushma Gupta in Hindi language. The last book is available from hindifolktales@gmail.com

फिर उस मछली पर बैठने को कहा जिसको उसने पकड़ा था। उसने उसको यह भी कहा कि वह उसको उस मछली में से कुछ हिस्सा देगा अगर वह तब तक वहाँ बैठी रहेगी जब तक वह बाकी की और मछलियाँ पकड़ कर ले कर आता है।

अब दोपहर का समय हो आया था। सूरज आसमान में ऊपर चढ़ा हुआ था, दिन बहुत गर्म था। रैवन बहुत जल्दी से बहुत सारी मछलियाँ पकड़ना चाहता था इसलिये बिना पीछे देखे ही वह बोला — "स्कैम, क्या तुम वहाँ हो?"

स्कैम बोली — "ओह।"

थोड़ी देर बाद उसने फिर पूछा — "स्कैम तुम कैसी हो?"

स्कैम ने फिर वही जवाब दिया — "ओह।"

गर्मी बढ़ती जा रही थी। रैवन ने फिर पूछा — "स्कैम क्या तुम वहाँ हो?"

स्कैम ने अबकी बार बड़ी कमजोर सी आवाज में जवाब दिया — "ओह।"

यह सुन कर रैवन ने पीछे मुड़ कर देखा कि वह उस कमजोर आवाज को देख सके कि वह कहाँ से आ रही थी तो उसने देखा कि स्कैम की जगह तो एक चिकने से ढेर ने ले ली थी।

रैवन को यह देख कर ताज्जुब भी हुआ और गुस्सा भी आया क्योंकि वह मछली जो उसने पकड़ी थी उसको तो वह खा ही नहीं सका था।

उसने गुस्से में कुछ बुरे शब्द कहे क्योंकि उसकी पकड़ी हुई मछली एक चिकने ढेर के नीचे दब गयी थी। वह वहाँ आया जहाँ वह मछली छोड़ कर गया था और उसने उसको नाव के बाहर फेंक दिया।

इसी लिये हैलीबट मछली की ऊपरी खाल काली होती है क्योंकि उसकी ऊपर की खाल तो काले गोंद के उस चिकने ढेर के नीचे दब कर जल गयी थी और उसकी नीचे की खाल सफेद रह गयी थी।

उसकी आँखें भी नहीं हैं और वह दबी हुई भी है क्योंकि स्कैम उसके ऊपर उस चिकने ढेर के रूप में बैठी हुई थी। हैलीबट मछली आज भी दबी हुई ही होती है।

सो इन्डियन्स जब भी यह मछली पकड़ते हैं तो रैवन की इस घटना को याद करते हुए वे इस मछली को तुरन्त ही किसी मोटे से डंडे से मार देते हैं।

इसके बाद का रैवन का अनुभव उनको एक और बात बताता है कि हैलीबट मछली को कैसे पकड़ना चाहिये।

एक बार रैवन वहाँ आया जहाँ भालू रहता था। उसने उस भालू से पूछा — "क्या तुम मेरे साथ हैलीबट मछली पकड़ने चलोगे?"

भालू राजी हो गया सो वे दोनों अगली सुबह जल्दी ही मछली पकड़ने के लिये चल दिये। उन्होंने नाव उठायी और वे एक ऐसी

जगह पहुँचे जहाँ वे मछलियाँ बहुतायत में मिलती थीं। उन्होंने अपने अपने मछली के काँटे ठीक किये और उनको समुद्र में डाल दिया।

केवल रैवन को ही हैलीबट मछली मिली भालू को कोई हैलीबट मछली नहीं मिल पायी। जब रैवन की नाव मछलियों से भर गयी तो भालू ने रैवन से पूछा कि उसने मछलियों के चारे के लिये अपने काँटे में क्या लगाया था।

रैवन बोला — "गिल्डास्क्विल[124]।"

[124] Gildasquyil – this Indian word has never been identified.

26 पहाड़ों की आत्मा वैलाला[125]

वैलाला सिमशियान्ग कबीले[126] के लोगों की पहाड़ों की आत्मा है। इस कबीले को लोग कैनेडा में ब्रिटिश कोलम्बिया की नास और स्कीना नदियों[127] के किनारे रहते हैं।

इस आत्मा को अलास्का में रहने वाले टिनगैट्स लोग भी मानते हैं और यह किकसैट्टी लोगों[128] के टोटम पोल पर भी पायी जाती है।

इन्डियन्स का विश्वास है कि हर चीज़ की आत्मा[129] होती है। आत्मा[130] शरीर से आती है और फिर पत्थर में बदल जाती है इसलिये इसको पहाड़ की आत्मा कहते है।

वैलाला की कथा हमको यह बताती है कि एक शिकारी को वैलाला की आत्मा कैसे मिली।

एक बार एक शिकारी था जिसने एक भालू को घायल कर दिया पर वह भालू क्योंकि फिर भी भागता रहा सो वह शिकारी भी उसको पकड़ने के लिये उसके पीछे पीछे भागता रहा।

---

[125] Welala, the Mountain Spirit.
[126] Tsimshians clan (pronounced as Timshiang)
[127] These people live near Naas and Skeena Rivers in British Columbia in Western Canada
[128] Tingets of Alaska (USA) and Kicksetti of Wrangell
[129] Spirit
[130] Soul

भालू भागता भागता एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़ गया। वहॉ जा कर एक दरवाजा खुला और वह उसके अन्दर घुस गया। वह शिकारी भी उसका पीछा करते करते वहीं आ पहुँचा जहॉ वह भालू आ कर छिपा था। वहॉ आ कर उसने वैलाला यानी पहाड़ों की आत्मा के गाने की आवाज सुनी "हप हप"। तो यह सुन कर तो वह बेहोश ही हो गया।

उसके शरीर से उसकी आत्मा[131] निकल कर उस पहाड़ की खोखली जगह में बने एक छिपे हुए कमरे में सरदार वैलाला के सामने जा पहुँची जो एक भालू की खाल पहने वहॉ बैठा हुआ था।

सरदार वैलाला ने उस शिकारी को अपने गहने पहनने का अधिकार दिया और नक्काशी किये हुए बक्से में से एक नाच का मुखौटा[132], भालू की एक छोटी सी खाल, सीडर की लकड़ी का गले में पहनने का हार और कुछ और चीज़ें जो जाड़ों के नाच में पहनी जाती हैं निकाल कर उसको दीं।

उसने उसको सारी दुनियॉ में उड़ने की ताकत भी दी जिससे वह अपने दुश्मनों को ढूँढ सके और मार सके।

उस शिकारी ने उसके वह सब गहने पहन लिये और धरती के ऊपर उड़ गया। वह जंगलों में जो भी उसको मिला सबको मारता हुआ चार साल तक धरती के ऊपर उड़ता रहा।

---

[131] Soul (not the spirit)

[132] Translated for the word "Mask". See its picture above.

अन्त में वह अपने गॉव आया। वहॉ उसके कबीले के डाक्टर ने उसको पकड़ लिया। वह उसको उसके परिवार में ले गया जहॉ उसने जादू की जड़ी बूटियों से उसके चारों तरफ घूमने का और बुरे काम करने का इलाज किया। फिर उसको तब तक वैलाला नाच नाचने को कहा गया जब तक वह थक कर चूर नहीं हो गया।

उसके बाद गॉव के सरदार ने उसको उसके सब नौकर चाकर, तॉबे की प्लेटें और नावें वापस दे दीं।

वैलाला की आत्मा एक बहुत ही गुप्त चीज़ है। इन्डियन्स इसको एक ऐसी जादुई ताकत के रूप में देखते हैं जो जिसको भी यह दी जाती है उस आदमी को बड़ा और इज़्ज़त वाला बनाती है।

27 कुइल टुमटुम[133]

कुइल टुमटुम की कथा और उसका निशान कैनेडा में रहने वाली उन इन्डियन जनजातियों से आता है जो उसके ब्रिटिश कोलम्बिया प्रान्त के वैनकूवर शहर में रहती हैं।

वे ये बताती है कि कुइल टुमटुम धरती का पहला आदमी था जो प्रकृति के बीच रहता था – पेड़, फूल, भरी भरी नदियाँ, नीला आसमान, ऊँचे ऊँचे पहाड़ आदि।

हालाँकि ये सब उसके साथ थे पर फिर भी वह बहुत अकेलापन महसूस करता था। उसको एक साथी चाहिये था जिसके साथ वह ये सब खुशी बाँट सकता और जो उसको भी सुख दे सकता।

सो एक दिन वह उसने सोचा "मैं पहले अपने जैसी ही एक शक्ल बनाता हूँ फिर उसमें कुछ और जोड़ूँगा ताकि वह और ज़्यादा सुन्दर बन जाये। वह कुछ ऐसी चीज़ होगी जिसको देख कर प्रकृति भी उससे जलेगी।"

यह सोच कर उसने अपनी लम्बाई से थोड़ा सा छोटा लकड़ी का एक डंडा लिया और उस पर खुदाई करने लगा। सारा दिन और सारी रात लगातार वह उस पर अपने पत्थरों के चाकुओं से खुदाई करता रहा। खुदाई करते करते उसको पूरा बारिश का मौसम निकल गया।

---

[133] Quil-Tum-Tum.

खुदाई करने बाद उसने जंगल में जादुई जड़ी बूटी ढूँढीं जिनसे वह उस खोदे हुए शरीर पर मॉस और खाल चढ़ा सकता। वह खुदायी किया गया डंडा उसको गर्म तो लग रहा था पर उसकी लाख कोशिशों के बावजूद वह डंडा हिल कर नहीं दिया।

उसने उसको अपने कम्बल में भी लपेटा, उसको सिर के बल भी खड़ा किया, पर फिर भी.... कुछ नहीं हुआ।

यह सब करते करते वह थक गया। उसको भूख भी लग आयी। उसने खाने के लिये अपने बक्से देखे पर वहाँ तो अब कोई खाना भी नहीं बचा था। उसके सारे बक्से खाली पड़े थे। वह एक आधी बनी टोकरी आग के पास छोड़ कर खाना ढूँढने चला गया।

उसके जाने के बाद वहाँ कुछ चिड़ियें आयीं – रोबिन, कठफोड़वा, फ्लिकर[134] आदि। उन सब चिड़ियों ने उस आदमी की बनायी हुई उस मूर्ति की बहुत तारीफ की और फिर वे सब इस नतीजे पर पहुँचीं कि उनके पास उस आदमी की सहायता करने का केवल एक ही तरीका था और वह यह कि वे वहाँ से उड़ जायें और सबको यह बतायें कि कुइल टुमटुम क्या कर रहा था।

[134] Robin is a small bird, and the other one woodpecker bird always scratches trees. Flicker bird is also like small woodpecker bird. Pictures of all the birds are given above in this sequence.

फ्लिकर चिड़िया ने दो लड़कियाँ जो नदी के मुहाने के पास अकेली रहती थीं उनसे जा कर यह सब कहा तो वे वहाँ आयीं जहाँ कुइल टुमटुम अपने सीडर की छाल के छोटे से मकान में रहता था। उसने सीडर की छाल के टुकड़ों को एक दूसरे पेड़ की जड़ों से सिल कर वह मकान बना रखा था।

उन लड़कियों ने भी कुइल टुमटुम के हाथ के इतने साफ काम की बहुत तारीफ की पर एक डंडे से स्त्री को बनाने के उसके विचार पर वे बहुत ज़ोर से हँस पड़ीं चाहे वह नक्काशी किया गया डंडा कितना भी सुन्दर क्यों न था।

फिर उन दोनों लड़कियों ने उसकी अधूरी टोकरी पूरी की, पास में जलती आग में उसको जलते रखने के लिये थोड़ी सी लकड़ी डाली और कुइल टुमटुम के आने के इन्तजार में छिप कर खड़ी हो गयीं।

कुछ ही देर में कुइल टुमटुम खाना ले कर वापस आ गया। उसको यह देख कर थोड़ा आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी हुई कि उसकी आग अभी तक जल रही थी और उसकी टोकरी भी पूरी बनी रखी थी।
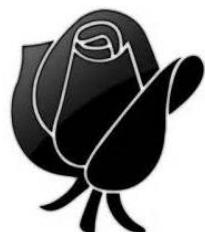
उसने फिर से उस नक्काशी किये डंडे में जान डालने की कोशिश की पर जब वह उसमें जान न डाल सका तो वह अपने दिमाग को आराम देने के लिये शिकार के लिये चला गया।

इस बार जब वह शिकार से लौटा तो उसने दो लड़कियों को आग के पास बैठा पाया। उस आग में उसका नक्काशी किया हुआ वह डंडा जल रहा था और वे लड़कियाँ हॅस रही थीं।

उन लड़कियों को हॅसता देख कर पहले तो वह बहुत नाराज हुआ पर फिर उन्हें हॅसता देख कर उसने उनको वह हिरन दिया जो वह अभी अभी शिकार कर के लाया था।

उन्होंने आग को थोड़ा सा कुरेद कर तेज़ किया और फिर कुइल टुमटुम के लिये बहुत ही स्वाददार खाना बनाया। उसको वे दोनों लड़कियाँ इतनी अच्छी लगीं कि उसने उन्हीं दोनों से शादी कर ली। उन्हीं से फिर वैनकूवर में रहने वाली सारी जनजातियाँ पैदा हुईं।

उस दिन से ले कर आज तक किसी स्त्री की शक्ल को टोटम पोल पर कभी नहीं खोदा जाता।

28 क्वाई टैक समुद्री चिड़ा[135]

समुद्री चिड़े की यह दंत कथा क्वीन चारलोट टापू[136] पर रहने वाले हायडा इन्डियन्स[137] में कही सुनी जाती है। अगर यह समुद्री चिड़ा न होता तो शायद आज उत्तरी अमेरिका के उत्तर पश्चिमी प्रशान्त महासागर में मछलियॉ न होतीं।

कैसे? तो पढ़ो यह कहानी और जानो कि वहॉ फिर आज मछलियॉ क्यों नहीं होतीं।

एक बहुत ही ताकतवर दादी थी जो समुद्र से अन्दर आने वाले पानी की एक धारा के पास रहती थी। वह अपनी कमर के बल लेट कर और अपनी टॉगें ऊपर नीचे हिला कर समुद्र में आये ज्वार को काबू में कर सकती थी। उसके घर में मछली से भरे बहुत सारे बक्से रखे थे जो पानी को अन्दर आने से रोकते थे।

एक बार रैवन कहीं जा रहा था कि वह समुद्र के किनारे रुका। उसने अपना मुखौटा[138] उतारा और आदमी की शक्ल में आ गया।

---

[135] Kwaeitek, the Sea Gull.

[136] Queen Charlotte Island – Present Haida Gwaii, literally "Islands of the Haida people"), formerly known as the Queen Charlotte Islands are on the North Coast of British Columbi, Canada. Approximately half of its population is of the Haida people. The islands are separated from the British Columbia mainland to the east by Hecate Strait. Vancouver Island lies to its South, across Queen Charlotte Sound, while the US state of Alaska is to its North.

[137] Haida Indians who live on Queen Charlotte Island, Western Canada.

[138] Translated for the word “Mask”. He used to wear mask of raven to become Raven bird.

हमेशा की तरह वह बहुत भूखा था, और इस बार वह ऊलीचन मछली[139] खाना चाहता था।

उसको विश्वास था कि उसको ये मछलियाँ उस दादी से मिल पायेंगी सो उसने बड़ी नम्रता से दादी से कहा — "मैं बहुत थका हुआ हूँ दादी माँ और मुझे ठंड भी बहुत लग रही है।"

दादी ने पूछा — "तुम कहाँ से आ रहे हो?"

रैवन बोला — "मैं ऊलीचन मछलियाँ पकड़ने गया था।"

दादी बोली — "तुम तो बहुत पुराने झूठे हो। अच्छा हो कि तुम मुझसे दूर ही रहो।"

इस जवाब से रैवन परेशान हो गया। उसने सोचा कि उसको कुछ और ज़्यादा चालाकी से काम लेना चाहिये। जब समुद्र में से ज्वार का पानी चला गया तो वह समुद्र के किनारे गया तो वहाँ उसने एक समुद्री चिड़े और एक सारस को देखा।

वह समुद्री चिड़ा एक मरी हुई ऊलीचन मछली खा रहा था जिसको दादी ने फेंक दिया था। रैवन की इच्छा हो रही थी कि वह

[139] Translated for the words "Candle fish"

उस मरी हुई ऊलीचन मछली को ले ले ताकि वह यह देख सके कि क्या होता है।

इसके लिये उसने एक तरकीब सोची कि वह उस समुद्री चिड़े और सारस में झगड़ा करा दे। सो वह समुद्री चिड़े के पास गया और उससे कहा — "यह सारस तुम्हारे बारे में कुछ अच्छा नहीं सोचता है। जब भी इसको खाना मिल जाता है तभी यह तुम्हारे बारे में खूब बात बनाता है।"

फिर वह सारस के पास गया और उससे बोला — "तुम दोनों की लम्बी लम्बी चोंचें हैं जिनको तुम लोग दूसरों के मामले में अड़ा देते हो।"

यह सुन कर सारस बहुत नाराज हो गया। वह तुरन्त समुद्री चिड़े के पास गया और जा कर समुद्री चिड़े के पेट में बहुत ज़ोर से मारा। इससे उस समुद्री चिड़े के पेट से उसकी खायी हुई ऊलीचन मछली बाहर आ गयी। रैवन ने तुरन्त ही उसको उठा लिया।

उसने अपने टोप से मसल कर उस मछली की खाल निकाल दी और उसको ले कर दादी के पास गया। वहाँ जा कर वह दादी से बोला — "दादी दादी, सारी ऊलीचन मछली तुम्हारे पास ही नहीं हैं। समुद्र के किनारे भी बहुत सारी हैं।"

यह सुन कर दादी कुछ दुखी सी हो गयी और अगली बार जब समुद्र में ज्वार आया तो उसने अपने सारे बक्से खोल कर उनकी सारी मछलियाँ समुद्र में फेंक दीं।

और यही वजह है कि आजकल उस समुद्र में बहुत सारी तरह की मछलियाँ पायी जाती हैं। और उस दिन से समुद्री चिड़िया का नाम भी "चुगली खाने वाली"[140] चिड़िया पड़ गया।

140 Tattle Tale – who complains about the bad thing of other child to one's parents or teachers.

29 माटी बकरा[141]

स्कीना नदी के किनारे टैमलेहैम नाम का एक बहुत बड़ा राज्य था[142] जिसमें ऊँचे ऊँचे पेड़ों से ढके बहुत सारे पहाड़ थे। पर उनमें कई गहरी खाइयाँ भी थीं जिनमें से हो कर कई नदियाँ बहती थीं और उन नदियों में रहती थीं सैमौन मछलियाँ।

इन पहाड़ों पर और इनसे बनी घाटियों में बहुत सारे जंगली जानवर भी रहते थे। इसी सुन्दर जमीन पर रहते थे बकरा कबीले के लोग।

एक बार आसमान की आत्मा[143] ने जो उनकी ज़िन्दगियों को अपने नियन्त्रण में रखती थी उनसे कहा कि वे जंगली जीवन को ठीक से रखें। अगर वे ऐसा करेंगे तो वह जमीन उनके लिये हमेशा के लिये बनी रहेगी।

कुछ दिनों तक तो बकरा कबीले के लोगों ने इस बात का माना तो इससे जंगली जानवरों के समूह इतनी जल्दी जल्दी बढ़ने लगे कि कुछ दिनों बाद वे लोग आसमान के देवता की कही बात ही भूल गये और वे फिर से उन जंगली जानवरों को बड़ी बेरहमी से मारने लगे।

---

[141] Mateeh, the Goat.

[142] There was a large kingdom named Temlaham along the Skeena River…

[143] The Sky Spirit

खेल खेल में वे उनके ढॉचे को सड़ने के लिये ऐसे ही पड़ा रहने देते। हिरन और पहाड़ी बकरे बेकार में ही मारे जाते तो उनके बच्चे बेचारों को रहने के लिये कहीं और जाना पड़ता।

एक दिन जब बकरा कबीले के लोग सब शिकार ढूॅढ रहे थे तो एक नौजवान शिकारी को एक बच्चा दिखायी दे गया जिसकी मॉ मर गयी थी।

उसने उस बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और पहाड़ के नीचे अपने घर ले गया। वहॉ उसने उसकी देखभाल की और फिर से उसको तन्दुरुस्त कर लिया। अब वह उस बच्चे को इतना ज़्यादा चाहने लगा कि वह किसी को भी उससे कोई भी बुरा बर्ताव नहीं करने देता।

ऐसे ही कुछ समय बीत गया कि वहॉ उस गॉव में कुछ अजनबी लोग आये तो उनके आने की खुशी में पौटलैच[144] दिया गया। इन्डियन्स को तो पता नहीं था पर ये लोग आदमी की शक्ल में पहाड़ी बकरे थे।

बाद में इन पहाड़ी बकरों ने अपने मेजबानों को अपने घर बुलाया जो पहाड़ों पर था। वहॉ वे इनको एक दावत देने वाले थे और अपना मुखौटे वाला नाच दिखाने वाले थे।

---

[144] Potlach is a festival of Indians living on the Northern coast of Pacific Ocean. On this day one person invites all his friends and presents gifts to all of them to show them that he has lots of wealth, but later other people also do the same and return his gifts of more value than his. It includes food also.

इन्डियन्स उनके घर जाने को राजी हो गये पर जब उस नौजवान शिकारी ने उनसे अपने पालतू जानवर बकरे को वहॉ ले जाने के लिये कहा तो उनको इस काम को करने में बहुत शर्म लगी। पर वह अपने पालतू बकरे को अपने साथ वहॉ ले गया।

जब सारे मेहमान बैठ गये तो दावत शुरू हुई। बकरे लोगों ने कहा कि वे अब अपना नाच शुरू करने वाले हैं। सो वे अपने मेहमानों को छोड़ कर अपने नाच की तैयारी करने बाहर चले गये।

अचानक चट्टानों की गड़गड़ाहट और लुढ़कने की आवाज सुनायी दी और उन चट्टानों के टुकड़े उस घर पर आ कर गिरने लगे और उस घर को पहाड़ की चोटी के ऊपर ले गये।

नौजवान शिकारी के पालतू पहाड़ी बकरे को पहले से ही पता चल गया कि कहीं कोई खतरा है तो वह खतरा खत्म होने से पहले ही अपने मालिक को वहॉ से दूर ले गया और उस पहाड़ी से नीचे की तरफ ले आया। सो वह नौजवान शिकारी तो बच गया पर सारे इन्डियन्स जो वहॉ रह गये थे वे सब मारे गये।

उस पहाडी बकरे की वफादारी के बदले में उस नौजवान शिकारी के परिवार ने पहाड़ी बकरे के निशान को अपने और अपने बच्चों के लिये टोटम पोल के सबसे ऊपर खुदने वाले निशान के रूप में स्वीकार कर लिया।

30 काली मछली स्काना[145]

अमेरिका के उत्तर पश्चिम में जो इन्डियन्स रहते थे उनको काली मछली यानी मारने वाली व्हेल[146] अपने बहुत भयानक स्वभाव के बावजूद बहुत अच्छी लगती थी। तीन चार लोग मिल कर एक बड़े साइज़ की व्हेल को आसानी से मार लेते थे।

जो लोग इन टापुओं में रहते थे वे शिकार के मामले में बहुत साहसी थे। वे अपनी भेड़िये वाली नावों[147] में ही उनका पीछा करते करते समुद्र में बहुत दूर निकल जाते थे। वे हमेशा ही इस काली मछली की तलाश में रहते और जब इसको मार लेते थे तो इसकी बहुत इज़्ज़त करते थे।

कुछ लोग इन काली मछलियों को बुरी आत्मा समझते थे क्योंकि ये नावों के ऊपर बहुत जल्दी हमला करती थीं। वे उन नावों को बहुत जल्दी ही पलट देतीं और इस तरह उसमें बैठे लोगों को डुबो देतीं।

इन्डियन्स का विश्वास था कि जब उनकी जनजाति के छोटे बच्चे समुद्र में मर जाते थे और अगर वे "उत्तरी रोशनी"[148] की

---

145 Skana, the Black Fish.

146 Translated for the words "Killer Whale"

147 Wolf canoes

148 Northern Lights – in far Northern countries, such as Norway, Sweden etc, even in far Northern Canadian lands there are lights seen across the skies. They look so beautiful that the people go to see them. It is one of the natural wonders of the world.

सपनों की दुनियॉ में रहना नहीं चाहते तो उनकी आत्माऐं व्हेल के रूप में पुनर्जन्म ले कर वापस लौट आती थीं ताकि वे उस पानी में रह सकें जिसको वे इतना प्यार करते थे।

उस समुद्र में पानी की एक धारा थी जो हमेशा दक्षिण की तरफ बहती थी। उसके किनारे पर एक डोरसल फ़िन[149] नाम का शहर था। उसके बहुत सारे घरों में से एक घर में एक बहुत ही ताकतवर राजकुमार रहता था। सारे गॉव के लोग उसकी जनता थी।

इस बारे में बहुत पुरानी एक कथा है कि एक बार दो बड़े बहादुर लड़ने वाले अपनी नाव में थे कि एक काली मछली ने उनको अपने साथ लड़ने के लिये चुनौती दी। इन्डियन्स यह सब नहीं चाहते थे पर इससे बचने का और कोई तरीका नहीं था।

सो इनमें से एक लड़ने वाले ने अपने साथी से कहा कि अगर वह इस लड़ाई में मर जाये तो वह काली मछली में बदलने से पहले जितनी भी काली मछली उसके सामने आयें उन सबको मार दे।

और यह कह कर वह उस काली मछली से लड़ने चला गया। जब वह समुद्र में डूब गया तो काली मछली के बहुत सारे शरीर भी पानी की सतह पर आने लगे। बहुत हलचल के बाद राजकुमार का शरीर भी ऊपर आया।

इस डर की वजह से लड़ने वाले राजकुमार के परिवार को काली मछली के निशान को टोटम पोल पर सबसे ऊपर लगाने की

---

149 Dorsal Fin town

इजाज़त दे दी गयी। इस तरह यह काली मछली या मारने वाली व्हेल समुद्र के पास रहने वालों के कबीले[150] का निशान है और वे इस निशान की बहुत तारीफ करते हैं।

जब ये लोग किसी पौटलैच[151] में जाते हैं तो ये हमेशा नावों में आते हैं और ये नावें उस व्हेल की शक्ल की बनी होती हैं और बहुत तरीकों से सजी रहती हैं ताकि सबको यह लगे कि वह राजकुमार समुद्र में यात्रा करने का आदी था और वह मारने वाली व्हेल के शरीर को अपनी नाव की तरह से इस्तेमाल करता था।

[150] Translated for the words "Ocean people"

[151] Potlach is a festival of Indians living on the Northern coast of Pacific Ocean. On this day one person invites all his friends and presents gifts to all of them to show them that he has lots of wealth, but later other people also do the same and return his gifts of more value than his. It includes food also.

31 बिजली वाला सॉप हीटलिक[152]

यह कथा वैनकूवर टापू के पश्चिमी समुद्री किनारे पर रहने वाले लोगों की है। यह बिजली वाला सॉप दैवीय रूप[153] से जन्मा था। जब यह बहुत छोटा था तभी उसने अपनी मॉ का दिया हुआ खाना खाने से इनकार कर दिया।

जब उसके माता पिता ने उससे यह पूछा कि उसने खाना क्यों नहीं खाया तो वह बोला — "जब दिन निकलता है तब जो पाइन[154] की मीठी खुशबू आती है वही मेरे लिये काफी है।"

एक दिन जब वह बिजली वाला सॉप जंगल में अकेला घूम रहा था तो उसको टूटूक गरज चिड़ा[155] मिल गया। वह भी अकेला घूम रहा था और एक साथी की तलाश में था सो दोनों में दोस्ती हो गयी और दोनों ने एक दूसरे से कभी अलग न होने का वायदा किया।

हीटलिक ने फिर अपना बिजली वाले सॉप का रूप रखा और गरज चिड़े के चारों तरफ लिपट गया। गरज चिड़ा तब उसको उड़ा कर पहाड़ पर अपने घर ले गया।

टूटूक तो व्हेल का मॉस खा कर रहता था और जब वह व्हेल की खोज में निकलता था तो वह अपना पंखों का कोट पहन लेता,

---

[152] Heetlik, the Lightening Snake.

[153] Supernatural

[154] Pine is a kind of tall tree whose fruits spread a very mild sweet smell all around.

[155] Tootooch Thunder Bird

पंख लगा लेता और चिड़े का मुखौटा लगा लेता। और हीटलिक सॉप उसके चारों तरफ लिपट जाता। बस फिर दोनों आसमान में उड़ जाते।

जब भी टूटूक को कोई व्हेल दिखायी पड़ जाती तो वह कुछ इस तरह से अपने आपको हिलाता कि वह बिजली वाला सॉप उस व्हेल के ऊपर गिर जाता और उस व्हेल के शरीर को भेद देता।

बिजली के धक्के से वह व्हेल तुरन्त ही मर जाती। गरज चिड़ा तब उसको अपने मजबूत पंजों में उठाता और अपने घर ले आता।

जब धरती पर रहने वाले कोई बुरा काम करते तो वे भी अक्सर इस बिजली वाले सॉप की ताकत महसूस करते।

एक बार उस सॉप ने अपना गुस्सा एक पूरी जनजाति पर ही निकाल दिया था क्योंकि वे प्रकृति के नियमों को भूल गये थे, शिकार और मछली पकड़ने के नियमों को भूल गये थे।

बजाय इसके कि वे अपने लिये काम करते वे अपने पड़ोसियों के लिये बहुत मतलबी और गुस्से वाले हो गये थे। सो उसने उनके हाथ और पैर काट डाले।

तब गरज चिड़ा उन लोगों के पास गया और उनके ऊपर पानी छिड़क कर उनको उठने के लायक बनाया और उनके हाथ पैर ठीक किये। जल्दी जल्दी में कुछ लोगों ने गलत हाथ पैर उठा लिये और वे उनके शरीर में ठीक से लग नहीं पाये।

सो उसके बाद से वे हमेशा इन्डियन्स की दूसरी जनजातियों में खराब शरीर वाले लोग[156] कहलाये।

इन्डियन्स का विश्वास है कि इस दुनियाँ की जो भी चीज़ है वह सब बिजली वाले साँप की मेहरबानी से ही मिलती है। वह उसी की मेहरबानी से ही रहती है, टूटती है और नष्ट होती है।

मछली या शिकार को वे खा तो सकते हैं पर फिर भी वह बिजली वाला साँप कहीं और रहता है जब तक कि वे उस साँप के नैतिक नियमों का पालन नहीं करते। वही उन सबकी जरूरतों को पूरा करने वाला है।

आज कल वह "ऊँचाई पर रहने वाले" के नाम से जाना जाता है। उसकी ताकत की लोग पूजा तो नहीं करते पर फिर भी उसको इज़्ज़त बहुत देते हैं।

[156] Deformed people

32 ईकोली व्हेल[157]

जबसे इन अमेरिकन आदिवासी जनजातियों का इतिहास शुरू होता है तभी से वैनकूवर टापू में रहने वाली नूटका जनजाति[158] के इन्डियन्स व्हेल का निशान इस्तेमाल करते हैं।

इस जनजाति के लोग एक बहुत बड़े शिकार करने वाले लोग थे और अपनी भेड़िये वाली नावों[159] में बैठ कर व्हेल के पीछे समुद्र में मीलों तक चले जाते थे।

नूटका लोगों का विश्वास था कि उनकी यह दुनियाँ एक व्हेल की पीठ पर टिकी हुई है और वह व्हेल समुद्र की तली में बने एक घर में रहता है।

यह व्हेल ईटूप[160] के नाम से जाना जाता है और इस सारी दुनियाँ पर राज करता है। उसके घर में दो लड़कियाँ थीं जो मत्स्य कन्या जैसी थीं। उनके नाम थे – ओकीस और पेटिल्स।[161]

---

157 Ehkolie Whale.
[My Note : Read other folktales of Raven in “Raven Ki Lok Kathayen-1”, “Raven Ki Lok Kathayen” and Raven Ki Lok Kathayen-3” all written by Sushma Gupta in Hindi language.]

158 Nootka Tribe living in Vancouver Island in British Columbia situated on the Western coast of Canada.

159 Wolf Canoes

160 Eah-Toop – name of the Whale

161 Ohk-iss and Paytles – they were like mermaids.

एक बार उन दोनों लड़कियों को भेड़िया घर का सिन सैट[162] उठा कर ले गया था तो टूटूक गरज चिड़ा[163] उनको वापस ले कर आया और समुद्र की तली में उनके घर पहुँचा कर आया था।

जब भी कभी कोई व्हेल किनारे पर आ कर पड़ जाती तो इन्डियन्स बहुत खुशी मनाते थे। और अगर उनका सरदार वहाँ नहीं होता था तो उनमें आपस में उस व्हेल के ऊपर खूब लड़ाई होती थी।

अक्सर वहाँ चाकू भी चल जाते और लोग एक दूसरे को घायल कर देते थे। क्योंकि कुछ लोग व्हेल का यह हिस्सा माँगते तो कुछ दूसरा। पर वहाँ के नियमों के अनुसार वह व्हेल सरदार की होती थी जो व्हेल को लोगों को उनके पद के अनुसार बाँटता था।

कहने की बात नहीं कि उसका सबसे अच्छा हिस्सा वह अपने घर के लिये रखता था। फिर उसका माँस उबाला जाता और बाद के लिये उसमें से तेल निकाल लिया जाता जो मछली और दूसरी चीज़ों के साथ खाया जाता।

हायडा लोगों की एक लोक कथा बताती है कि एक बार रैवन बहुत भूखा था और व्हेल खाना चाहता था सो वह किनारे पर बैठ कर उसका इन्तजार करता रहा।

---

[162] Sin-Set from Wolf House

[163] Tootooch, The Thunder Bird

जब वह किनारे पर आ गयी तो उसने उसमें फूँक मारी जिससे उसमें एक छेद हो गया। छेद कर के वह उसके अन्दर घुस गया और उसका दिल निकाल लिया। उसका दिल निकालने से वह मर गयी।

पर वह यह भूल गया कि व्हेल के मरते ही उसके शरीर का छेद भी बन्द हो जाता है। सो वह उसके अन्दर बन्द हो गया और बाहर नहीं निकल सका। उसने बहुत कोशिश की पर सब बेकार। अपनी बेवकूफी की वजह से वह खुद ही उस व्हेल के अन्दर कैद हो गया था।

फिर वह मरी हुई व्हेल धीरे धीरे किनारे पर आ लगी। उस किनारे के पास ही एक गाँव था जहाँ इन्डियन्स रहते थे। वे उसको देख कर बहुत खुश हुए और उन्होंने उसको काटना शुरू किया। जब वे उसे काट रहे थे तो जैसे ही रैवन को मौका मिला वह उसमें निकल कर उड़ गया।

ऊपर जा कर वह उन लोगों से बोला — "तुम लोग आज बहुत खुशकिस्मत हो।"

वे बोले — "तुमको ऐसा लगता है क्या? पर हाँ है तो यह कुछ अजीब सी खुशकिस्मती।"

रैवन ने पूछा — "क्यों? क्या अजीब बात है इस खुशकिस्मती में?"

तब उन्होंने उसको बताया कि जैसे ही उन्होंने व्हेल को काटना शुरू किया तो उसमें से एक चिड़िया निकल कर उड़ गयी। रैवन यह सुन कर हॅसा और उसने यह सुन कर आश्चर्य भी प्रगट किया।

फिर उसने उनसे पूछा कि अगर वे चाहें तो वह उस व्हेल को काटने में उनकी सहायता कर सकता है। वे लोग इस बात पर तैयार हो गये।

जब व्हेल कट गयी तो उसने उनसे फिर पूछा कि अगर वे चाहें तो वह उस व्हेल के मॉस को उनके गॉव तक ले जाने में भी उनकी सहायता कर सकता है ताकि वे उसको समुद्र में ज्वार आने से पहले ही वहॉ से हटा लें। वे इस बात पर भी राजी हो गये।

रैवन ने फिर उनको सलाह दी कि उनको जा कर अपने सरदार के साथ एक मीटिंग करनी चाहिये और यह पता लगाना चाहिये कि उनको उसमें से क्या मिलने वाला है ताकि उनको पता चल जाये कि वे लोग कितने किस्मत वाले हैं। यह सुन कर सब गॉव वाले वहॉ से चले गये।

जब वे वहॉ से चले गये तो रैवन फिर से चिड़िया बन गया। उसने उनके व्हेल के मॉस के सारे बक्से उठाये और उनको ले कर एक ऊॅचे पहाड़ पर चला गया और वहीं से चिल्लाया — "कॉव कॉव, कुछ लोग कभी अपनी किस्मत नहीं जान पाते।"

33 छोटा रैवन[164]

छोटा रैवन क्वीन चारलोट टापू[165] पर रहने वाले इन्डियन्स की लोक कथाओं का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हीरो है। और उन लोगों का भी जो अलास्का में अन्दर आने वाली नहरों के आस पास रहते हैं।

उसके काम भी बिजली की चिड़िया[166] जैसे ही होते थे। यह बिजली की चिड़िया प्रिंस रुपर्ट[167] के दक्षिण के क्षेत्रों में रहने वाले इन्डियन्स में एक दैवीय जीव था।

यह बहुत दिनों पहले की बात है जब अँधेरा ही अँधेरा था ताकतवर बड़ा रैवन, यानी सघाली टायी[168] जो दुनियाँ की हर चीज़ बनाता है, नास नदी[169] के ऊपर की तरफ रहता था।

---

[164] The Young Raven.
[My Note : Read other folktales of Raven in "Raven Ki Lok Kathayen-1", "Raven Ki Lok Kathayen" published by Indra Publishers and Prabhat Prakashan respectively and "Raven Ki Lok kathayen-3" all written by Sushma Gupta in Hindi language. The last book is available from hindifolktales@gmail.com]

[165] Queen Charlotte Island – Present Haida Gwaii, literally "Islands of the Haida people"), formerly known as the Queen Charlotte Islands are on the North Coast of British Columbi, Canada. Approximately half of its population is of the Haida people. The islands are separated from the British Columbia mainland to the east by Hecate Strait. Vancouver Island lies to its South, across Queen Charlotte Sound, while the US state of Alaska is to its North.

[166] Thunder Bird – the supernatural Indian living in the Southern region of Prince Rupert.

[167] Prince Rupert is a portal city on the North coast of British Columbia Province of Canada.

[168] Saghalie Tyee (pronounced as "Tyhee") , the Creator

[169] Naas River is in British Columbia, Canada.

उसके सुन्दर घर में सीडर की लकड़ी की सुन्दर आलमारियॉ थीं। उन आलमारियों में वह सूरज, चॉद और तारे बन्द कर के रखता था ताकि कोई दुनियॉ वाला उसको देख न सके।

उधर हमारा हीरो छोटा रैवन टैनस काका[170] एक दुनियॉ में रहने वाला आदमी था जिसको अपने और अपने साथियों के लिये रोशनी चाहिये थी। सो एक दिन उसने अपने आपको एक रैवन चिड़िया में बदला और आसमान में एक चमकीली झिरी से हो कर उस तरफ उड़ गया जहॉ वह सब कुछ बनाने वाला सघाली टायी अपनी बेटी के साथ रहता था।

उसके घर के पास आ कर उसने फिर अपने आपको एक पाइन की सुई[171] के रूप में बदला और एक साफ झरने में जा कर बैठ गया जहॉ उस बनाने वाले की बेटी पानी पीने के लिये आया करती थी।

वह जब वहॉ पानी पीने के लिये आयी तो वह उस पाइन की सुई को भी पी गयी। वह छोटा रैवन अब उस बेटी के बेटे के रूप में पैदा हो गया। जैसे जैसे वह बड़ा होता गया वह सारे घर का दुलारा होता गया।

---

[170] Tenas Kaka – name of the young Raven

[171] Pine needle – means pine's pointed fine leaves. See the picture of pine pointed fine needle with pine fruit above.

दूसरे बच्चों की तरह से जो कुछ भी उसको दिखायी देता वह सब कुछ उसे चाहिये था। वह उन रोशनियों से खेलना चाहता था जो अपनी रोशनी स्वर्ग को देती थीं।

उसका नाना उसको बहुत प्यार करता था। पहले उसको उसके नाना ने खेलने के लिये तारे दिये जो उसने बच्चों की तरह से उठा कर आसमान में फेंक दिये। पर उन्होंने उतनी रोशनी नहीं दी जितनी कि वह उनसे उम्मीद कर रहा था।

सो फिर वह चॉद के लिये रोया। नाना ने उसको चॉद भी दे दिया। वह भी उसने बच्चों की तरह से उठा कर आसमान में फेंक दिया। पर उससे भी केवल थोड़ी सी चमक ही निकली।

तब उसने सूरज को लिये जिद करनी शुरू की तो उसको सूरज भी दे दिया गया। पर जब उसका नाना सो रहा था तो उसने सूरज को चिमनी के रास्ते से ऊपर फेंक दिया।

इस तरह से सारी दुनियॉ में अचानक ही दिन की रोशनी फैल गयी।

जब उस छोटे रैवन को यह समझ में आया कि उसने क्या कर दिया तो उसको लगा कि उसके नाना तो अब बहुत नाराज हो जायेंगे तो वह वहॉ से उड़ कर धरती पर आ गया।

34 बुलहैड कूमा[172]

यह दंत कथा क्वीन मुख्य रूप से चारलोट टापू[173] पर रहने वाली इन्डियन जनजाति हायडा लोगों में कही सुनी जाती है।

और दूसरे लोग जो उत्तरी अमेरिका के उत्तर पश्चिमी समुद्र के किनारे पर रहते हैं उनकी तरह से ये लोग भी लगातार ज़िन्दगी में विश्वास करते हैं।

काका रैवन[174] को इस समय बहुत अच्छा लग रहा था क्योंकि वह अभी अभी तैर कर चुका था और हैमलौक[175] की टहनियों से अपने शरीर को मल मल कर साफ कर के चुका था।

इस मलने से उसके शरीर से खून भी निकल आया था पर उसको इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वह बहुत मजबूत था।

---

172 Kuuma, the Bullhead.

173 Queen Charlotte Island – Present Haida Gwaii, literally "Islands of the Haida people"), formerly known as the Queen Charlotte Islands are on the North Coast of British Columbi, Canada. Approximately half of its population is of the Haida people. The islands are separated from the British Columbia mainland to the east by Hecate Strait. Vancouver Island lies to its South, across Queen Charlotte Sound, while the US state of Alaska is to its North.

174 Ka-ka Raven or Tenas Ka-Ka Raven – name of the young Raven

175 Hemlock plant – a poisonous plant. See its picture above.

अपनी इस ताकत को जॉचने के लिये अगर वह किसी पेड़ की शाखाऐं खींचता भी तो केवल उसी पेड़ की शाखाऐं ही नहीं टूटतीं बल्कि दूसरे पेड़ भी उनके साथ साथ जड़ से उखड़ आते।

इसी काम को रोज रोज कर के उसने अपनी यह ताकत इकट्ठी की थी और अपने शरीर को मजबूत बनाया था।

अब वह अपनी काली मछली पकड़ने वाली नाव की तरफ जा रहा था जहॉ बैठ कर वह थोड़ा आराम करेगा और फिर कुछ सोचेगा। उसको मालूम था कि उसको अपने बाबा की बनायी दुनियॉ से लड़ने के लिये हमेशा तैयार रहना पड़गा।

रैवन को तभी उथला होता हुआ एक तालाब दिखायी दिया जो समुद्र में आया हुआ भाटा छोड़ गया था। और उसमें उसने देखी तैरती हुई एक बुलहैड मछली[176] ।

उसको देख कर तो रैवन को भूख ही लग आयी और वह वहॉ पड़ी मसिल की टूटी हुई सीपियों[177] के साथ खेलने लगा और खेलते खेलते वह उनको चालाकी से पानी में फेंकता रहा।

पर उस बुलहैड मछली ने उन फेंकी हुई सीपियों पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपना तैरना जारी रखा।

[176] Bullhead is a kind of fish used in North America. The brown bullhead is important as a clan symbol of the Ojibwe group of Native Americans. In their tradition, the bullhead is one of the six beings that came out of the sea to form the original clans. The Brown Bullhead attains a length of up to 21 inches.
[177] Mussel is a kind of shell animal living in sea. See its picture above.

बाद में वह बोली — "ओ झूठे और धोखा देने वाले, मैं तुझे अच्छी तरह जानती हूँ। यह मुझे फॅसाने की तेरी कोई और चाल है।"

यह सुन कर रैवन गुस्सा हो गया और उसने उस बुलहैड को शाप दिया — "तुम्हारा सिर हमेशा ही बड़ा रहेगा और शरीर छोटा रहेगा। तुम हमेशा ही चिकने और फिसलने वाले रहोगे, इधर उधर घूमते रहोगे और समुद्र की सारी मछलियों की जाति से बाहर रहोगे।

रैवन को लगा कि इस शाप को देने के बाद उसको कुछ और ज़्यादा ही भूख लग आयी है। और खाने के लिये अब उसको कोई दूसरी जगह ढूँढनी पड़ेगी क्योंकि यह बुलहैड मछली तो उसके हाथ आने वाली नहीं।

तभी ज्वार आ गया और उस उथले तालाब में पानी भर गया। वह बुलहैड मछली भी वहाँ से निकल कर जल्दी से डोरसल फ़िन शहर[178] चली गयी जहाँ कुछ अजीब अजीब से जीव रहते थे। ये अजीब जीव रैवन के दुनियाँ में रोशनी लाने से पहले आदमी के रूप में थे।

डोरसल फ़िन[179] शहर का राजा एक बहुत ही ताकतवर राजकुमार था। वहाँ के घरों में मरे हुए लोगों की आत्माऐं रह रही थीं और अपने नयी ज़िन्दगी का इन्तजार कर रही थीं। बुलहैड

---

[178] Dorsal Fin Town

[179] Dorsal Fin – name of the town

मछली वहाँ गयी और सब समुद्र के जीवों को जा कर उसने रैवन का शाप सुनाया।

बुलहैड मछली हायडा लोगों के केवल काली स्लेट के बने टोटम पोल पर ही खुदी हुई मिलती है। इस निशान का मिलना मुश्किल होता है क्योंकि लोग इसको जलन की वजह से छिपा कर रखते हैं।

दूसरी जनजातियों में भी इसका इस्तेमाल अब कम होता जा रहा है। बुलहैड मछली "मारने वाली व्हेल[180]" की एक किस्म है।

[180] Translated for the words "Killing Whale"

35 गलक्विथ कौड मछली[181]

इस दंत कथा के समय बैला बैला इन्डियन्स की बोयालिथ जनजाति[182] में अकाल पड़ा हुआ था।

ऐसे समय में एक नौजवान चकुमचकस[183] ने यह विचार किया कि वह वहाँ से कहीं बाहर दूसरी जगह जाये और देखे कि वह अपने आदमियों के लिये क्या कर सकता है।

इस काम के लिये उसने अपने लोगों में से एक और नौजवान से अपने साथ चलने के लिये कहा।

वह राजी हो गया सो अगली सुबह वे दोनों अपनी नाव में बैठ कर चल दिये। वे अपने उस प्रशान्त महासागर में दूर वाले टापुओं पर जाना चाहते थे जहाँ उनको आशा थी कि वहाँ उनको खाना मिल जायेगा।

वे उन टापुओं को चेचेक्वस टापू[184] कहते थे। बाद में जब सफेद लोग आये तो उन्होंने उन टापुओं को गैन्डर टापुओं का नाम दे दिया था।

---

[181] Gal-Quith, the Cod Fish. Cod fish is a kind of fish whose liver's oil is given to weak children – cod liver oil.

[182] Boya-lith tribe of Bella Bella Indians

[183] Cha-kum-ch-kas – the name of the young man.

[184] Che-che-kwas Islands – later they were given the name "Gander Islands" by white people, means Europeans.

वहाँ पहुँच कर उन्होंने अच्छी तरह देखभाल कर जहाँ हवाऐं भी बहुत तेज़ नहीं थीं एक छोटी सी खाड़ी में अपनी नाव का लंगर डाल दिया और सो गये।

रात को नाव की तली में किसी के लगातार ठक ठक करने की आवाज से चकुमचकस की आँख अचानक खुल गयी।

वह बाहर की तरफ आया और इधर उधर देखा तो उसने देखा कि वहाँ तो एक कौड मछली तैर रही थी और तैरते समय उसकी पूँछ नाव के एक तरफ फट फट लग रही थी। उसी की पूँछ की मार से वह आवाज हो रही थी।

जब वह दोबारा नाव के पास आयी तो उसने उस मछली को पकड़ लिया और उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले और उन टुकड़ों को पानी में फेंक दिया। यह कर के वह जा कर फिर से लेट गया और पल भर में ही सो गया।

पर जब वह जागा तो उसने अपने आपको एक बड़ी अजीब सी जगह पाया। उसने देखा कि वह तो एक बहुत ही सजे हुए मकान में था। वह मकान समुद्र में पैदा होने वाली बहुत सारी चीज़ों से सजा हुआ था।

चकुमचकस ने अपने साथी को उठाया और वे दोनों अपनी नाव से बाहर आये क्योंकि उनकी नाव तो सूखी जमीन पर थी।

जैसे ही वे अपनी नाव से बाहर आये कि दो चौकीदार अपने बक्से में से निकल कर बाहर आये और उन दोनों को अपने सरदार

के पास ले गये। सरदार के पास उसका बेटा खड़ा था जिसके सब कपड़े फटे हुए थे।

क्योंकि हुआ क्या था कि जब चकुमचकस ने जिस मछली के टुकड़े कर के पानी में फेंका था उस समय उस सरदार का बेटा ही उस मछली के रूप में था। चकुमचकस ने तब सरदार को अपनी कहानी बतायी और ऐसा करने के लिये दिल से माफी माँगी।

सरदार ने तब यह घोषणा की कि उन अजनबियों के लिये चार दिन तक दावत होगी। आखिरी दावत के दिन दोनों सरदार बना दिये गये। उस दिन चकुमचकस को "सरदार गलक्विथ" का नाम दिया गया और उसके दोस्त को "सरदार बोया"[185] का।

जब वे लोग वहाँ से चलने लगे तो वहाँ के सरदार ने उनकी नाव समुद्री खाने से उतनी भर दी जितना उनकी नाव में आ सकता था। क्योंकि उसको मालूम था कि उन अजनबियों के देश में अकाल पड़ा हुआ था।
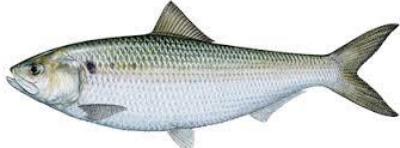
इस तरह वे दोनों यात्री जब जागे तो उनको पता चला कि वे लोग तो चार दिन के लिये नहीं बल्कि चार साल के लिये अपने घर से बाहर थे।

घर लौटने पर उनके घर वालों ने भी उनके लिये एक दावत का इन्तजाम किया क्योंकि उनके घर वालों ने तो उनके आने की उम्मीद ही छोड़ दी थी। उनको ज़िन्दा देख कर वे सब बहुत खुश थे।

---

[185] "Chief Gal Quith" and "Chief Boya"

उसके बाद उन दोनों ने उन सबको अपनी कहानी सुनायी। तब उन दोनों को उन लोगों ने अपने कबीले का सरदार बना लिया क्योंकि अब उनको कुछ ऐसी ताकतें मिल चुकी थीं जिनके असर से वे अपने लोगों को ठीक से सब तरह का समुद्री खाना खिला सकते थे।

उसके बाद दोनों सरदारों ने कौड और हैलीबट[186] मछलियों को अपने अपने टोटम पोल के ऊपर सबसे ऊँचा खुदने वाला निशान बना लिया।

[186] Cod and Halibut fish

36 माट माट बतख[187]

जब मलार्ड बतख[188] के बेटे की शादी होने वाली थी तो इस दुनियॉ की सारी बतखें और पानी की चिड़ियें और गरज चिड़ा[189] भी शादी की दावत के लिये बुलाये गये।

शादी की यह दावत एक ऐसी जगह थी "जहॉ पंख उड़ते रहते" थे। और यह जगह एक ऐसे कैम्प में थी जहॉ इन चिड़ों के परिवार रहते थे।

इस दावत में खाने के लिये छोटी छोटी मछलियॉ थीं। मसिल और क्लैम[190] का सूप कटोरियों में परसा गया था और वे कटोरियॉ हर एक की प्लेट के पास रखी थीं। हर प्लेट के पास पहाड़ी बकरे के सींग से बनी एक चम्मच रखी थी।

बतखों को ये सींग की बनी चम्मचें बहुत अच्छी लगीं।

जब यह दावत चल रही थी तो वहॉ बैठे मेहमानों ने मलार्ड बतख से कहा कि वह अपने कुछ कारनामे सुनाये।

सो गरज चिड़े को चिढ़ाने के लिये मलार्ड बतख ने अपने मेहमानों से निडर हो कर बोलना शुरू किया —

---

[187] Maht Maht, the Duck.
[188] Mallard Duck
[189] Translated for the words "Thunder Bird"
[190] Both mussel and clam are sea food – small animals live in their shells. See the picture of mussels above.

"एक बार जब मैं उड़ रहा था तो मैंने गरज चिड़े को एक नर तितली के ऊपर लट्ठा लुढ़काते हुए देखा जिससे वह नर तितली तो बेचारा चौरस ही हो गया।"

वह आगे बोला — "फिर गरज चिड़े ने उसको खोल दिया और उसके पेट में जो खाना था वह निकाल कर खा लिया।"

जैसी कि उम्मीद की जाती थी यह सुन कर गरज चिड़ा बहुत नाराज हो गया। वह अपनी सीट से उठा और मलार्ड बतख को धक्का मार कर आग में फेंक दिया। इससे उसकी छाती के सारे पंख जल गये। तब से सारी मलार्ड बतखों की छाती पर निशान होते हैं।

यह देख कर वहाँ बैठे बाकी सब बतखों ने अपनी अपनी चम्मचें अपने पंखों के अन्दर छिपा लीं और उड़ गये। जब वे पानी के ऊपर पहुँच गये तो उन्होंने अपनी चम्मचें पोंछी और उनको अपनी चोंचों में दबा लिया।

तभी से इन बतखों की चोंचें बकरे के सीगों की शक्ल की होती हैं।

37 कयैल बड़ा रैवन[191]

अलास्का और ब्रिटिश कोलम्बिया[192] के इन्डियन्स यह समझते थे कि बड़ा रैवन ही सघाली टायी[193] था। उसी ने यह दुनियाँ बनायी थी और वही ज्वार भाटा का भी मालिक था।

यहाँ तक कि वह अपने जन्म से भी पहले वहाँ मौजूद था। वह कभी बूढ़ा नहीं होता था और अपने आपको दुनियाँ की किसी भी चीज़ में बदल सकता था।

उनका यह भी विश्वास था कि वह नास नदी के ऊपर की तरफ आसमान में रहता था।[194] वह हमेशा बाबा के नाम से जाना जाता था जो बड़ी बाढ़ से पहले भी मौजूद था। हालाँकि बहुत सारे लोग उसको अक्सर छोटा रैवन[195] ही समझते थे जिसने उन इन्डियन्स की सहायता की थी।

एक बहुत पुरानी कथा के अनुसार बड़े रैवन की शादी हो गयी थी और उसके एक बहुत सुन्दर सी बेटी भी थी। बड़ा रैवन अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था और इस डर से कि कहीं उसका

---

[191] Qa-Yel, the Great Raven.
[My Note : Read other folktales of Raven in “Raven Ki Lok Kathayen-1”, “Raven Ki Lok Kathayen” and “Raven Ki Lok Kathayen-3” all written by Sushma Gupta in Hindi language.]

[192] Alaska is the state of the USA and British Columbia is the Province of Canada. Both are situated adjacent to each other on the Western coast of their countries.

[193] They thought that the Great Raven (the Creator Raven) was Saghalie Tyee Raven.

[194] And Saghalie Tyee Raven lived at the head of Naas River (a river in British Columbia) in the Skyland and was known as Grandfather.

[195] Young Raven who helped Indians in shaping their lives.

दामाद या उसकी बेटी के बच्चे उसकी पत्नी को प्यार न करने लगें वह अपनी बेटी की शादी नहीं करता था।

रैवन के पास बहुत सारे काम थे और "बनाने वाले" की हैसियत से उसको इस दुनियॉ में सभी कुछ बनाना था – पहाड़, पेड़, घास और और भी बहुत कुछ जो दुनियॉ में लोगों को आज दिखायी देता है।

जब वह ये सब काम करने के लिये घर से बाहर जाता था तो वह अपनी पत्नी को एक बड़ी सी टोकरी में बन्द कर के उस टोकरी को छत से टॉग जाता था।

उस टोकरी के चारों तरफ वह कुछ उड़ने वाले कीड़े छोड़ जाता ताकि वे यह देख सकें कि उस टोकरी को किसी ने छुआ तो नहीं है और अगर ऐसा है तो वे उड़ कर उसको इस बात की खबर कर दें।

उसके बाद उसके छोटा रैवन पैदा हुआ और उसने सूरज आसमान में फेंक कर दुनियॉ के लोगों को रोशनी दी। एक दिन वह छोटा रैवन कुछ करने के लिये निकला तो उसने छत से लटकी हुई एक बन्द टोकरी देखी तो उसको खोल दिया जिससे बड़े रैवन की पत्नी बाहर आ गयी।

इस बात से बड़ा रैवन बहुत नाराज हो गया और उसने छोटे रैवन से कहा कि यह कर के उसने बहुत बड़ी गलती की है। यह कह कर बड़े रैवन ने अपना जादुई नुकीला जोड़ लगा लम्बा टोप

पहना और पानी को ऊपर उठाने के लिये ज्वार[196] को आवाज लगायी।

यह देख कर छोटे रैवन ने लून बतख[197] की एक जादुई खाल चुरा ली और अपनी मॉ को दे दी ताकि वह उसको पहन कर पानी में डुबकी मार सके। ऐसा कर के जबकि उनके घर में पानी भर रहा होगा तो वह उसमें डूब कर मरेगी नहीं।

इस तरह से वह अपनी मॉ को बतख की खाल दे कर चिमनी में से हो कर ऊपर उड़ गया। पर चिमनी में से हो कर निकलने की वजह से उसके सारे पंख हमेशा के लिये काले हो गये।

छोटा रैवन बहुत देर तक उड़ता रहा पर उसको आराम करने की कहीं कोई जगह नहीं मिली सो उसको बड़े रैवन के टोप पर वापस आना पड़ा क्योंकि उस समय वही एक चीज़ ऐसी थी जो दुनियॉ में दिखायी दे रही थी बाकी सब चीज़ें तो ज्वार के पानी में डूब गयी थीं।

आखिर उसने अपनी मॉ को अपनी पीठ पर बिठाया और उसको ले कर फिर ऊपर उड़ चला। ऊपर जा कर उसने अपनी

---

[196] High tide

[197] Loon duck is a kind of duck, a water bird, which is found in Northern America and Northern Eurasia.

चोंच से आसमान में छेद किया और वहीं अपनी मॉ को ले कर लटका रहा जब तक कि बाढ़ का पानी नीचे उतरा।

बहुत समय तक इस तरह लटकने से उसके शरीर में घुमाव बन गये और उसकी शक्ल ऐसी हो गयी जैसी कि आज है।

टोटम पोल[198] अलास्का, अमेरिका और ब्रिटिश कोलम्बिया, कैनेडा में बहुत पाये जाते हैं। बड़े रैवन का सबसे अच्छा और सबसे ज़्यादा जाना जाने वाला टोटम पोल "चीफ़ शेक्स"[199] का है जो रैंगैल, अलास्का में है।[200] उसकी यह तस्वीर नीचे दी जाती है। यह टोटम पोल इस तस्वीर में बिल्कुल पीछे की तरफ दॉये हाथ को खड़ा है।

[198] Totem Poles are such pillars carved with many figures and history of Native American tribes.

[199] Chief Shake at Wrangell, Alaska, America

[200] This picture shows the house, boat and totem pole of Chief Shakes (in the background on right hand side) in Wrangell. It has been taken from http://digitalcollections.lib.washington.edu/cdm/ref/collection/loc/id/2024 with gratitude.

बड़ा रैवन अमेरिका के मूल निवासियों की हायडा जाति जो ब्रिटिश कोलम्बिया, कैनेडा के क्वीन चारलोट टापुओं[201] पर रहती है, के लोगों के काली स्लेट और लकड़ी के टोटम पोल पर भी खुदा हुआ पाया गया है।

[201] Queen Charlotte Island – Present Haida Gwaii, literally "Islands of the Haida people"), formerly known as the Queen Charlotte Islands are on the North Coast of British Columbi, Canada. Approximately half of its population is of the Haida people. The islands are separated from the British Columbia mainland to the east by Hecate Strait. Vancouver Island lies to its South, across Queen Charlotte Sound, while the US state of Alaska is to its North.

38 गरज चिड़े का टोटम पोल[202]

यह टोटम पोल चार्ल्स जेम्स की अपनी चीज़ थी। चार्ल्स जेम्स क्वायूतु इन्डियन्स[203] का एक बहुत अच्छा नक्काशी करने वाला और कहानी कहने वाला था। ये इन्डियन्स ऐलर्ट बे[204] जो ब्रिटिश कोलम्बिया कैनेडा में है उसमें अन्दर की तरफ आने वाली एक नदी के पास रहते थे।

इनके टोटम पोल में चौदह निशान खुदे रहते हैं जो उनकी सीक्रेट सोसायटी के हैं और जिनके वे सदस्य हैं। इनमें से कुछ निशान उनको उनके पुरखों से मिले हैं जबकि दूसरे उन्होंने शादी के जरिये हासिल किये हैं या फिर वे उनको पौटलैच[205] में मिले हैं।

इसके हर निशान के पीछे इस जनजाति के किसी न किसी पुरखे की कोई न कोई कहानी छिपी हुई है।

इस इन्डियन कलाकार ने अपनी जनजाति की कला को आगे बढ़ाया। उसकी कुछ तस्वीरें इस पुस्तक में भी इस्तेमाल की गयी हैं। उसकी मूल तस्वीरें पहले लकड़ी के तख्ते पर पेन्ट की गयी थीं।

---

[202] The Thunder Bird Totem Pole.

[203] Charles James (Yakulas – his Indian name) was the carver and story teller of Kwakiutl tribe

[204] Alert Bay – a bay near British Columbia, Canada

[205] Potlach is a festival of Indians living on the Northern coast of Pacific Ocean. On this day one person invites all his friends and presents gifts to all of them to show them that he has lots of wealth, but later other people also do the same and return his gifts of more value than his. It includes food also.

39 रैवन और साये वाले लोग[206]

एक बार रैवन एक समुद्र के किनारे उतरा तो उसने अपने पंख और चोंच निकाल कर तो किनारे पर रख दी और आदमी बन गया।

वह समुद्र के किनारे पड़े पत्थरों पर चल रहा था जहाँ उन पर बहुत सारे मसिल सीपी[207] पड़े हुए थे। उन पर चलते चलते रैवन के पाँवों में बहुत घाव हो गये थे।

उधर दिन भी बहुत गर्म था सो नंगे बदन होने की वजह से उसका शरीर भी जला जा रहा था।

रैवन अपने गाँव जा रहा था कि वह एक गाँव में आया जहाँ साये वाले आदमी[208] रहते थे। जब उन साये वाले आदमियों ने उसको आते देखा तो आपस में कहा — "देखो वह चालाक आ रहा है जो लोगों को धोखा देता है और सबके साथ खूब चालाकी करता है। हमको उसके ऊपर नजर रखनी चाहिये।"

रैवन उस गाँव में एक आदमी के घर में घुसा तो जलते हुए सूरज से बच कर उसको वहाँ बड़ा आराम मिला। उस गरमी में उस

---

[206] The Shadow People and the Raven.
[My Note : Read other folktales of Raven in "Raven Ki Lok Kathayen-1", "Raven Ki Lok Kathayen" published by Indra Publications and Prabhat Prakashan respectively and "Raven Ki Lok Kathayen-3" all written by Sushma Gupta in Hindi language. The last book is available from hindifolktales@gmail.com]

[207] Mussels – a kind of sea animals living in shells. See the picture above.

[208] Translated for the words "Shadow People"

के पैर बहुत दुख रहे थे। जैसे ही वह घर में घुसा तो यह देख कर वह और भी ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया कि वह पूरा घर बहुत साफ सुथरा था और बड़े करीने से लगा हुआ था।

उस घर की छतों से सैमौन मछलियाँ लटक रहीं थीं। छतों के तख्ते धुँए के छेद से हटा कर लगाये गये थे इससे वहाँ रोशनी हर कोने में आ रही थी।

उसको सबसे ज़्यादा इस बात ने प्रभावित किया कि वहाँ कोई आदमी नहीं दिखायी नहीं दे रहा था। रैवन ने सोचा "मैं ज़रा इधर उधर चक्कर काट कर आता हूँ देखता हूँ अगर कहीं कोई दिखायी दे जाये तो।"

वह इधर उधर घूमने चल दिया। वहाँ उसने देखा कि वहाँ तो और दूसरा खाना भी बहुत ज़्यादा रखा हुआ है जैसे फर्न की जड़ें, छालें, बैरीज़[209] आदि। कोलीचैन की चिकनाई[210] के डिब्बे भी वहाँ लाइन से लगे रखे थे।

पर जब वह इधर उधर घूम रहा था तो उसको लगा कि कोई उसके पीछे पीछे आ रहा था। हालाँकि वह भूखा नहीं था पर फिर

[209] Berries are a kind of small fruits grown on bushes, sometimes on trees, for example blackberries, blueberries, strawberries etc. In India there are Ber. See their picture above.

[210] Colichan grease – is a kind of grease or fat extracted from a fish commonly known as Eulachon, Ooligan or Candlefish

भी एक लाल सैमौन मछली देख कर वह अपने आपको रोक नहीं सका और उसने उसको खाने के लिये उठा लिया।

उस मछली को ले कर वह उस घर में बने एक चबूतरे पर आया जहाँ सरदार की सीडर की लकड़ी की नक्काशी की गयी एक कुर्सी रखी थी। उस कुर्सी पर औटर मछली के मुलायम बालों वाली खाल बिछी हुई थी।

वह वहीं आ कर आराम से बैठ गया और वह सैमौन मछली उसने अपने पास रख ली। फिर वह अपने पैर देखने लगा जो अभी भी बहुत दर्द कर रहे थे। फिर उसने अपनी मछली उठाने के लिये हाथ बढ़ाया तो देखा कि वह मछली तो वहाँ थी नहीं। वह तो वहाँ से गायब हो गयी थी।

पहले तो उसको लगा कि यह उसके दिमाग की खुराफात है शायद वहाँ वह मछली ले कर ही नहीं आया था सो वह फिर से उसी जगह गया जहाँ से वह वह मछली ले कर आया था। उसने वहाँ से दूसरी मछली उठायी और वापस फिर वहीं आ कर बैठ गया।

इस बीच में उसने फिर से महसूस किया कि जाते समय भी और आते समय भी कोई उसका पीछा कर रहा था। पर उसको दिखायी कोई नहीं दिया। अब कोई अजनबी अगर इस तरह से बिना दिखायी दिये किसी का पीछा करे तो किसी को भी अजीब तो लगेगा ही।

रैवन बैठ गया और इस घटना के ऊपर विचार करने लगा। उसने अपनी सैमौन फिर से अपने पास रख ली पर वह फिर से गायब हो गयी। मछली का लाना पर उसको गायब होने की वजह से उसे न खा पाना उसके लिये एक पहेली बन कर रह गया था।

उसने तीसरी बार कोशिश की, फिर चौथी बार कोशिश की तब उसको पता चला कि वे सैमौन मछलियाँ जो वह ले कर आया था वे तो अभी भी वहाँ छत से टँगी हुई थीं। और वह साया अभी उसके साथ नीचे जमीन पर था।

गुस्से में उसने अपने पैर फर्श पर पटके कि कोई बोला —

तुम तो बहुत खाये पिये लगते हो
तुम क्या करने वाले हो? यह सब तुम्हें कहाँ ले जायेगा?

वे सवाल कौन पूछ रहा था यह तो रैवन नहीं बता सका क्योंकि उनके शरीर तो सामान्य नहीं थे। वह बेकार में ही इधर उधर देखता रहा। शायद वह पागल था। फिर वह और इन्तजार नहीं कर सका और लँगड़ाते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

पर उसको फिर महसूस हुआ कि कोई अभी भी उसके पीछे आ रहा था। कुछ लोग हँसे तो रैवन को लगा कि वे उसके पास ही खड़े थे।

वह बोला — "यह जगह अजीब है मैं यहाँ से चलता हूँ। फिर वे लोग कुछ नहीं कह पायेंगे।"

यह कह कर रैवन गॉव में से हो कर भाग गया। गॉव के कुछ लोगों ने उसे देखा तो कुछ ने नहीं देखा। भागते भागते वह एक ऐसी जगह आ गया जहॉ कुछ बच्चे खेल रहे थे।

बच्चों ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि उनको पता ही नहीं था कि वह क्या करना चाहता था। उस दिन तो रैवन जहॉ भी गया और उसने जो कुछ भी किया वह सब अपने साये से बचने के लिये ही था पर वह उससे बच नहीं सका।

भागते भागते फिर वह एक ऐसी जगह आ पहुॅचा जहॉ बहुत सारी लकड़ी की मूर्तियॉ लगी हुई थीं। अपने शरीर और दिमाग दोनों को आराम देने के लिये वह वहीं रुक गया।

क्या वह अपनी अक्लमन्दी से ज़्यादा चतुर था? या वह अपने शरीर की ताकत से ज़्यादा ताकतवर था? क्या वह साया उसके साथ हमेशा ही लगा रहेगा?

रैवन को यह सब पता चला या नहीं यह तो वे हायडा और क्वाकियूतु जातियों[211] के इन्डियन्स नहीं जान पाये पर उनको उसकी यह धोखाधड़ी और चालाकी बहुत समय तक प्रभावित करती रही।

रैवन वहॉ बैठा बैठा बहुत देर तक आराम करता रहा जब तक उसके पैर कुछ ठीक नहीं हो गये। फिर वह फिर से चिड़िया बन गया और सलाह के लिये आसमान में उड़ गया।

---

[211] Haida and Kwakiutls tribes

क्योंकि रैवन को तो शरीर और दिमाग दोनों के साथ ही उड़ना था इसलिये वह खुद तो उड़ गया पर उसका साया उसके नीचे जमीन पर उसके साथ साथ ही चलता रहा।

40 सरदार सीसाकौला का टोटम पोल[212]

इस टोटम पोल की शक्लें सरदार सीसाकौला के एक पुरखे सीविड[213] के बारे में बताती हैं। सीविड एक बहुत ही नाजुक किस्म का नौजवान था।

उसका पिता उसको देख कर उसके बारे में बहुत ही नाउम्मीद सा रहता था। वह सोचता था कि उसका बेटा उसके परिवार की इज़्ज़त को कैसे बना कर रख पायेगा।

एक दिन उसी जनजाति में एक दूसरे इन्डियन नौजवान ने जो सीविड से ज़्यादा होशियार और तेज़ था उस जनजाति को दुश्मनों की एक बहुत बड़ी मुश्किल से बचाया। यह देख कर तो सीविड का पिता उससे और भी ज़्यादा नाउम्मीद हो गया।

इस घटना के कुछ देर बाद ही सीविड जंगल में टहल रहा था। घूमते घूमते वह एक साफ पानी के तालाब के पास पहुँचा। वह उस तालाब के पास बैठ गया और सोचने लगा कि वह अपने पिता को खुश करने में और अपने लोगों को ठीक से आगे बढ़ाने में तो असफल ही रहा।

---

[212] Chief Sisa-Kaula's Totem Pole.
This Totem Pole is standing in Stanley Park, Vancouver, British Columbia, Canada.
[213] See-wid, the ancestor of Sisa-Kaula.

कि अचानक उस तालाब में से एक बहुत बड़ा मेंढक बाहर आ कूदा और उसने सीविड से पूछा — "क्या तुम मेरे साथ आना पसन्द करोगे?"

सीविड बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।" और यह कह कर वह उस बड़े से मेंढक की पीठ पर कूद गया। वह मेंढक उसको उस तालाब की तली में आत्माओं की दुनियॉ में ले गया।

वहॉ जा कर सीविड अपनी सब परेशानियॉ भूल गया क्योंकि उस गहरे तालाब की आत्मा ने उसको समुद्री भालू, समुद्री औटर और व्हेल को अपने टोटम पोल के सबसे ऊपर वाले हिस्से पर खोदने की इजाज़त दे दी।

अब इन्डियन्स के लिये तो यह बड़ी इज़्ज़त की बात थी।

सीविड को धरती पर आने में काफी समय लगा और उसको अपने समाज में अपनी सामान्य ज़िन्दगी शुरू करने में काफी मुश्किलों का सामना भी करना पड़ा।

पर जब वह लौट कर आया तब वह बहुत ही मजबूत आदमी बन चुका था। फिर वह बहुत बड़े इन्डियन सरदारों में से एक सरदार बन गया। उसके टोटम पोल में

1 पहली शक्ल सबसे ऊॅचे ओहदे वाली कोलस[214] की है जो गरज चिड़े की बहिन है। वह हमेशा मुड़े हुए पंख से दिखायी जाती है। कोलस की छाती पर रैवन कबीले का निशान रंगा रहता है जो

---

214 Kolus is the sister of Thunder Bird

यह बताता है कि सीविड इस चिड़िया से उस आत्मा की दुनियाँ को जाते समय मिला था।
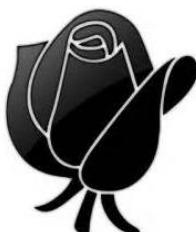
2 दूसरी शक्ल सीसा कौलस[215] के एक जाने पहचाने पुरखा सरदार की है जिसने अपने बच्चे को छाती से लगा रखा है।

3 तीसरी शक्ल में दिखाया गया सरदार का पैर उस व्हेल की ऊपर उठी हुई पूँछ पर रखा है जिसकी पीठ पर सारी दुनियाँ टिकी हुई है। व्हेल की शक्ल पर जो एक चेहरा खुदा है वह उस समय को बताता है जब दुनियाँ बनाने वाले से चाँद को चुरा लिया गया था।

4 चौथी शक्ल औटर मछली की है जो उस गहरे तालाब की आत्मा है। वह एक समुद्र का अंडा खाती दिखायी गयी है।

5 पाँचवी शक्ल समुद्री भालू की है जो इन्डियन्स के विश्वास के अनुसार समुद्र में भी रह सकता था और धरती के अन्दर भी जा सकता था।

6 छठी शक्ल में एक सिर खुदा हुआ है। यह सरदार के शत्रु की या किसी उस आदमी जो सरदार की बुराई करता है उसकी किस्मत बताता है। इस तरह से वह सरदार की ताकत और जीत को दिखाता है।

---

[215] Sisa-Kaulas – its meaning is “everybody paddling down to him

41 मिंक की कहानी[216]

एक बार टुमटुम[217] रेत में से सीपी खोद रहा था और बच्चे केंकड़े पकड़ रहा था। ये बच्चे केंकड़े वहाँ ज्वार[218] छोड़ गया था। वह यह सब करते करते थक गया था सो वह आराम करने के लिये एक व्हेल पकड़ने वाली नाव की तरफ चल दिया जो वहीं समुद्र के किनारे लगी हुई थी।

उधर एक ऊँचे पहाड़ का साया पड़ रहा था जिससे हवा ठंडी हो गयी थी। वहाँ जा कर वह भालू की एक खाल पर लेट गया। कुछ देर लेटने और आराम करने के बाद वह अपने घर की तरफ चल दिया।

तभी टुमटुम ने किसी को नाव चलाते हुए गाते हुए सुना

ओ मेरी पतवार मुझे किनारे पर ले चल, जैसे तूने पहले किया है
मुझे सूरज में पैदा होना है, मेरे बेटे, मेरे बेटे, मेरे अकेले बेटे

टुमटुम ने नाव के एक कोने से झाँका तो उसको एक लड़की दिखायी दी जो वहाँ समुद्र के किनारे रेत पर चल रही थी। वह लड़की उसी तरफ आयी जहाँ वह छिपा हुआ था। जब वह उधर

---

[216] Story of the Mink (Born-To-Be-In-The-Sun).
[217] Tum-Tum
[218] High tide

आयी जहाँ टुमटुम छिपा हुआ था तो टुमटुम ने उससे पूछा कि तुम कौन हो और कहाँ से आयी हो।

उस लड़की ने जवाब दिया — "मेरा नाम "अच्छी लगने वाली"[219] है। मैं "दस पहाड़ों के खुश"[220] शहर से आयी हूँ और मैं "सूरज में पैदा होने वाले" की माँ हूँ।"

टुमटुम बोला — "मैं उसको जानता हूँ वह मिंक है। आओ मैं उसे तुमको दिखाता हूँ। इस समय वह एक मेंढक स्त्री[221] का इन्तजार कर रहा है जो मेरे बाबा "गरज चिड़े"[222] के टोटम पोल पर से उतर कर आने वाली है।"

उस सुन्दर लड़की ने उसका हाथ पकड़ा और चलते चलते उसने टुमटुम को अपनी कहानी सुनायी —

"एक सुबह जब मैं औटर मछली की खाल का कम्बल बना रही थी तो सूरज आया और मेरे कमरे के एक छेद में से मेरी पीठ पर चमकने लगा। उसके कुछ देर बाद ही मिंक का जन्म हुआ। वह बहुत जल्दी ही एक आदमी जितना बड़ा हो गया और वहाँ से चला गया।

---

219 Tranaslated for the words "Nice to look at"

220 Translated for the words "Pleasant Places in the Ten Mountains"

221 Frog woman

222 Translated for the words "Thunder Bird"

एक दिन वह मेरे पास आया और बोला — "मॉ, मैं एक मेंढक लड़की से शादी करना चाहता हूँ।"

मैंने कहा — "पर तुमको उसकी टर्राने की आवाज अच्छी नहीं लगेगी बेटा।"

"वही तो मुझे अच्छी लगती है मॉ।"

मैंने कहा — "ठीक है अगर उसकी वह आवाज तुम्हें अच्छी लगती है तो फिर कर लो उससे शादी।"

और उन दोनों की शादी हो गयी। शादी के बाद वे एक नाव में बैठ कर पानी के उस पार दूर एक पहाड़ की तरफ चले गये और फिर वापस नहीं आये।"

टुमटुम उस सुन्दर लड़की को वहॉ ले गया जहॉ वह टोटम पोल खड़ा था। वहॉ उन्होंने देखा कि मिंक मेंढक लड़की से बात कर रहा था।

उसकी मॉ ने उससे नम्रता से कहा — "ओ मेरे "सूरज में पैदा होने वाले" बेटे।"

मिंक यह सुन कर मुस्कुराया और बोला — "मॉ हम लोग "गरज चिड़े" के टोटम पोल की सुरक्षा में आराम कर रहे थे। आओ वह तुमसे भी मिल कर बहुत खुश होगा।"

यह सुन कर "गरज चिड़ा" बिजली की तरह से अपनी ऑखें चमकाता हुआ और गरज के साथ पंख फड़फड़ाता हुआ टोटम पोल

के ऊपर से उड़ गया। उसने गॉव का एक चक्कर लगाया और फिर वहीं आ गया जहॉ उसके मेहमान खड़े हुए थे।

वहॉ आ कर उसने अपनी पंखों की पोशाक और मुखौटा उतारा और आदमी के रूप में आ गया। फिर उसने टोटम पर लगे सभी को वहॉ से उतरने के लिये और अपना अपना मुखौटा उतार कर मिंक की मॉ से मिलने के लिये कहा।

उनमें से कुछ ने अपना मुखौटा उतारा और आदमी के रूप में आ गये। केवल दो लोग ही ऐसे थे जिन्होंने यह नहीं किया – एक था जूनाक और दूसरा था रैवन।[223]

मिंक की मॉ ने सूरज की कहानी फिर से सुनायी और बोली कि मैं सूरज को ढूँढने आयी हूँ। पर आसमान में उसके घर तक कैसे पहुँचा जाये कोई नहीं जानता था। गरज चिड़े ने कहा कि वह आसमान तक उड़ तो सकता था।

रैवन का विचार था कि उनको सूरज के नीचे तक पहुँचने का इन्तजार करना चाहिये ताकि फिर उसका घर आसमान में उतना ऊपर न रहे।

अन्त में टुमटुम बोला — "हमको चिड़े के तीर[224] बनाने चाहिये और उनको उसके घर पर मारने चाहिये। अगर किसी तरह से उनमें

---

[223] Zoonaqua and Raven
[My Note : Read other folktales of Raven in "Raven Ki Lok Kathayen-1", "Raven Ki Lok Kathayen" published by Indra Publishers anf Prabhat Prakashan respectively and "Raven Ki Lok Kathayen-3" all written by Sushma Gupta in Hindi language. The third book is available from : hindifolktales@gmail.com]

[224] Bird arrows

से एक भी उसके घर पर लग जायेगा तो फिर हम दूसरा मारेंगे और फिर तीसरा। इस तरह हम उसकी एक लम्बी डंडी बना लेंगे जो धरती से आसमान तक जायेगी। फिर हम वहाँ जा सकते हैं।"

यह विचार सबको ठीक लगा सो सब चिड़े के तीर बनाने में लग गये। मिंक ने एक बहुत मजबूत लकड़ी की कमान बनायी। जब सब कुछ तैयार हो गया तो टुमटुम ने वह कमान उठायी और तीरों की डंडी बनाने के लिये तीर मारने शुरू किये। पीछे से केवल एक बिना नोक वाला तीर रह गया।

जूनाक यानी "सोया हुआ" जागा और बोला — "इस तीर को मार कर सूरज को मैं जगाऊँगा।" क्योंकि तभी बादल के एक टुकड़े ने सूरज को ढक लिया था।

जूनाक ने वह तीर चलाया तो वह आसमान की तरफ उड़ चला और जल्दी ही गायब भी हो गया। सभी वहाँ आश्चर्यचकित से खड़े देख रहे थे और इन्तजार कर रहे थे कि देखें अब क्या होने वाला है।

सूरज को तो बहुत सारी चालें आती हैं। जूनाक का तीर इतनी जल्दी वापस आ गया कि वह तो ऊँघ भी नहीं पाया। और वह तीर उसके सिर पर इतनी ज़ोर से आ कर लगा कि उसके सिर पर एक गूमड़ा[225] पड़ गया। वहाँ खड़े सभी लोग हँस पड़े।

[225] Translated for the word "Bump?

टुमटुम ने वह तीरों की लाइन हिलायी तो वह सीडर की एक रस्सी बन गयी। उसने और मिंक की माँ ने उसके ऊपर चढ़ना शुरू कर दिया। उसके पीछे पीछे मिंक भी अपनी पत्नी मेंढक लड़की को अपनी पीठ पर चढ़ा कर ऊपर चढ़ा।

वे लोग बहुत देर तक चढ़ते रहे तब कहीं जा कर वे एक बड़े घर में आये। उस घर के दरवाजे से बहुत सारी रोशनी सारी दुनियाँ के ऊपर पड़ रही थी। उसके दरवाजे पर एक बहुत ही लम्बा और मजबूत आदमी हाथ में झाड़ू लिये खड़ा था। वह वहाँ उन सबका स्वागत कर रहा था। वह सूरज था।

मेंढक लड़की को यह सब इतना अजीब लगा कि उसने तो टर्राना ही शुरू कर दिया। सूरज ने उन सबको अन्दर बुलाया। उसने उस "अच्छी लगने वाली" के बारे में पूछा।

वह बोला — "मैंने तुमको पहले भी कहीं देखा है।"

मिंक तुरन्त ही बोला — "यह आपकी पत्नी है और मैं आपका बेटा हूँ।"

यह सुन कर सूरज बोला — "ओह, अब मुझे याद आया। क्या तुम मुझे अपने पैर उधार दे सकते हो। मैं हर समय चलता रहता हूँ न इसलिये मेरे पैर थक जाते हैं।

और अगर तुम बराबर झाड़ू नहीं लगाते रहे तो तुम्हारी बुआएँ और दादियाँ, यानी बादल, यहाँ आ जायेंगी और यहाँ अन्दर अँधेरा ही अँधेरा हो जायेगा। और सारे आसमान में भी।

और अगर "गरज चिड़ा" जानता है तो वह बिजली चमका कर और गरज लुढ़का कर लोगों को डरा कर उनकी बारिश की बूँदों की बालटियों में से वे बूँदें भी बिखेर सकता है।

आओ, तुम लोग घर के अन्दर आ जाओ। वह गधा जरूर ही कोई शरारत करने वाला होगा।" यह कह कर सूरज ने फिर से झाड़ू लगानी शुरू कर दी।

मिंक और उसके दोस्त सब लोग अन्दर चले गये। अन्दर जा कर उन्होंने वहाँ बहुत सारी आश्चर्यजनक चीज़ें देखीं।

वहाँ की हर चीज़ चमकीली और बिल्कुल साफ थी। उसके चारों कोनों में चार मजबूत आदमी डंडे ले कर खड़े हुए थे जिनसे वे छत को सहारा दे रहे थे। उस घर में चारों तरफ सीडर की नक्काशी किये गये बक्से एक के ऊपर एक रखे हुए थे।

यह देख कर मिंक की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी और वह इधर उधर घूम घूम कर देखने लगा कि उन बक्सों में क्या था। और उन बक्सों को खोलने और बन्द करने लगा।

एक बक्सा सूरज के निकलने से भरा हुआ था तो दूसरा सूरज की किरनों से। तीसरा इन्द्रधनुषों से भरा हुआ था तो चौथे बक्से में छिपने वाले सूरज रखे थे। चार बक्से अगर एक साथ खोल दिये जायें तब तो सब कुछ गड़बड़ हो जायेगा पर इस बात का मिंक को तो पता नहीं था।

दूसरे लोगों ने सूरज के मुखौटे, उसके झुनझुने, लकड़ी के नक्काशी किये गये बर्तन, और उसके नाच के समय पहनने वाले कपड़े उठा लिये। खाने के बक्से तो सारी जगह फैले पड़े थे।

घर के बीच में एक छेद था जहाँ से धरती दिखायी देती थी और इसके नीचे ज़िन्दगी और मौत का कुँआ[226] था जहाँ से धरती पर मरे हुए लोगों की आत्माऐं ऊपर आती थीं और दोबारा जन्म लेने वाली आत्माऐं अपने जीवन की यात्रा शुरू करने नीचे धरती पर जाती थीं।

सूरज ने मिंक से फिर कहा — "तो तुम मुझे अपने पैर कब उधार दोगे मेरे बच्चे? देखो तो अभी यहाँ कोहरा हो रहा है।"

मिंक ने अपने पैर निकालने शुरू ही किये थे तभी वहाँ एक बहुत ज़ोर की चीख सुनायी दी जैसे हजारों उल्लू चीख पड़े हों। जो चार मजबूत आदमी छत को थामे हुए थे वे भी डर गये। सारा घर ऐसे काँप उठा जैसे कोई बहुत बड़ा भूचाल आ गया हो। सारे लोग परेशान हो उठे।

असल में गरज चिड़ा बाहर खड़ा था। बिजली चमक रही थी और गरज आसमान में इधर से उधर लुढ़क रही थी। उसको तो मजा आ रहा था।

सूरज के मेहमान उसके घर में इधर से उधर लुढ़के जा रहे थे जब तक वे सब उस ज़िन्दगी और मौत के कुँए में से नीचे नहीं गिर

---

[226] Well of Life and Death

गये। वे सब शान्ति से तैरते हुए जमीन पर ऐसे आ गिरे थे जैसे बर्फ के टुकड़े किसी रेत के ऊपर आ गिरें।

जमीन पर पहुँच कर उन्होंने फिर से टोटम पोल पर चढ़ना शुरू कर दिया था। गरज चिड़ा फिर से सबसे पहले चढ़ा।

तभी टुमटुम की ऑख खुल गयी। उसकी माँ पुकार रही थी — "ओ शैतान लड़के, तू यहाँ छिपा हुआ है। चल बाहर बारिश में से घर के अन्दर चल।"

42 गरज चिड़े का टोटम पोल–स्टेनले पार्क[227]

ब्रिटिश कोलम्बिया की नाइट नाम की समुद्र से अन्दर आने वाली एक नदी के आस पास क्वायूतु जनजाति के कुछ लोग रहते हैं।[228] वे लोग गरज चिड़े को सोना[229] कहते हैं। यह कथा उनके टोटम पोल के जन्म की कहानी बताती हे कि वह सबसे पहले कैसे बना।

सोना आसमान में रहता था – उन पहाड़ों की बर्फीली चोटियों के भी ऊपर जो उस नदी के पास में ही थीं। पर एक दिन उसने धरती के लोगों के साथ रहने का और उनके जैसा बनने का विचार किया तो उसने अपने गरज चिड़े के कपड़े उतारे और अपने आसमान के घर से बाहर निकला।

एक पहाड़ के ऊपर से उसने एक ऐसी जगह देखी जहाँ बहुत सारी बैरीज़[230] लगी हुई थीं। उस जगह को देख कर उसने सोचा कि वह अपने लिये और अपने लोगों के लिये घर वहीं बनायेगा।

और उसने फिर ऐसा ही किया। जब उसका नया घर बन गया तो उसने सोचा कि उसका घर ठीक से सुरक्षित भी रहना चाहिये

---

[227] Thunder Bird's Totem Pole.

[228] Some Kwakuitl Tribe people live near the Knight Inlet of British Columbia of Canada

[229] Thunder Bird is known there as Tsona

[230] Berries are little fruits, normally stoneless but sometimes have stones too, such as straw berry, black berry, blue berry etc. See their picture above.

क्योंकि उन दिनों अपने तेज़ दिमाग की वजह से मछली, जानवर आदि सभी अपने आपको आदमी में भी बदल सकते थे। और क्योंकि उनमें से कुछ के बुरे विचार भी हो सकते थे जिनसे वे उसको नुकसान पहुँचा सकते थे।

सो गरज चिड़े ने अपने घर की सुरक्षा के लिये भालुओं को अपने घर का चौकीदार रख लिया।

एक दिन वे भालू अपने लिये खाना ढूँढने गये तो उनको एक भूखा अजनबी मिला जिसने सील मछली की खाल पहनी हुई थी। वह बाद में गरज चिड़े का दास बन गया था।

कुछ समय बाद ही वह पत्थर के समय का आदमी[231] डौसनौग्वा[232] अपनी लड़ाई वाली नाव में बैठ कर गरज चिड़े से मिलने गया। उसकी नाव में सौ लोग थे क्योंकि वे सब दुनियाँ घूम रहे थे।

सोना ने उनकी तरफ अपना दोस्ती का हाथ बढ़ाया और उनकी अपने घर में ठहरने और खाने से मेहमानदारी की। हर मेहमान के आगे सबसे पहले एक नक्काशी किये गये कटोरे में ऊलीचन मछली[233] का तेल परोसा गया जिसमें वे अपनी मछली और दूसरी खाने की चीज़ें डुबो डुबो कर खा सकते थे। ऊलीचन

[231] Translated for the words “Stoneman” – Dos-no-gwa
[232] The Stone Age man Dosnogwa
[233] Oolichan fish grease

जिन प्लेटों में उनको खाना परसा गया था उन सब प्लेटों पर उनके मालिक के निशान बहुत सुन्दर तरीके से खोदे गये थे।

उन सब कटोरों में एक खास बात यह थी कि उन कटोरों में से कितना भी तेल खा लो पर वे हमेशा भरे ही रहते थ। यह देख कर वह पत्थर के समय वाले सब लोग बहुत ही आश्चर्य में थे। इसके अलावा वे लोग गरज चिड़े का घर की सजावट देख कर भी कुछ भौंचक्के से थे।

जब वे वहाँ से जाने लगे तो जो चीज़ें वे इस्तेमाल कर रहे थे उन्हें उन लोगों ने अपने साथ ले लिया। जब सोना ने इस बात के लिये उनको रोका तो उन्होंने उसको कैदी बना लिया और उसको अपनी नाव की तरफ ले चले। उसको उस नाव में बिठा कर उन्होंने नाव समुद्र में खे दी।

जैसे ही वे कुछ दूर गये कि आसमान में बादल घिर आये, तेज़ हवा चलने लगी, समुद्र का पानी उछाल मारने लगा और तूफान आ गया।

गरज चिड़े की आँखें लाल हो गयीं और सूरज से भी ज़्यादा ज़ोर से चमकने लगीं। बहुत तेज़ बारिश होने लगी और बारिश का पानी उनकी नाव में भरने लगा। कुछ ही देर में उनकी नाव डूबने लगी।

इन्डियन्स ने ऐसा तूफान पहले कभी नहीं देखा था। वे बहुत डर गये। उनको लगा कि वे तो किसी भी समय समुद्र में डूब सकते

हैं सो डौसनौग्वा ने सलाह दी कि अगर गरज चिड़ा उन लहरों और उस तूफान को शान्त कर दे तो उन लोगों को उसको छोड़ देना चाहिये और उसके घर से लायी गयी चीज़ें भी उसको वापस कर देनी चाहिये।

उसको यह महसूस हो गया था कि वे किसी ऐसी दैवीय ताकत के हाथ में पड़ गये हैं जो उसके अपने अन्दर की ताकत से भी कहीं ज़्यादा है और उस ताकत को न तो वह पहचान सकता था और न ही उसे चुनौती दे सकता था। सो वे गरज चिड़े को उसके घर वापस छोड़ने के लिये चल दिये।

जैसे ही उन्होंने गरज चिड़े को उसके घर छोड़ा वह सारा तूफान रुक गया। दिन अपने पूरे ज़ोर पर जमीन और पहाड़ों दोनों पर निकल आया। उस दिन इन्डियन्स ने जो कुछ भी देखा और महसूस किया उसकी आश्चर्यजनक ताकत को वह वे फिर कभी नहीं भूल सके।

उस नदी के चमकीले पानी के उस पार सैमौन नदी के मुहाने पर एक सरदार सीसा कौलस[234] रहता था। उसके बहुत सारे बच्चे थे। उन बच्चों में से उसकी बहुत सुन्दर गदराये शरीर की एक बेटी भी थी। उसकी वह बेटी सोना को बहुत पसन्द थी और वह अक्सर उसकी तारीफ किया करता था। उसको उस लड़की से प्रेम हो गया था।

---

[234] Sisa-Kaulas – its meaning is “everybody paddling down to him”

एक दिन सोना ने उसके सरदार पिता से अपनी शादी के लिये उसका हाथ माँग लिया। सरदार ने सोना की हिम्मत और वफादारी का इम्तिहान लेने के लिये उसको आग के चारों तरफ घूमने के लिये कहा और उसको भेंट देने के लिये कहा।

दावत दी गयी और दावत के समय सरदार ने सोना को उससे भी ज़्यादा कीमती भेंटें दीं जितनी कि सोना ने उस सरदार को दी थीं।

उसने सोना को एक कलगी[235] भी दी और दूसरी तरीके की इज़्ज़तें भी दीं। और ये हमेशा की तरह से उसको उसके पहले बच्चे के पैदा होने के बाद दी जाती रहेंगी।

अगर पहला बच्चा बेटा हुआ तो इन भेंटों की कीमत कई गुना ज़्यादा होगी। इससे उसकी पत्नी को ज़्यादा आजादी मिल जायेगी और वह जब भी चाहेगी अपने पहले घर वापस आ सकेगी। या फिर जब भी सरदार उसको बुलायेगा।

वह अपने बच्चों को उनके नाना नानी के पास भी भेज सकेगी ताकि वे उनके रीति रिवाज सीख सकें।

उसके भाई के सरदार होने के बाद उसका सबसे बड़ा बेटा उस कबीले का सरदार बनेगा। जब तक सोना का सबसे बड़ा बेटा बड़ा हुआ तब तक वह अपने नाना नानी के घर में ही रहता था।

---

[235] Translated for the word “Crest”

फिर उसने अपना अलग घर बनाया और अपनी कलगी के रूप में एक टोटम पोल भी बनाया जिसको वह अपने होने वाले बच्चों को दे कर जा सके ताकि वे यह याद रख सकें कि इस जनजाति में पहला आदमी सोना था जिसने गरज चिड़े का निशान बनाया और जो सब लोगों में शान्ति और दोस्ती लाया।

इसलिये उसने उस टोटम पोल पर सबसे पहला निशान गरज चिड़े का खुदवाया। उसके नीचे उसने भालू खुदवाया जो एक दास को पकड़े हुए था।

जब उसका घर पूरा हो गया तो उसने एक बहुत बड़ी दावत दी। आने वाले सब लोगों को भेंटें दी गयीं और उन लोगों ने उसको और बहुत ज़्यादा इज़्ज़त दी।

इस रस्म की याद में दो टोटम पोल बनाये गये जो आज वैनकूवर के स्टेनले पार्क में लुम्बरमैन की आर्च[236] के पास खड़े हैं। समुद्र में आते जाते जहाज भी उनको देख सकते हैं।

बहुत सारे घूमने आने वाले लकड़ी के इस बदलती हुई जनजाति के इन खम्भों की इस ढलती शान को देखने आते हैं।

[236] There are two Totem Poles standing in Stanley Park of Vancouver (British Columbia, Canada) near Lumberman’s Arch.

The Lightning Symbol of the Thunder Bird
Taken from the book

Some Special Terms used in this Book

Clan
There are tribes (Jan-jaati) and inside the tribe are different clans (Kabeelaa). For example, Haida is a tribe, while Kicksetti, Tsimshian, Tingets etc are its various clans

Haida Indians
Haida Indians are original people of the Pacific Northwest Coast of North America and Canada. Their homelands are the islands near the coast of southern Alaska and northwest British Columbia of Canada, particularly the Haida Gwaii archipelago and Prince of Wales Island.

In Canada, there are two separate Haida communities, called Masset and Skidegate. Each has its own reserve. Reserves are land that belongs to a Native American tribe and is legally under their control. Each Haida tribe, known as a band or First Nation in Canada, is politically independent and has its own leadership. The two Haida First Nations each have their own government, laws, police, and services, just like small countries. However, the Haidas are also Canadian citizens and must obey Canadian law.

Haidas in the United States do not have reservations. Like most Alaska Natives, they live in a Native village instead, which is called Hydaburg. Alaska Native villages do not have the same sovereignty rights that Indian nations in other US states do.

Oolichan (Fish)
The Eulachon, also Oolichan, Hooligan, Ooligan, or Candlefish, is a small ocean fish, which is usually found along the Pacific coast of North America from Northern California to Alaska.

Potlach
Potlach means “Give”. Potlach is a festival of Indians living on the Northern coast of Pacific Ocean. On this day one person invites all his friends and presents gifts to all of them to show them that he has lots of wealth, but later other people also do the same and return his gifts of more value than his. It includes food also.

Queen Charlotte Island
Present Haida Gwaii, literally "Islands of the Haida people"), formerly known as the Queen Charlotte Islands are on the North Coast of British Columbi, Canada. Approximately half of its population is of the Haida people. The islands are separated from the British Columbia mainland to the east by Hecate Strait. Vancouver Island lies to its South, across Queen Charlotte Sound, while the US state of Alaska is to its North.

Skeena River
Skeena River is in British Columbia, Western Canada.

Soul and Spirit
Both words mean Aatmaa in Hindi that is why it is difficult to distinguish these words while describing them in Hindi. But here in the whole book “Aatmaa” means “Spirit” not soul. Normally “Soul” lives in a living body.

Totem Pole
A pole or post or pillar, made of wood or metal, on which totems are hung or on which the images of totems are carved. The carvings may symbolize or commemorate cultural beliefs that recount familiar legends, clan lineages, or notable events. Given the complexity and symbolic meanings of totem pole carvings, their placement and importance lies in the observer's knowledge and connection to the meanings of the figures.

Tsimshian
Pronounced as Simshiang. It is a name of a Tribe.

Tyee
Pronounced as Taayee. Saghalie Tyee is the Great Raven who has made this world.

Western Skunk Cabbage
Western skunk cabbage (in USA), yellow skunk cabbage (in UK), American skunk-cabbage (in Britain and Ireland), or swamp lantern, is a plant found in swamps and wet woods, along streams and in other wet areas of the Pacific Northwest. The plant is called skunk cabbage because of the distinctive "skunky" odor that it emits when it blooms. This odor will permeate the area where the plant grows, and can be detected even in old, dried specimens.

While some consider the plant to be a weed, its roots are food for bears, who eat it after hibernating as a laxative or cathartic. The plant was used by indigenous people as medicine for burns and injuries, and for food in times of famine, when almost its all parts were eaten

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022